राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 10, अप्रैल 2024

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

लोकसभा चुनाव

एक नये अध्याय की शुरूआत हो

श्रद्धांजली
सुषमा मिश्रा
जन्म दिनांक-
22/08/1982
मृत्यु दिनांक-
30/03/2024

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 10, अप्रैल 2024

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक
राजीव रंजन
कार्यकारी संपादक
कुमुद रंजन सिंह
विशेष संवाददाता
राकेश कुमार
विज्ञापन प्रबंधक
कल्याणी गुप्ता
छायाकार
के. आर. सिंह
विधि सलाहकार
उपेन्द्र प्रसाद
चंद्र नारायण जायसवाल
साज-सज्जा
मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय
सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना - 800020
फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक राजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।
संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार
राजीव रंजन
अखिलेश कुमार जायसवाल
डॉ. राकेश कुमार

चैत नवरात्रि - योगिनियों को आदिशक्ति माँ काली का अवतार माना जाता है 12

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित.. 16

सरकारें चाहें तो नशे के कारोबार पर ... 18

राम नवमी के त्योहार का महत्व क्या है और इस साल भगवान राम की पूजा के लिए शुभ मुहूर्त कब से कब तक रहेगा, विस्तार से जानें

राजीव रंजन
संपादक

राजीव रंजन,संपादक की कलम से

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को हिंदू धर्म की मुख्य तिथियों में से एक माना जाता है। इस तिथि को ही मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन को राम नवमी के रूप में भी जाना जाता है। इसके साथ ही, इसी दिन माता दुर्गा के नवम स्वरूप सिद्धिदात्री की पूजा के साथ ही नवरात्रि का समापन भी होता है। यानि आदिशक्ति माता दुर्गा और आदिपुरुष श्रीराम दोनों का आशीर्वाद भक्त इस दिन पा सकते हैं। हालांकि, आज हम आपको बताएंगे कि साल 2024 में राम नवमी कब है, और इस दिन पूजा का शुभ मुहूर्त कब से कब तक रहेगा।

राम नवमी तिथि 2024

हिंदू पंचांग के अनुसार साल 2024 में शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि 16 अप्रैल को 1 बजकर 26 मिनट से शुरू हो जाएगी और 17 अप्रैल को 3 बजकर 16 मिनट तक नवमी तिथि रहेगी। उदया तिथि की मान्यता के अनुसार 17 अप्रैल को ही राम नवमी का त्योहार मनाया जाएगा। इस दिन पूजा आराधना करने का शुभ मुहूर्त नीचे दिया गया है।

राम नवमी पूजा मुहूर्त

राम नवमी के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान करने के बाद आप श्रीराम का ध्यान कर सकते हैं और पूजा-अर्चना भी कर सकते हैं। हालांकि, पंचांग की गणना के अनुसार 17 अप्रैल को सुबह 11 बजकर 4 मिनट से दोपहर 1 बजकर 35 मिनट का समय पूजा के लिए अतिशुभ रह सकता है। इस दौरान भगवान राम का ध्यान करना और रामचरित मानस का पाठ करना आपको मानसिक शांति का अनुभव कराएगा। आप पूजा ना भी कर पाएं तो इस दिन कम से कम राम नाम का 108 बार जप करने से आपको अच्छे परिणामों की प्राप्ति हो सकती है।

राम नवमी का महत्व

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, और उन्हीं के नाम से इस तिथि को राम नवमी के नाम से जाना जाता है। भगवान राम ने अपने चरित्र, प्रजा के प्रति अपनी निष्ठा, वचनों को निभाने के दृढ़संकल्प और मर्यादित रहकर पुरुषोत्तम का दर्जा पाया था। इसीलिए भगवान राम को आदिपुरुष भी कहा जाता है। राम नवमी का त्योहार हमें यही संदेश देता है कि, हम भी उनके पदचिह्नों पर आगे बढ़ सकें और मर्यादित जीवन जी सकें। इसके साथ ही माना जाता है कि राम जी की पूजा करने से हमें बुद्धि और विवेक प्राप्त होता है और साथ ही राम जी के परम भक्त हनुमान जी की कृपा भी भक्तों को प्राप्त होती है। भगवान राम को आस्था के प्रतीक के रूप में याद रखने के साथ ही हम उनके गुणों को भी खुद में लाएं, यही संदेश राम नवमी का त्योहार हमें देता है।

वीर कुंवर सिंह वियोत्सव पर विशेष

बिहार के 'बाबू साहेब' 80 की उम्र में रखते थे 18 का जोश

कुमुद रंजन सिंह

बिहार के बूढ़े वीर ने किए थे अंग्रेजों के दांत खट्टे, 80 की उम्र में रखते थे 18 का जोश बाबू कुंवर सिंह को जो भी जीवित अवस्था में पकड़कर किसी ब्रिटिश चौकी अथवा कैंप में सुपुर्द करेगा,उसे 25 हजार रुपये इनाम का दिया जाएगा।

12 अप्रैल, 1858 को गवर्नर जनरल भारत सरकार के सचिव के हस्ताक्षर से यह घोषणा बिहार के लाल, पहले स्वतंत्रता संग्राम के हीरो और एक 80 साल के रणबांकुरा बाबू वीर कुंवर सिंह को पकड़ने के लिए की गई थी।

बाबू वीर कुंवर सिंह ने अपनी युद्ध नीति से अंग्रेजों को जमकर छकाया, खूब सताया और सात बार भयानक नुकसान तक पहुंचाया, लेकिन जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आए। उनकी वीरगाथा आज भी लोगों को प्रेरित करती है।

23 अप्रैल को बाबू वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव है। पढ़िए, 80 की उम्र में 18 सा जोश लेकर अंग्रेजों के दांत खट्टे करने वाले स्वतंत्रता सेनानी बाबू साहब और तेगवा बहादुर यानी बाबू वीर कुंवर सिंह की वीरगाथा...

बात उन दिनों की है, जब बंगाल के बैरकपुर छावनी में मंगल पांडे ने कारतूस का इस्तेमाल करने

से मना कर दिया था। 29 मार्च 1857 को गुलामी मानने से इनकार कर अंग्रेजों पर हमला बोल दिया था।

नतीजा मंगल पांडे की गिरफ्तारी हुई, मुकदमा चला और तय तिथि से 10 दिन पहले चुपचाप फांसी पर लटका दिया गया। मंगल पांडे की बहादुरी ने देश को अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा कर दिया। अलग-अलग छावनियों में सैनिकों ने विद्रोह करना शुरू कर दिया।

विद्रोही सैनिकों के बने सेनापति

शासक भोज के वंश में साल 13 नवंबर, 1777 में जन्मे वीर कुंवर सिंह अपनी उम्र के 80वें साल में चल रहे थे। वे बिहार के शाहाबाद यानी मौजूदा भोजपुर जिले की जागीरों के मालिक थे।

27 जुलाई, 1857 को दानापुर छावनी से विद्रोह कर आए सैनिकों, भोजपुरी जवानों और अन्य आजादी के मतवालों ने बाबू कुंवर सिंह का नेतृत्व स्वीकार किया।

इसके बाद कुंवर सिंह के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने ब्वायल कोठी/आरा हाउस में छिपे अंग्रेजों को पराजित कर आरा नगर पर कब्जा कर लिया। इस तरह जेल तोड़ कर कैदियों की मुक्ति और खजाने पर कब्जा करने से कुंवर सिंह का अभियान शुरू हुआ।

आरा में अंग्रेजी कर्नल डनबर के मारे जाने की सूचना मिलने पर मेजर विसेंट आयर, जो स्टीमर से प्रयागराज जा रहा था, बक्सर से वापस आरा लौटा और 2 अगस्त को चर्चित बीबीगंज का युद्ध हुआ।

यहां अंग्रेजी फौज ने जमकर दहशत बरपाई। घायलों को फांसी पर लटका दिया। महलों और दुर्गों को खंडहर बना दिया। कुंवर सिंह पराजित हुए, लेकिन जज्‍ बा और बुलंद हो गया। आयर ने 12 अगस्त को जगदीशपुर पर आक्रमण किया और कब्‍ जा कर लिया।

आजमगढ़ को कराया ब्रिटिश शासन से मुक्त

1857: बिहार में महायुद्ध नाम से लिखी गई एक किताब के मुताबिक, 14 अगस्त 1857 को जगदीशपुर हाथ से निकल जाने के बाद कुंवर सिंह ने 1200 सैनिकों के साथ एक महाअभियान चलाया।

रोहतास, रीवा, बांदा, ग्वालियर, कानपुर, लखनऊ होते हुए 12 फरवरी 1858 को अयोध्या और 18 मार्च 1858 को आजमगढ़ से 25 मील दूर अतरौलिया नामक स्थान पर आकर डेरा डाला। 22 मार्च को कर्नल मिलमैन को हराकर आजमगढ़ पर कब्जा कर लिया था। मिलमैन की मदद के लिए आए कर्नल डेम्स को भी 28 मार्च को हार का सामना करना पड़ा।

उस वक्त उनके काफिले में 1,000 सैनिक और 2,500 समर्थक थे। कुंवर सिंह का आजमगढ़ पर कब्जा करने का उद्देश्य प्रयागराज और बनारस में अंग्रेजों को पराजित करते हुए अपने गढ़ जगदीशपुर को ब्रिटिश शासन से मुक्‍ त कराना था।

गोरिल्ला नीति के चलते बुलाते थे महाराणा प्रताप

बाबू कुंवर सिंह ने उसी युद्ध नीति को अपनाया था, जिससे महाराणा प्रताप ने मुगलों के खिलाफ युद्ध लड़ा था। यानी कि वे छापामार युद्ध नीति से अंग्रेजों को धूल चटा रहे थे।

जिस नीति से एक बार अंग्रेजों को हराते दूसरी बार वे नई नीति इस्तेमाल करते, जिस कारण अंग्रेज उनका मुकाबला नहीं कर पा रहे थे। मिलमैन और डेम्स की आर्मी कुंवर सिंह के मुट्ठी भर सैनिकों से हार गई।

इस पराजय से बेचैन लार्ड कैनिंग ने मार्ककेर को युद्ध के लिए भेजा। 500 सैनिकों और आठ तोपों के साथ आए मार्ककेकर के सहयोग के लिए सेनापति कैंपबेल ने एडवर्ड लगर्ड को भी आजमगढ़ पहुंचने का आदेश दिया।

तमसा नदी के तट पर हुए इस युद्ध में मार्ककेकर और लगर्ड को बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, इसमें कुंवर सिंह की सेना को भी भारी नुकसान हुआ था। कई महीनों तक अंग्रेजी सेना बाबू कुंवर सिंह को बुरी तरह खोजती रही, लेकिन वे उनके हाथ नहीं लगे।

बाबू ने काटकर फेंक दिया था अपना हाथ...

21 अप्रैल, 1858 की बात है। बाबू कुंवर सिंह उत्तर प्रदेश यानी तब के संयुक्त प्रदेश से बिहार की ओर लौटने लगे। वे बलिया के पास अपने सैनिकों के साथ कश्ती से गंगा नदी पार कर रहे थे, तभी अंग्रेजी सेना ने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी।

भारत में अंग्रेजी राज किताब के मुताबिक, गंगा नदी पार करते हुए किसी अंग्रेज सैनिक की गोली बाबू कुंवर सिंह के दाएं हाथ में लग गई। उस वक्त उन्होंने बाएं हाथ से तलवार खींची और घायल दाहिने हाथ को काटकर अलग कर दिया। हाथ को गंगा में प्रवाहित कर युद्ध लड़ते रहे। यह देखकर अंग्रेज सैनिक खौफ में आ गए थे। 22 अप्रैल को अपने दो हजार साथियों के साथ जगदीशपुर में पहुंचे।

जब अंग्रेजी सेना को कुंवर सिंह के जगदीशपुर पहुंचने की सूचना मिली तो 23 अप्रैल को कैप्टन लीग्रैंड ने बेहद आधुनिक राइफलों और तोपों से हमला बोल दिया, लेकिन वह भी युद्ध में मारा गया। जगदीशपुर के लोग खुश थे।

इसी बीच, गोली लगने और फिर हाथ को तलवार से काटने के चलते बाबू कुंवर सिंह के शरीर में जहर फैल गया और वे नहीं रहे। हालांकि, बाबू कुंवर सिंह के निधन के बाद उनके छोटे भाई अमर सिंह ने जगदीशपुर की स्वतंत्रता की रक्षा की।

अंग्रेजों ने भी की तारीफ

विनायक दामोदर सावरकर ने अपने अमर ग्रंथ 1857 का स्वातंत्र्य समर में जिन सात योद्धाओं के नाम से अलग खंड लिखा था, उसमें से एक एक खंड बाबू कुंवर सिंह और उनके छोटे भाई अमर सिंह पर था।

आजाद भारत में मिला सम्मान

23 अप्रैल 1966 को भारत सरकार ने बाबू वीर कुंवर सिंह के सम्‍ मान में एक स्मारक टिकट जारी की।

साल 1992 में बिहार सरकार ने वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की स्थापना की। साल 2017 में वीर कुंवर सिंह सेतु बनाया, जिसे आरा-छपरा ब्रिज के नाम से भी जाना जाता है।

साल 2018 में बिहार सरकार ने उनकी प्रतिमा को हार्डिंग पार्क में लगवाया और पार्क का आधिकारिक नाम वीर कुंवर सिंह आजादी पार्क रखा।

नालंदा जिले के हरनौत प्रखंड में युवा नेता स्व गौतम सिंह उर्फ फंटू बाबू ,कुमुद रंजन सिंह एवम राष्ट्रीय राजपूत महासभा के सार्थक पहल पर वीर कुंवर सिंह चौराहा का निर्माण सन 2015 में किया गया था,वर्तमान में धीरज कुमार सिंह उर्फ पल्लू सिंह के साथ ही समस्त हरनौत नगर वासियों द्वारा वीर कुंवर सिंह की आदमकद प्रतिमा लगाए जाने की क्वायद जारी है।

बच्चों को सही गलत की पहचान कराना आज की जरूरत

सुप्रिया सिंह

पत्रकार एवं कानूनी सलाहकार

कुछ वैसे तरीकों इससे बच्चों को समझाएं गुड टच और बैड टच में फर्क, 1098 पर कॉल करने पर मौके पर पहुंच जाएगी चाइल्ड लाइन की टीम

आज कल मासूम बच्चियों के साथ हो रही दुष्कर्म की घटनाओं से पता चलता है कि उनका यौन शोषण करने वाला कोई नजदीकी आदमी ही होता है। जिसके झांसे में बच्चे/बच्चियां आसानी से आ जाते हैं। अधिकतर मामलों में देखा जाता है कि कोई पड़ोसी या फिर रिश्तेदार यहां तक कि कई बार बुजुर्ग भी बैड टच कर बच्चे/बच्चियों का यौन उत्पीड़न करते हैं। जिस चीज को मासूम समझ नहीं पाते। इसलिए पैरेंट्स को चाहिए कि वो बच्चों के स्कूल और मोहल्ले में लोग से मिलने उठने- बैठने के दिनभर के रुटीन के बारे में जानकारी लें। इससे आप आसानी से समझ सकते हैं कि बच्चे या बच्ची के साथ क्या हो रहा है?

इन 10 तरीकों से बच्चों को समझाएं गुड टच और बैड टच में फर्क, 1098 पर कॉल करने पर मौके पर पहुंच जाएगी चाइल्ड लाइन की टीम

गुड टच क्या है ?

अगर कोई आपको टच करता है और आपको अच्छा लगता है या स्नेह की अनुभूति होती है तो यह गुड टच कहलाता है। इसको आप अपनी मां, पिता, बड़ी बहन, दादी के टच से फील कर सकते हैं।

बैड टच क्या होता है ?

जब कोई व्यक्ति आपको इस तरह से छूता है कि आप इससे असहज महसूस करते हैं या फिर उस व्यक्ति का छूना आपको बुरा लगता है। यह बैड टच कहलाता है। इसके साथ ही अगर कोई अनजान व्यक्ति आपके प्राइवेट पार्टस को छूने का प्रयास करता है तो यह भी बैड टच है। तीसरी कंडीशन में अगर कोई व्यक्ति आपको इस तरह से छूता है जिस पर आप असहज हो जाते हैं और वह व्यक्ति आपको इसके बारे में किसी से ना बताने के लिए कहता है, यह बैड़ टच है।

ऐसे बताएं बच्चों को क्या होता है गुड टच एंड बैड टच में अंतर

गुड टच बैड टच जैसे ही आपके बच्चे आपकी नजरों से हटते हैं, क्या आप परेशान हो जाते हैं? आप को समझ नहीं आता कि आप बच्चे के साथ किसको छोड़े और किसको नहीं? बच्चों की सेफ़्टी को लेकर आप बहुत परेशान रहते हो. इस लेख में हम आपको बताएँगे कि आप बच्चों को यौन शोषण से कैसे बचा सकते हैं?

आप अपने बच्चों को छोटी उम्र से ही गुड टच एंड बैड टच के बारे में बताकर एम्पॉवर करे, जिससे बच्चे अपने साथ हो रहे बुरे स्पर्श के खिलाफ आवाज उठा सके. जब बच्चे गुड टच और बैड टच के बारे में जान जाएँगे तो वे अपनी सेफ़्टी का खुद ध्यान रख पाएँगे.

आजकल दोनो वर्किंग पेरेंट्स होने के करण, बच्चों को लम्बे समय तक किसी और के पास रहना पड़ता है. न्यूक्लीयर फैमिली में बच्चे,मैड, ड्राइवर, दोस्त या रिश्तेदारों के सहारे पलते हैं. छोटी उम्र के बच्चे कमजोर और नासमझ होते हैं, इसलिए बच्चों के प्रति अपराध बढ़ते जा रहे है. बच्चे कहीं न कहीं यौन शोषण के शिकार हो रहे हैं. बच्चों की सुरक्षा के

लिए बच्चों को गुड टच एंड बैड टच फोर किडस के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी है.

पेरेंट्स बच्चों को गुड टच एंड बैड टच एजुकेशन देना तो चाहते हैं, लेकिन वे इस बारे में बात करते हुए बहुत झिझकते हैं.

बच्चों को गुड टच और बैड टच में अंतर सिखाना क्यों जरूरी है?

बच्चों को गुड टच एंड बैड टच के बारे में कैसे सतर्क करे ?

1) बच्चों के साथ बॉंडिंग बढ़ाएँ
2) बच्चों को प्राइवेट पार्ट्स के बारे में जानकारी दें
3) बैड टच को उदाहरण के साथ बताएं
4) बैड टच का विरोध कैसे करे
5) बच्चे को न कहना सिखाएं
6) बच्चों के व्यवहार पर ध्यान दें
7) बेटा-बेटी दोनो को सिखाएं
8) माता-पिता बच्चों को समझाएं
9) पब्लिक प्लेसेज पर भी रहे सावधान
10) संकोच न करे

निष्कर्ष - कंक्लूजन

अक्सर पूछे जाने वाले सवाल -

द1. बैड टच का उदाहरण क्या है?

द2. गुड टच और बैड टच की पहचान कैसे करे?

द3. बच्चों को गुड टच बैड टच के बारे में कैसे बताएं?

बच्चों को गुड टच और बैड टच फोर किडस के प्रति जागरूक होने की सही उम्र

नैशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नॉलजी के अनुसार बच्चों को 4-5 साल की उम्र में गुड टच और बैड टच (गुड टच और बैड टच इन हिन्दी) के बारे में बताना शुरू कर देना चाहिए.

गुड टच क्या है वाट इज गुड टच

अगर कोई आपको टच करता है और आपको अच्छा फील होता है या आप स्नेह महसूस करते हैं तो यह गुड टच (गुड टच) कहलाता है. जैसे आप अपनी माँ के गले लगते है, पिता का गुडनाइट किस, दादा-दादी, नाना-नानी का अपनी बाहों में लेना या दोस्तों का हाथ पकड़ना गुड टच है.

बैड टच क्या होता है वाट इज बैड टच

जब कोई आपको इस तरह से छूता है कि आप असहज हो जाते हैं या फिर उस व्यक्ति का छूने का तरीका आपको बुरा लगता है, यह बैड टच कहलाता है.

इसके अलावा कोई व्यक्ति आपके प्राइवेट पार्ट्स को छूता है तो यह भी बैड टच है. अगर आप किसी व्यक्ति के छूने से असहज हो जाते हैं और वह व्यक्ति आपको इसके बारे में किसी को भी बताने के लिए आपको मना करता है, तो यह भी बैड टच है.

बच्चों को गुड टच और बैड टच में अंतर सिखाना क्यों जरूरी है?

आजकल बच्चों के साथ यौन शोषण की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं. रीसर्च के अनुसार, 90% बच्चों का यौन शोषण परिचित लोगों द्वारा किया जाता है और केवल 10 % बच्चे ही अजनबी लोगों का यौन शिकार बनते हैं.

इसलिए पेरेंट्स की ज़िम्मेदारी है कि बच्चों को ऐसे बुरे व्यक्तियों से बचाने के लिए अच्छे और बुरे स्पर्श में अंतर सिखाएँ. चलिए जानते हैं,

1) बच्चों के साथ बॉंडिंग बढ़ाएँ

चाहे आप वर्किंग पेरेंट है या होम-मेकर, बच्चे के साथ रोज वक्त बिताएँ. उनके साथ खूब बात करे. बच्चों के रूटीन, उनके दोस्तों व दिन में किस-किस से मिलते हैं, जानकारी ले.

बच्चों को विश्वास दिलाएं कि अगर उनसे कोई गलती भी हो जाती है, तो भी वे आपको कुछ भी बता सकते हैं और आप बच्चों को डाटेंगे नहीं. तभी आप बच्चों को गुड टच और बैड टच के बारे में बता पाएँगे.

2) बच्चों को प्राइवेट पार्ट्स के बारे में जानकारी दें

इसके लिए स्विमसूट नियम की मदद ले. बच्चों को गुड टच और बैड टच के बारे में समझाएं कि बॉडी के जो पार्टस स्विम सूट से ढके रहते हैं, वे बच्चों के प्राइवेट पार्ट्स हैं. इन पार्ट्स को किसी को भी छूने की अनुमति नहीं देनी चाहिए. इस तरह से बच्चे अपनी सेफ़्टी कर पाएँगे और अगर उन्हें कोई बैड टच का शिकार बनाता है तो वे रीऐक्ट कर पाएँगे.

3) बैड टच को उदाहरण के साथ बताएं

बच्चों को बहुत प्यार से समझाएं कि उन्हें किस तरह के टच के बारे में सख़्त मना करना है, जैसे कोई जबरदस्ती उन्हें किस करने की कोशिश करे, जबर्दस्ती गले लगाएं, गालो को टच करे, कंधे पर हाथ लगाने के बहाने प्राइवेट पार्ट्स को छुए. चाकलेट देने के बहाने बैड टच करने की कोशिश करे, गोद में बैठाकर प्राइवेट पार्ट्स को छुए या किसी भी प्रकार का बैड टच जो बच्चे को असहज करे, उसका विरोध करें.

4) बैड टच का विरोध कैसे करे

अगर कोई भी व्यक्ति बच्चे के साथ बैड टच बैड टच करने की कोशिश करे तो बच्चे को तुरंत चिल्लाना है. अगर वह स्कूल में है, तो तुरंत टीचर को शिकायत करे.

5) बच्चे को न कहना सिखाएं

बच्चे बहुत ही कोमल होते हैं. अगर बच्चों को कोई चाकलेट या टाफी का लालच देता है तो बच्चे उनके बहकावे में आ जाते हैं. बच्चों को न कहना सिखाएं. अगर पेरेंट्स आस-पास नहीं है, तो किसी से भी कोई चीज न ले.

6) बच्चों के व्यवहार पर ध्यान दें

बच्चों के व्यवहार पर बहुत ध्यान दें. वह घर पर बहुत चुप तो नहीं रहने लगा, खाना खाना तो कम नहीं कर दिया, हमेशा खोया-खोया तो नहीं रहने लगा. कई बार बच्चे गुड टच एंड बैड टच इन हिन्दी के बारे में जागरूक नहीं होते और बैड टच की घटना घट जाती है. बच्चे अंदर ही अंदर परेशान रहते हैं और बुरे स्पर्श के बारे में किसी को नहीं बता पाते.

7) बेटा-बेटी दोनो को सिखाएं

कई बार हमें लगता है कि गुड टच बैड टच सिर्फ़ बेटियों को ही बताना चाहिए. लेकिन आजकल के समाज में लड़के भी बैड टच (बैड टच) के शिकार है. इसलिए बेटा-बेटी दोनो को ही गुड टच और बैड टच की जानकारी दे.

8) माता-पिता बच्चों को समझाएं

बच्चे किसी की समने कपड़े न बदले.

अगर पेरेंट्स की उपस्थिति में डॉक्टर बच्चों के शरीर को टच करते हैं तो यह गुड टच है.

बच्चों को यह विश्वास दिलाएं कि आप हमेशा उनके साथ है. अगर इस तरह का कोई बैड टच उनके साथ होता है तो इसमें बच्चों का कोई फॉल्ट नहीं है.

9) पब्लिक प्लेसेज पर भी रहे सावधान

बच्चों को पब्लिक प्लेसेज पर भी सावधान रहने को कहे, जैसे पार्क, कोचिंग, टयूशन और स्कूल बस आदि. बच्चों को इन जगहों पर भी सतर्क और सावधान रहना सिखाएं. बच्चे से बताएं कि अगर कोई अजनबी उन्हें गलत तरीके से टच करता है या उनके प्राइवेट पार्ट्स पर हाथ रखने की कोशिश करता है तो वे उसी समय जोर से शोर मचाएं और अपने पेरेंट्स को बताएं।

नालंदा जिला की सांस्कृतिक विरासत

सत्येन्द्र कुमार पाठक

बिहार राज्य का मगही और हिंदी भाषीय नालंदा जिला का मुख्यालय बिहार शरीफ है। नालन्दा ज़िले का क्षेत्रफल 2,367 किमी (914 वर्ग मील) में 2011 जनगणना के अनुसार जनसंख्या 2,872,523 निवास बिहारशरीफ , हिलसे और राजगीर अनुमंडल में करते है। बुद्ध और महावीर नालन्दा में कर्मक्षेत्र एवं जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर की मोक्ष स्थली पावापुरी , बौद्ध गुरु शारिपुत्र, का जन्म नालन्दा और नालंदा विश्वविद्यालय नालंदा था। नालंदा का पूर्व में अस्थामा पश्चिम में तेल्हारा दक्षिण में गिरियक तक उत्तर में हरनौत तक है। विश्व के प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेषों को अपने आँचल में समेटे नालन्दा बिहार का पर्यटन नालंदा विश विद्यालय के अवशेष, संग्रहालय, नव नालंदा महाविहार तथा ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल हैं। राजगीर, पावापुरी, में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में एक वर्ष विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था। भगवान बुद्ध ने सम्राट अशोक को यहाँ उपदेश दिया था। भगवान महावीर रहे थे। नालंदा में राजगीर में गर्म पानी के झरने का निर्माण बिम्बिसार के शासन काल में करवाया था। राजगीर का ब्रह्मकुण्ड, सरस्वती कुण्ड और लंगटे कुण्ड , चीन का मन्दिर, जापान का मन्दिर , शांति स्तूप , जरासंध का अखाड़ा , स्वर्णगुफा आदि है। बिहार शरीफ में पुल के समीप जम्मामस्जिद स्थित है।अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय अवशेषों की खोज की गई थी। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 450 ई॰ में गुप्त शासक कुमारगुप्त ने की थी। नालंदा विश्वविद्यालय को महान शासक हर्षवर्द्धन ने दान दिया था। हर्षवर्द्धन के बाद पाल शासकों का संरक्षण और विदेशी शासकों से दान मिला था। नालंदा विश्वविद्यालय का अस्तित्व 12वीं शताब्दी तक बना रहा। 12वीं शताब्दी में कुतुबुद्दीन का सिपाह सलाहकार बख्त्यार खिलजी द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को जला डाला था ।

नालंदा प्राचीन काल का सबसे बड़ा अध्ययन केंद्र था तथा इसकी स्थापना पाँचवी शताब्दी ई० में हुई थी। दुनिया के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेष बोधगया से 62 किलोमीटर दूर एवं पटना से 90 किलोमीटर दक्षिण में स्थित हैं। माना जाता है कि बुद्ध कई बार यहां आए थे। यही वजह है कि पांचवी से बारहवीं शताब्दी में इसे बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में भी जाना जाता था। सातवी शताब्दी ई० में ह्वेनसांग भी यहां अध्ययन के लिए आया था तथा उसने यहां की अध्ययन प्रणाली, अभ्यास और मठवासी जीवन की पवित्रता का उत्कृष्टता से वर्णन किया। उसने प्राचीनकाल के इस विश्वविद्यालय के अनूठेपन का वर्णन किया था। दुनिया के इस पहले आवासीय अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में दुनिया भर से आए 10,000 छात्र रहकर शिक्षा लेते थे, तथा 2,000 शिक्षक उन्हें दीक्षित करते थे। यहां आने वाले छात्रों में बौद्ध यात्रियों की संख्या ज्यादा थी। गुप्त राजवंश ने प्राचीन कुषाण वास्तुशैली से निर्मित इन मठों का संरक्षण किया। यह किसी आँगन के चारों ओर लगे कक्षों की पंक्तियों के समान दिखाई देते हैं। सम्राट अशोक तथा हर्षवर्धन ने यहां सबसे ज्यादा मठों, विहार तथा मंदिरों का निर्माण करवाया था। हाल ही में विस्तृत खुदाई यहां संरचनाओं का पता लगाया गया है। यहां पर सन 1951 में एक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शिक्षा केंद्र की स्थापना की गई थी। इसके नजदीक बिहारशरीफ है, जहां मलिक इब्राहिम बाया की दरगाह पर हर वर्ष उर्स का आयोजन किया जाता है। छठ पूजा के लिए प्रसिद्ध सूर्य मंदिर भी यहां से दो किलोमीटर दूर बडागांव में स्थित है। यहां आने वाले नालंदा के महान खंडहरों के अलावा 'नव नालंदा महाविहार संग्रहालय भी देख सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के 14 हेक्टेयर क्षेत्रफल में अवशेष तथा उत्खनन में मिले इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था।विश्वविद्यालय परिसर दक्षिण से उत्तर की ओर निर्मित और मठ व विहार परिसर के पूर्व दिशा में स्थित एवं मंदिर या चैत्य पश्चिम दिशा में, परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार, दो मंजिला इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप है। यह स्थल शिक्षक अपने छात्रों को संबोधित किया करते थे। विहार में प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की प्रतिमा भग्न अवस्था में है। मंदिर परिसर का सबसे बड़ा मंदिर से सम्पूर्ण क्षेत्र का विहंगम दृश्य , मंदिर कई छोटे-बड़े स्तूपों से घिरा तथा स्तूपो में भगवान बुद्ध

की मूर्त्तियाँ विभिन्न मुद्राओं में बनी हुई है। विश्वविद्यालय परिसर के विपरीत दिशा में पुरातत्वीय संग्रहालय में नालंदा विश्वविद्यालय का उत्खनन से प्राप्त अवशेषों में भगवान बुद्ध की विभिन्न प्रकार की मूर्तियां, बुद्ध की टेराकोटा मूर्तियाँ और प्रथम शताब्दी का दो जार, ताँबे की प्लेट, पत्थर पर टंकन (खुदा) अभिलेख, सिक्के, बर्त्तन तथा 12वीं सदी के चावल के जले हुए दाने रखे हुए हैं। शिक्षा संस् थान पाली साहित्य तथा बौद्ध धर्म की पढ़ाई तथा अनुसंधान होता है। यह एक नया संस् थान है। ेनसांग मेमोरियल हॉल में ेनसांग की मूर्तियां स्थापित कर चीनीयात्री ेनसांग की याद में बनाया गया है। नालन्दा और राजगीर के मध्य स्थित सिलाव मिठाई खाजा है। सूरजपुर बड़गांव में भगवान सूर्य मंदिर तथा झील है।

राजगीर - नालंदा ज़िले में स्थित राजगीर मगध साम्राज्य की राजधानी थी। राजगीर को वसुमतिपुर, वृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कुशग्रपुर के नाम से जाना जाता है। पुराणों के अनुसार राजगीर बह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन धर्म के 20 वे तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक एवं 24 वे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रथम उपदेश स्थली और भगवान बुद्ध की साधनाभूमि राजगीर है। ऋगवेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय उपनिषद, वायु पुराण, महाभारत, वाल्मीकि रामायण, जैनग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार जरासंध, श्रेणिक, बिम्बसार, कनिष्क आदि प्रसिद्ध शासकों का निवास स्थान राजगीर था। मगध सम्राट जरासंध ने भगवान श्रीकृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश किया था। पांडव पुत्र भीम एवं वृहरथ वंशीय जरासंध के बीच मॉल युद्ध होने के दौरान जरासंध मार गया था। जरासंध और भीम का मलयुद्ध स्थल को जरासंध का अखाड़ा कहा गया है।विश्व शांति स्तूप - राजगीर पर्वत समूह की रत्नागिरि श्रंखला पर विश्व शांति स्तूप में रोपवे, प्राचीन दिवारें, स्वर्ण भंडार , गुफाएँ, गृद्धकूट पर्वत है। राजगीर का निदेशांकः 25°02′N 85°25ए / 25.03 85.42 ए एवं समुद्रतल से ऊँचाई 73 मी (240 फीट) , 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 41,587 आवादी वाले क्षेत्र हिंदी एवं मगही भाषीय क्षेत्र है। दक्षिण-पूर्व में पहाड़ियों और घने जंगलों के बीच बसा राजगीर धार्मिक तीर्थस्थल, सुन्दर हेल्थ रेसॉर्ट के रूप में लोकप्रिय है। हिन्दु, जैन और बौद्ध तीनों धर्मो के धार्मिक स्थल है। बुद्ध न केवल कई वर्षों तक कर्मक्षेत्र एवं पहली बौद्ध संगीति स्थल थी। पंच पहाड़ियों से घिरा राजगीर वन्यजीव अभ्यारण्य प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण तथा वन्यजीव अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान है। राजगीर अभ्यारण्य में वनस्पतियों और वन्यप्राणियों की कई दुर्लभ प्रजातियां देखने को मिलती है। औषधीय पौधों की कई किस्मे राजगीर के जंगलो में पाई जाती है। बचे वन्यजीवों के भविष्य को सुरक्षा को सुनिश्चित करने के दिशा में पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा सन् 1978 में 35.84 वर्ग किलोमीटर के राजगीर अरण्य क्षेत्र को वन्यजीव अभ्यारण्य बना था। राजगीर के ऐतिहासिक भूमि, धार्मिक तीर्थस्थल, तीन साल पर एक बार आनेवाला बृहद मलमास मेला लगता है।

पंच पहाड़ियां रत्नागिरी, विपुलाचल, वैभारगिरि, सोनगिरि उदयगिरि हैं। तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा राजगीर का घोड़ा कटोरा झील है। पर्यटक यहाँ झील में नौकायान का लुत्फ उठा सकते हैं और यहाँ साफ-सफाई का भी बेहद ख्याल रखा जाता हैं। हाल ही में इसी झील के बीच भगवान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा भी स्थापित की गई है। अगर आप प्राकृतिक सौंदर्यता के साथ रोमांच का अनुभव और वन्यजीव को खुले जंगलों में विचरण करते देखना चाहते हैं तो राजगीर अभ्यारण्य की सैर जरूर करें और इसके लिए वसंत से बेहतर कोई ऋतु नही हो सकता क्योंकि इसके आगमन के साथ ही जंगलो में जैसे बहार आ जाती है कलियां खिलने लगती है और माँझर लगे फलों के पेड़, फलों से लदे बेर के पेड़, खेतों में लहलहाती सरसों के पिले-पिले फूल और बागों में गाती कोयल और पपीहा अद्भुत अनुभूति का एहसास करते हैं। प्रकृति सौंदर्य को निहारना स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। गृद्धकूट पर्वत पर बुद्ध ने महत्वपूर्ण उपदेश दिये थे। जापान के बुद्ध संघ ने गृद्धकूट पर्वत श्रंखला पर शान्ति स्तूप का निर्माण करवाया है। शांति स्तूप के चारों कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थपित हैं। शांति स्तूप तक पहुंचने के लिए पैदल चढ़ाई एवं रज्जू मार्ग बनाया गया है। राजस्थानी चित्रकला का अद्भुत कारीगरी राजस्थानी चित्रकारों के द्वारा लाल मन्दिर में भगवान महावीर स्वामी का गर्भगृह भूतल के निचे निर्मित जैन तीर्थयात्री आकर भगवान महावीर के पालने को झुलाते और मन्दिर में २० वे तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की काले वर्ण की 11 फुट ऊँची विशाल खडगासन प्रतिमा विराजमान है। वीरशासन धाम तीर्थ में वेणु वन के समीप भगवान महावीर स्वामी की लाल वर्ण की 11 फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा है। पंचपहाड़ी के दिगम्बर मन्दिर में भगवान महावीर की श्वेत वर्ण पद्मासन प्रतिमा , 10 धातु की प्रतिमा, एक छोटी श्वेत पाषण की प्रतिमा एवं 2 धातु के मानस्तंभ , गर्भ गृह की बाहरी दिवाल के आले में बायीं ओर पद्मावती माता की पाषाण की मूर्ति , शिरोभाग पर पार्श्वनाथ विराजमान , दायीं ओर क्षेत्रपाल जी स्थित , बायीं ओर की अलग वेदी में भगवान पार्श्वनाथ एवं अन्य? प्रतिमायें अवस्थित , दाहिनी ओर नन्दीश्वर द्वीप का निर्मित है। शिखरबद्ध दिगम्बर मन्दिर का निर्माण गिरिडीह निवासी सेठ हजारीमल किशोरीलाल ने प्रतिष्ठा विक्रम संबत 2450 में करायी थी। ब्रह्मकुंड एवं झरना - वैभव पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के सप्तधाराएं झरने सप्तकर्णी गुफाओं से प्रवाहित जल में औषधि गुण हैं।कुंड 22 में प्रमुख ब्रह्मकुन्ड का जल गर्म (४५ डिग्री है। स्वर्ण भंडार - मगध साम्राज्य का सम्राट वृहरथ वंशी जरासंध का सोने का खजाना वैभार पर्वत की गुफा के अन्दर अतुल मात्रा में सोना छुपा और पत्थर के दरवाजे पर खोलने का रहस्य शांख्य व शंख भाषा में खुदा और शांख्य भाषा व प्राकृत भाषा मगध राजा बिंदुसार के शासन काल में प्रचलित थी। . विपुलाचल पर्वत पर जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम वाणी इसी विपुलाचल पर्वत से विश्व को "जिओ और जीने दो" दिव्य सन्देश विपुलाचल पर्वत से दिया था। पहाड़ों की कंदराओं के बीच बने २६ जैन मंदिर है। जैन धर्म के अनुयायियों की विपुलाचल, सोनागिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, वैभारगिरि पहाड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। जैन मान्यताओं के अनुसार इन पर 23 तीर्थंकरों का समवशरण तथा जैन मुनि मोक्ष स्थल हैं। आचार्य महावीर कीर्ति दिगम्बर जैन सरस्वती भवन का निर्माण परम पूज्य आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में सन् 1972 को सम्पन्न हुआ था। भवन में आचार्य महावीर कीर्ति जी की पद्मासन प्रतिमा है। पुस्तकालय में जैन धर्म सम्बंधित हजारों हस्तलिखित एवं प्रकाशित पुस्तकें , जैन सिद्धांत भवन ह्यआराह्व के सौजन्य से जैन

चित्रकला एवं हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ है। विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के जीवनी से संबंधित हस्तनिर्मित चित्रों कि प्रदर्शनी लगती है। जरासंध अखाड़ा के समीप नागराज मणिभद्र स्थल है।

पावापुरी - जैन धर्म के अनुयायियों के लिए पवित्र पावा में भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। पावा के जलमंदिर है। पावापुरी का निदेशांक: 25°05′30″N 85°32′20″E□ / □25.0917°N 85.5389°E 2011 जनगणना के अनुसार जनसंख्या 5,830 आवादी में मगही, हिन्दी भाषीय है। जैनधर्म के प्रभसूरीजी ने 13 वीं सदी ई. में विविध तीर्थ कल्प रूप में प्राचीन नाम अपापा, पावापुरी , पावा से राजगृह से दस मील दूर है। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण का सूचक स्तूप का खंडहर स्थित है। कनिंघम के अनुसार बुद्धचरित में पावापुरी की स्थिति का उल्लेख है। कसिया प्राचीन कसिया को कुशीनगर से 12 मील दूर पदरौना स्थान पर गौतम बुद्ध काल में मल्ल-क्षत्रियों की राजधानी थी। भगवान महावीर का मोक्ष 72 वर्ष की आयु में हुआ था। बौद्ध ग्रंथ के अनुसार बुद्ध जीवन के अंतिम समय में तथागत ने पावापुरी में ठहरकर चुंड का सूकर-माद्दव का भोजन स्वीकार करने के कारण अतिसार हो जाने से उनकी मृत्यु कुशीनगर पहुँचने पर हो गई थी। कनिंघम ने पावा का अभिज्ञान कसिया के दक्षिण पूर्व में 10 मील पर स्थित फाज़िलपुर है। जैन ग्रंथ कल्पसूत्र के अनुसार महावीर ने पावा में एक वर्ष बिताने के बाद प्रथम धर्म-प्रवचन पावा नगरी को जैन संप्रदाय का महत्वपूर्ण है। महावीर स्वामी द्वारा जैन संघ की स्थापना पावापुरी में की गई थी। फाजिलनगर को पावा नगर कहते हैं। पावापुरी का कमल तालाब के बीच जल महावीर स्वामी जी मंदिर , समोशरण मंदिर, मोक्ष मंदिर और नया मन्दिर हैं।

बिहारशरीफ - नालंदा जिला का मुख्यालय बिहार शरीफ में बौद्ध अनुयायी उच्च शिक्षा ग्रहण स्थल थे। बिहार शरीफ में शेख शफ़ूर्दीन याहिया मनेरी का कर्म स्थली था। बिहारशरीफ को 5 वीं शताब्दी का गुप्त काल मे ओदवंतपुरी कहा जाता था। ओदवंतपुरी में गुप्तकाल का स्तंभ है। बिहारशरीफ का पुराना नाम ओदंतपुरी और उदंतपुरी है। 7वीं शताब्दी में पाल वंश के शासक गोपाल ने ओदवंतपुरी के क्षेत्रों में अनेक विहार (बौद्ध मठ) का निर्माण करवाया और राजधानी बनाया। 10वीं शताब्दी तक पाल राजवंश की राजधानी ओदवंतपुरी में था। आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने 1193 ई. में नालंदा पर आक्रमण के दौरान दौरान अनेक बौद्ध मठों , ओदवंतपुरी विश्वविद्यालय को बर्बाद कर दिया। बख्तियार खिलजी के लौटने के बाद स्थानीय बुंदेलों ने बिहारशरीफ पर दोबारा कब्जा कर राजा बिठल का शासन स्थापित हुआ। राजा बिठल और बुंदेलों ने करीब सौ साल तक राज किया। साल 1324 में दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने अफगान योद्धा सैय्यद इब्राहिम मलिक को आक्रमण के लिए भेजा। जिसमें बुंदेलों की हार हुई और राजा बिठल मारे जाने केबाद बाद बिहारशरीफ पर दिल्ली सल्तनत का कब्जा हो गया। सैय्यद इब्राहिम मलिक की जीत से खुश होकर सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्राहिम मलिक को मृदुल मुल्क और

बिहारशरीफ - नालंदा जिला का मुख्यालय बिहार शरीफ में बौद्ध अनुयायी उच्च शिक्षा ग्रहण स्थल थे। बिहार शरीफ में शेख शफ़ूर्दीन याहिया मनेरी का कर्म स्थली था। बिहारशरीफ को 5 वीं शताब्दी का गुप्त काल मे ओदवंतपुरी कहा जाता था। ओदवंतपुरी में गुप्तकाल का स्तंभ है। बिहारशरीफ का पुराना नाम ओदंतपुरी और उदंतपुरी है। 7वीं शताब्दी में पाल वंश के शासक गोपाल ने ओदवंतपुरी के क्षेत्रों में अनेक विहार (बौद्ध मठ) का निर्माण करवाया और राजधानी बनाया। 10वीं शताब्दी तक पाल राजवंश की राजधानी ओदवंतपुरी में था।

मलिक बाया की उपाधि दी। सैय्यद इब्राहिम मलिक ने 30 सालों तक राज किया। वर्ष 1353 में सैय्यद इब्राहिम मलिक की हत्या कर दी गई। बिहारशरीफ के पीर पहाड़ी (हिरण्य पर्वत) की चोटी पर इब्राहिम मलिक को दफनाया गया। ये संरचना दुर्लभ गुणवत्ता वाली ईंटों से बनी गुंबद के अंदर इब्राहिम मलिक के अलावा उसके परिवार के सदस्यों की 10 कब्रें हैं। राजा बिठल की मौत के बाद बुंदेला राजपूत गढ़पर और तुंगी गांव में जाकर बस गए। ब्रिटिश साम्राज्य 1867 में बिहारशरीफ में नगरपालिका गठन किया गया था।

तेल्हाड़ा - नालन्दा जिले का एकंगरसराय प्रखण्ड के तेल्हाड़ा का कुषाणकाल की तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय के खंडहरों में तब्दील है। तिलाधक महाविहार तेल्हाड़ा का उत्खनन में प्राप्त अवशेषों से प्राप्त जानकारी के अनुसार तिलाधक महाविहार प्राचीन शिक्षा केंद्र था। सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत में तेल्हाड़ा स्थान का जिक्र करते हुए कहा कि 5वीं सदी यानि गुप्त काल से 12वीं सदी पालवंश के शासनकाल तक तेल्हाड़ा का तिलाधक महाविहार बौद्ध साधकों के शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। बख्तियार खिलजी द्वारा जलाए जाने के प्रमाण उत्खनन के क्रम में साक्ष्य मिले हैं। तिलाधक महाविहार का उत्खनन के अनुसार तीन बौद्ध मंदिर क्रमवार से बौद्ध विहार का ऊपरी छत या सतह का निर्माण पाल वंश के शासनकाल यानि आठवीं से बारहवीं सदी एवं नीचे की सतह का निर्माण काल पांचवीं सदी का है। तेल्हाड़ा विश्वविद्यलय की स्थापना कुषाण काल में महायान की पढ़ाई होती थी। तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय की स्थापना काल से 100 ई.पू. से 1100 ई. तक देसी-विदेशी छात्र पढ़ाई करते थे।उत्खनन से प्राप्त जानकारी के अनुसार तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय में शिक्षकों के रहने के लिए कमरे और पढने के लिए कक्ष , 1000 बौद्ध भिक्षु यहां रह कर शिक्षा ग्रहण , उच्च शोध वाले तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय विश्व के बौद्ध विद्वानों के लिए ज्ञान हासिल करने का केंद्र था। तेल्हाडा के 3 बौद्ध मंदिरों के अवशेष को इत्सिंग के विवरणी में एक हजार बौद्ध भिक्षुओं के बड़े चबूतरे पर एक साथ बैठकर प्रार्थना करने का उल्लेख है। जिसे भी यहाँ खुदाई के दौरान चिंहित किया गया है। उत्खनन से प्राप्त ब्राह्मी लिपि और मागधी भाषा में शिलालेख पर अंकित विवरण के अनुसार तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय का नाम तिलाधक, तेलाधक्य या तेल्हाड़ा नहीं बल्कि श्री प्रथम शिवपुर महाविहार है .। शिलालेख पर तिल्हाधक महाविहारा बौद्ध महाविहार एक किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। तेल्हाड़ा उत्खनन 2009 में प्रारम्भ किया गया था। बख्तियार खिलजी ने तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय को जलाकर नष्ट कर दिया था।उत्खनन कर्ता के अनुसार बख्तियार खिलजी द्वारा मनेर से होते हुए सबसे पहले तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय के शिक्षकों व छात्रों को भगाकर वहां आग लगा दी थी। तेल्हाड़ा की महाविहार उत्खनन के दौरान साक्ष्य हैं। विश्वविद्यालय के खंडहर के रूप में तब्दील होने के बाद बिहार की पहली मस्जिद उसने तेल्हाड़ा में बनवायी थी।

चैत नवरात्रि - योगिनियों को आदिशक्ति माँ काली का अवतार माना जाता है

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से चैत नवरात्रि शुरू होती है। इस वर्ष चैत नवरात्रि 09 अप्रैल मंगलवार से शुरू होगी। चैत माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा 8 अप्रैल को रात्रि 11.50 बजे से शुरू होकर 9 अप्रैल को रात 8.00 बजे तक रहेगी। कलश स्थापना सदैव पूजा घर के ईशान कोण में करना चाहिए।

नवरात्रि में योगिनियों की पूजा करने का भी विधान है। पुराणों के अनुसार, चौसठ योगिनियाँ होती है। सभी योगिनियों को आदिशक्ति माँ काली का अवतार माना गया है। किवदंती है कि घोर नामक दैत्य के साथ युद्ध करते समय योगिनियों का अवतार हुआ था और यह सभी माता पार्वती की सखियां हैं।

चौंसठ योगिनियों में (1) बहुरूप, (2) तारा, (3) नर्मदा, (4) यमुना, (5) शांति, (6) वारुणी (7) क्षेमंकरी, (8) ऐन्द्री, (9) वाराही, (10) रणवीरा, (11) वानर-मुखी, (12) वैष्णवी, (13) कालरात्रि, (14) वैद्यरूपा, (15) चर्चिका, (16) बेतली, (17) छिन्नमस्तिका, (18) वृषवाहन, (19) ज्वाला कामिनी, (20) घटवार, (21) कराकाली, (22) सरस्वती, (23) बिरूपा, (24) कौवेरी, (25) भलुका, (26) नारसिंही, (27) बिरजा, (28) विकतांना, (29) महालक्ष्मी, (30) कौमारी, (31) महामाया, (32) रति, (33) करकरी, (34) सर्पश्या, (35) यक्षिणी, (36) विनायकी, (37) विंध्यवासिनी, (38) वीर कुमारी, (39) माहेश्वरी, (40) अम्बिका, (41) कामिनी, (42) घटाबरी, (43) स्तुती, (44) काली, (45) उमा, (46) नारायणी, (47) समुद्र, (48) ब्रह्मिनी, (49) ज्वाला मुखी, (50) आग्नेयी, (51) अदिति, (52) चन्द्रकान्ति, (53) वायुवेगा, (54) चामुण्डा, (55) मूरति, (56) गंगा, (57) धूमावती, (58) गांधार, (59) सर्व मंगला, (60) अजिता, (61) सूर्यपुत्री (62) वायु वीणा, (63) अघोर और (64) भद्रकाली योगिनियाँ है।

नवरात्रि में पाठ का प्रारम्भ प्रार्थना से करना चाहिए। उसके बाद दुर्गा सप्तशती किताब से सप्तश्लोकी दुर्गा, उसके बाद श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम, दुर्गा द्वात्रि शतनाम माला, देव्याः कवचम, अर्गला स्तोत्रम, किलकम, अथ तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम, श्री देव्यर्थ शीर्षम का पाठ करने के बाद नवार्ण मंत्र का 108 बार यानि एक माला जप करने के उपरांत दुर्गा सप्तशती का एक-एक सम्पूर्ण पाठ करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति से यह सम्भव नही तो निम्न प्रकार भी पाठ कर सकते है।

जो व्यक्ति एक दिन में सभी पाठ नही कर सकते हैं वे नवरात्रि में पाठ का प्रारम्भ प्रार्थना से शुरू करना चाहिए और उसके बाद दुर्गा सप्तशती किताब से सप्तश्लोकी दुर्गा, उसके बाद श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम, दुर्गा द्वात्रि शतनाम माला, देव्याः कवचम्, अर्गला स्तोत्रम, किलकम, अथ तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम, श्री देव्यर्थ शीर्षम का पाठ करने के बाद नवार्ण मंत्र का 108 बार यानि एक माला जप करने के उपरांत-

पहला दिन - प्रथम अध्याय
दूसरा दिन - दूसरा, तीसरा और चौथा अध्याय
तीसरा दिन - पाँचवाँ अध्याय
चौथा दिन - छठा और सातवां अध्याय
पाँचवा दिन - आठवां और नौवां अध्याय
छठा दिन - दसवां और ग्यारहवां अध्याय
सातवाँ दिन - बारहवाँ अध्याय
आठवां दिन - तेरहवां अध्याय
नौवाँ दिन - प्रधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य एवं मूर्ति रहस्य, कर सकते हैं।

नवरात्रि में भोजन के रूप में केवल गंगा जल और दूध का सेवन करना अति उत्तम माना जाता है, कागजी नींबू का भी प्रयोग किया जा सकता है। फलाहार पर रहना भी उत्तम माना जाता है। यदि फलाहार पर रहने में कठिनाई हो तो एक शाम अरवा भोजन में अरवा चावल, सेंधा नमक, चने की दाल, और घी से बनी सब्जी का उपयोग किया जाता है।

नवरात्रि में पहला दिन प्रथम मां शैलपुत्री, दूसरे दिन द्वितीया मां ब्रह्मचारिणी, तीसरा दिन तृतीया मां चंद्रघंटा, चौथा दिन चतुर्थी मां कुष्मांडा, पांचवा दिन पंचमी मां स्कंदमाता, छठा दिन षष्ठी मां कात्यायनी, सातवां दिन सप्तमी मां कालरात्रि, आठवां दिन अष्टमी दुर्गा महा अष्टमी, नौवां दिन दुर्गा महानवमी मां सिद्धिदात्री पूजाकी पूजा होती है।

सात चरणों में मतदान - चार जून को मतगणना

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल, 2024 से 1 जून,2024 तक 7 चरणों में होंगी और 4 जून को वोटों की गिनती होगी। भारत निर्वाचन आयोग ने 16 मार्च को लोकसभा चुनाव 2024 के तिथियों की घोषणा कर दी है। इस बार चुनाव उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में सभी सात चरणों में वोटिंग होगी। तिथि की घोषणा के साथ ही, देश में चुनाव आचार संहिता तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। चुनाव आचार संहिता लागू होते ही सरकार ऐसा कोई नीतिगत निर्णय नहीं ले सकेगी जो मतदाताओं को प्रभावित कर सके।

19 अप्रैल को पहले चरण में अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छ्त्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, अंडमान एंड निकोबार आईलैंड्स, जम्मू कश्मीर, लक्षद्वीप और पुंडुचेरी की 102 लोकसभा सीटों पर मतदान होंगे।

पहले चरण का नामांकन 20 से 28 मार्च तक, नामांकन पत्रों की जांच 30 मार्च को और नाम वापसी 2 अप्रैल को हो चुका है। अब पहले चरण का प्रचार प्रसार तेजी से चल रहा, जो 17 अप्रैल को खतम होगा। पहले चरण का मतदान 19 अप्रैल को सम्पन्न होगा। 40 लोक सभा सीटों वाली बिहार में पहले चरण में 04 सीटों पर यथा- औरंगाबाद, गया, नवादा एवं जमुई में मतदान होगी।

उसी तरह पहले चरण में उत्तर प्रदेश की 80 लोक सभा सीटों में से 9 सीटों पर यथा - सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, नगिना, मुरादाबाद, रामपुर और पीलीभीत में मतदान होगी।

बिहार के पहले चरण की चार सीटों के लिए 38 प्रत्याशी चुनाव मैदान में है। औरंगाबाद लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से कुल नौ प्रत्याशी मैदान में है, जिनमें भाजपा के सुशील कुमार सिंह, राजद के अभय कुमार सिन्हा, बहुजन समाज पार्टी के सुरेश कुमार, पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया के प्रतिभा रानी, अखिल हिंद फॉरवर्ड ब्लॉक के शैलेश राही, राष्ट्रीय जनसंभावना पार्टी के रामजीत सिंह और तीन निर्दलीय है।

गया लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से कुल 14 प्रत्याशी मैदान में है, जिनमें हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (से.) के जीतन राम माँझी, राष्ट्रीय जनता दल के कुमार सर्वजित , बहुजन समाज पार्टी के सुषमा कुमारी, दि नेशनल रोडमैप पार्टी ऑफ इंडिया के गिरिधर सपेरा, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के धीरेन्द्र प्रसाद, भारतीय लोक चेतना पार्टी के शिव शंकर, राष्ट्रीय जनसंभावना पार्टी के सुरेन्द्र मांझी सहित सात निर्दलीय हैं।

RAJIV KUMAR

नवादा लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से कुल 8 प्रत्याशी मैदान में है, जिनमें भारतीय जनता पार्टी के विवेक ठाकुर, राष्ट्रीय जनता दल के श्रवण कुमार, बहुजन समाज पार्टी के रंजीत कुमार, भारत जन जागरण दल के आनंद कुमार वर्मा, पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया (डेमोक्रेटिक) के गनौरी पंडित, भागीदारी पार्टी (पी) के गौतम कुमार बबलू सहित 2 निर्दलीय है।

जमुई लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से कुल 7 प्रत्याशी मैदान में है, जिनमें राष्ट्रीय जनता दल के अर्चना कुमारी, लोजपा (आर) के अरुण कुमार भारती, बहुजन समाज पार्टी के सकल देव दास, लोकतांत्रिक सामाजिक न्याय पार्टी के डॉ जगदीश प्रसाद, राष्ट्रीय जनसंभावना पार्टी के श्रवण कुमार, एसयूसीआई के संतोष कुमार दास सहित 1 निर्दलीय है।

26 अप्रैल को दूसरे चरण में असम, बिहार, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, राजस्थान, त्रिपुरा, यूपी, पश्चिम बंगाल और जम्मू कश्मीर के इन सभी राज्यों की कुल 89 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए 28 मार्च को नोटिफिकेशन जारी हुआ और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भरने लगे। नामांकन की अंतिम तारीख 4 अप्रैल समाप्त हो गई और उम्मीदवार 8 अप्रैल तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

7 मई को तीसरे चरण में असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, कर्नाटक. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, यूपी, पश्चिम बंगाल, दादरा एंड नगर हवेली और दमन एवं दीव और जम्मू कश्मीर के सभी राज्यों की कुल 94 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए नोटिफिकेशन 12 अप्रैल को जारी होगा और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भर सकेंगे। नामांकन की अंतिम तारीख 19 अप्रैल है और उम्मीदवार 22 अप्रैल तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

13 मई को चौथे चरण में आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना, यूपी, पश्चिम बंगाल और जम्मू कश्मीर केइन सभी राज्यों की कुल 96 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए नोटिफिकेशन 18 अप्रैल को जारी होगा और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भर सकेंगे। नामांकन की अंतिम तारीख 25 अप्रैल है और उम्मीदवार 29 अप्रैल तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

20 मई को पांचवें चरण में बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, ओडिशा, यूपी, पश्चिम बंगाल, जम्मू कश्मीर और लद्दाख के इन सभी राज्यों की कुल 49 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए नोटिफिकेशन 26 अप्रैल को जारी होगा और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भर सकेंगे। नामांकन की अंतिम तारीख 3 मई है और उम्मीदवार 6 मई तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

25 मई को छठें चरण में बिहार, हरियाणा, झारखंड, ओडिशा, यूपी, पश्चिम बंगाल, दिल्ली के इन सभी राज्यों की कुल 57 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए नोटिफिकेशन 29 अप्रैल को जारी होगा और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भर सकेंगे। नामांकन की अंतिम तारीख 6 मई है और उम्मीदवार 9 मई तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

1 जून को सातवें और अंतिम चरण में बिहार, हिमाचल, झारखंड, ओडिशा, पंजाब, पश्चिम बंगाल, चंडीगढ़ के इन सभी प्रदेशों की कुल 57 सीटों पर मतदान होंगे। इसके लिए नोटिफिकेशन 7 मई को जारी होगा और इसी दिन से उम्मीदवार नामांकन फार्म भर सकेंगे। नामांकन की अंतिम तारीख 14 मई है और उम्मीदवार 17 मई तक अपना नामांकन वापस ले सकेंगे।

पहले चरण से सातवें चरण तक हुए मतदानों की गिनती 4 जून को होगी।

बिहार में प्रथम चरण में औरंगाबाद, गया, नवादा एवं जमुई, दूसरे चरण में किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया, भागलपुर एवं बांका, तीसरे चरण में झंझारपुर, सुपौल, अररिया, मधेपुरा एवं खगड़िया, चौथे चरण में दरभंगा, उजियारपुर, समस्तीपुर, बेगुसराय एवं मुंगेर, पांचवे चरण में सीतामढ़ी, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सारण एवं हाजीपुर, छठे चरण में वाल्मीकिनगर, प. चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, वैशाली, गोपालगंज, महाराजगंज एवं सीवान और सातवें एवं अंतिम चरण में नालंदा, पटना साहिब, पाटलिपुत्र, आरा, बक्सर, सासाराम, काराकाट एवं जहानाबाद मतदान होगी।

लोकसभा चुनाव : एक नये अध्याय की शुरूआत हो

लोकसभा चुनाव में चुनावी मैदान सज गया है, सभी राजनीतिक दलों में एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला हमेशा की तरह परवान चढ़ने लगा है। राजनीति में स्वच्छता, नैतिकता एवं मूल्यों की स्थापना के तमाम दावों के अनैतिकता, दल-बदल, आरोप-प्रत्यारोप की हिंसक मानसिकता पसरी है। राजनेता दलबदल की ताल ठोक रहे हैं। दलबदलुओं को टिकट देने में कोई दल पीछे नहीं रहा, क्योंकि सवाल, येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतने तक जो सीमित रह गया है। सिद्धांतों और राजनीतिक मूल्यों की परवाह कम ही लोगों को रह गई है। चुनावी राजनीति देश के माहौल में कड़वाहट घोलने का काम भी कर रही है। स्वस्थ एवं मूल्यपरक राजनीति को किनारे किया जा रहा है। राजनीति पूरी तरह से जातिवाद, बाहुबल और धनबल तक सिमट गई है। हालत यह है कि अब तक राजनीति दलों ने जिन प्रत्याशियों को उतारा है, उनमें आधे से अधिक दलबदलू, अपराधी अथवा दागी हैं। ऐसे में राजनीति के स्तर में सुधार की उम्मीद आखिर कौन, किससे करे? इस मुद्दे पर राजनीतिक दलों की चुप्पी तो समझ में आती है, लेकिन चुनाव आयोग की खामोशी समझ से परे है।

लोकसभा चुनाव नेतृत्व चयन का ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण अवसर है, इस अवसर पर लाओत्जु ताओ ते चिंग की पुस्तकह्यह्यद ताओ ऑफ लीडरशिपह्लह्ल राजनीति एवं राजनेताओं के लिये एक रोशनी है। यह एक अद्भुत, अद्वितीय एवं अप्रतिम कृति हैं जो नये युग के लिए नेतृत्व की रचनात्मक व्यूह रचना प्रस्तुत करती है। आज जबकि देश और दुनिया में सर्वत्र नेतृत्व के प्रश्न पर एक घना अंधेरा छाया हुआ है, निराशा और दायित्वहीनता की चरम पराकाष्ठा ने राजनीति एवं नेतृत्व को जटिल दौर में लाकर खड़ा कर दिया है। समाज और राष्ट्र के समुचे परिदृश्य पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें जिन विषम और जटिल परिस्थितियों से रू-ब-रू होना पड़ता है, उन विषम हालातों के बीच ठीक से राह दिखाने वाला कोई नेतृत्व नजर नहीं आता।

यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए कि लोकतंत्र धुंधलका सब देख रहे हैं, लेकिन खामोशी के साथ। शायद सबकी अपनी-अपनी मजबूरियां हैं। मतदाता की मजबूरी यह है कि आखिर उसे मैदान में डटे उम्मीदवारों में से ही एक को चुनना है। इस देश ने महंगाई, बेरोजगारी, महिला अपराध, गरीबी, साम्प्रदायिकता के खिलाफ भी जनता को सड़कों पर उतरते देखा है लेकिन राजनीति में टकराव, अपराध, देश-विरोध और हिंसा की राजनीति के खिलाफ कभी कोई आंदोलन नहीं हुआ। चुनाव आयोग की अपनी सीमाएं हो सकती हैं, लेकिन जेल में बैठे-बैठे लोग चुनाव लड़ भी लेते हैं और जीत भी जाते हैं। खलनायक नायक बनने लगे हैं। चुनाव लड़ने के लिए अधिकतम खर्च की सीमा सरेआम ध्वस्त होती है, लेकिन आयोग कुछ कर नहीं पाता। चुनाव प्रचार के दौरान अपशब्दों का उच्चारण-गालीगलोच खुल्लम-खुल्ला होता है, लेकिन आयोग नोटिस देकर ही अपने दायित्व से मुक्त हो जाता है। मतदाताओं के वोट खरीदने के लिए उन्हें सरेआम पैसे ही नहीं शराब तक बांटी जाती है, लेकिन किसी उम्मीदवार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती। जनता राजनीति के गिरते स्तर से त्रस्त तो है, लेकिन उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाती। इन लोकसभा चुनाव में यह चुप्पी टूटनी चाहिए और आजादी के अमृतकाल को अमृममय बनाने वाला नेतृत्व सामने आना चाहिए। ऐसा नेतृत्व जो देश को अग्रणी आर्थिक महाशक्ति के रूप में ले जाये एवं विकास की स्वर्णिम गाथा को गढ़े।

एक सफल, सार्थक, समर्थ एवं चरित्रसम्पन्न विपक्षी नेतृत्व की आवश्यकता हर दौर में रही है, लेकिन आज यह ज्यादा तीव्रता से महसूस की जा रही है। विपक्षी नेतृत्व कैसा हो, उसका अपना साथियों के साथ-साथ सत्तापक्ष के साथ कैसा सलूक हो? उसमें क्या हो, क्या न हो? वह क्या करे, क्यों करे, कब करे, कैसे करे? इत्यादि कुछ जटिल एवं गंभीर प्रश्न हैं जिनके जवाब ढूंढ़े बिना हम एक सक्षम विपक्षी नेतृत्व को उजागर नहीं कर सकते। इन प्रश्नों के उत्तरों की कसौटी पर ही हमें आने वाले सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के नेतृत्व को कसना होगा। जिस नेतृत्व के पास इन प्रश्नों के उत्तर होंगे, जो समयज्ञ होगा, सहिष्णु होगा, तटस्थ होगा, दूरदर्शी होगा, निःस्वार्थी होगा, वैसा ही नेतृत्व जिस राष्ट्र को प्राप्त होगा, उसकी प्रगति को संसार की कोई शक्ति बाधित नहीं कर सकेगी। ऐसा ही नेतृत्व नया इतिहास बना सकेगा और भावी पीढ़ी को उन्नत दिशाओं की ओर अग्रसर कर सकेगा। आज चुनाव प्रचार में जिस तरह की आरोप-प्रत्यारोप की हिंसक संस्कृति पनपी है, एक दूसरे पर जूते-चप्पल फेंके जाते है, पत्थर से हमला किया जाता है, छोटी-छोटी बातों पर अभद्र शब्दों का व्यवहार, हो-हल्ला, छींटाकशी और हंगामा आदि घटनाएं ऐसी है जो नेतृत्व को धुंधलाती है।

नेतृत्व को लेकर लोगों की मानसिकता में बहुत बदलाव आया है, आज योग्य नेतृत्व की प्यासी परिस्थितियां तो हैं, लेकिन बदकिस्मती से अपेक्षित नेतृत्व नहीं हैं। जलाशय है, जल नहीं है। नगर है, नागरिक नहीं है। भूख है, रोटी नहीं है-ऐसे में हमें सोचना होगा कि क्या नेतृत्व की इस अप्रत्याशित रिक्तता को भरा जा सकता है? क्या राष्ट्र के सामने आज जो भयावह एवं विकट संकट और दुविधा है उससे छुटकारा मिल सकता है? हालही में नेतृत्व के प्रश्न पर एक करारा व्यंग्य पढ़ा था-ह्यदेश और ट्रेन में यही अंतर है कि ट्रेन को लापरवाही से नहीं चलाया जा सकता।ह्ल यानी देश के संचालन में की गई

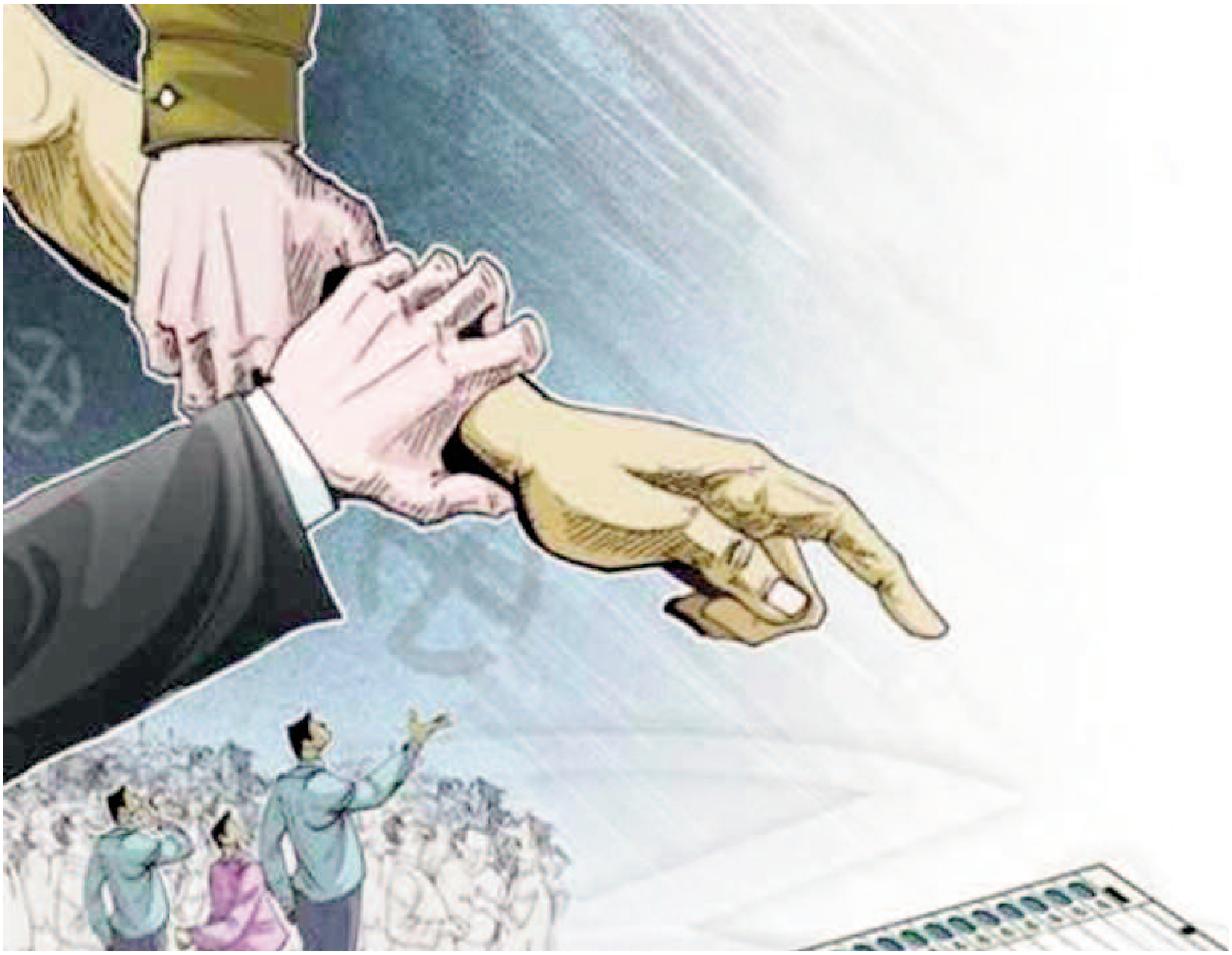

लापरवाही तो क्षम्य हैं पर ट्रेन के पटरी से उतरने में की गई लापरवाही क्षम्य नहीं, क्योंकि इसके साथ आदमी की जिंदगी का सवाल जुड़ा है। मगर हम यह न भूलें कि देश का नेतृत्व अपने सिद्धांतों और आदर्शों की पटरी से जिस दिन उतर गया तो पूरी इन्सानियत एवं राष्ट्रीयता की बरबादी का सवाल उठ खड़ा होगा। आज देश में लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक, नैतिक जीवन-मूल्यों के मानक बदल गये हैं न्याय, कानून और व्यवस्था के उद्देश्य अब नई व्याख्या देने लगे हैं। चरित्र हासिए पर आ गया, सत्ता केन्द्र में आ खड़ी हुई। ऐसे समय में कुर्सी पाने की दौड़ में लोग जिम्मेदारियां नहीं बांटते, चरित्र बांटने लगते हैं और जिस देश का चरित्र बिकाऊ हो जाता है उसकी आत्मा को फिर कैसे जिन्दा रखा जाए, चिन्तनीय प्रश्न उठा खड़ा हुआ है। आज कौन अपने दायित्व के प्रति जिम्मेदार है? कौन नीतियों के प्रति ईमानदार है? इस संदर्भ में आचार्य तुलसी का कथन यथार्थ का उद्घाटन करता है कि ह्यह्यऐसा लगता है कि राजनीतिज्ञ का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीतिनिपुण व्यक्तित्व से नहीं, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्व दें, किन्तु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता है।ह्लह्ल राजनैतिक लोगों से महात्मा बनने की उम्मीद तो नहीं की जा सकती, पर वे पशुता पर उतर आएं, यह ठीक नहीं है। वर्तमान विपक्षी नेतृत्व की सबसे बड़ी विसंगति और विषमता यह है कि वह परदोषदर्शी है, जो सत्तापक्ष की अच्छाई में भी बुराई देखने वाले हैं। यह नेतृत्व कुटिल है, मायाबी है, नेता नहीं, अभिनेता है, असली पात्र नहीं, विदूषक की भूमिका निभाने वाला है। यह नेतृत्व सत्ता- प्राप्ति के लिये कुछ भी करने से बाज नहीं आता, यहां तक जिस जनता के कंधों पर बैठकर सत्ता तक पहुंचने के लिये जैसी राजनीति यह कर रहा है, घोषणा-पत्रों में जनता को ठगने एवं लुभाने के जो प्रयास हो रहे हैं, वे एक तरह से जनता की पीठ में भी सबसे पहले छुरा भोंकते हुए प्रतीत होते हैं। इससे भी अधिक घातक है इस नेतृत्व का असंयमी, अपराधी और चरित्रहीन होना, जो सत्ता पर काबिज होने के लिये राष्ट्र से भी अधिक महत्व अपने परिवार को देता है। देश से भी अधिक महत्व अपनी जाति और सम्प्रदाय को देता है। चुनाव जीतना जिनके लिये सेवा का साधन नहीं, विलास का साधन है। नेतृत्व का चेहरा साफ-सुथरा बने, इसके लिये अपेक्षित है कि इस क्षेत्र में आने वाले व्यक्तियों के चरित्र का परीक्षण हो। आई-क्यू टेस्ट की तरह करेक्टर टेस्ट की कोई नई प्रविधि प्रयोग में लाई जाये तो यह लोकसभा चुनाव का संग्राम अधिक सार्थक होगा।

राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीतिनिपुण व्यक्तित्व से नहीं, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्व दें, किन्तु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता है। राजनैतिक लोगों से महात्मा बनने की उम्मीद तो नहीं की जा सकती, पर वे पशुता पर उतर आएं, यह ठीक नहीं है। वर्तमान विपक्षी नेतृत्व की सबसे बड़ी विसंगति और विषमता यह है कि वह परदोषदर्शी है, जो सत्तापक्ष की अच्छाई में भी बुराई देखने वाले हैं। यह नेतृत्व कुटिल है, मायाबी है, नेता नहीं, अभिनेता है, असली पात्र नहीं, विदूषक की भूमिका निभाने वाला है। यह नेतृत्व सत्ता- प्राप्ति के लिये कुछ भी करने से बाज नहीं आता, यहां तक जिस जनता के कंधों पर बैठकर सत्ता तक पहुंचने के लिये जैसी राजनीति यह कर रहा है।

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हो

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है। पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दर्शाता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए।

एक और विडंबना देखिए, निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज्यादा खुशहाल हैं। पता नहीं, इस रैंकिंग पर कितना भरोसा किया जाए? जहां तक भारत का सवाल है, खुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निमार्ताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है। भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की कट्टरता एवं संकीर्णता भी खुशहाल समाज निर्माण की बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 126वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा। सबसे खुशहाल देश फिनलैंड की आबादी महज 56 लाख है, उसके लिए विकास आसान है। भारत के मुम्बई, दिल्ली, कोलकता शहर में इसमें कहीं ज्यादा लोग रहते हैं। वैसे भी खुशी महसूस करना व्यक्ति के खुद की सोच पर निर्भर करता है। इसलिये प्रश्न है कि हमारी खुशी का पैमाना क्या हो? अधिकतर लोग छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने को ही खुशी मान लेते हैं। इससे उन्हें उस पल तो संतुष्टि मिल जाती है, उनका मन खिल जाता है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती, स्थायी नहीं होती। इच्छा पूरी होने के साथ ही उनकी खुशी भी कमजोर होने लगती है। खुशी एवं प्रसन्नता हम सबकी जरूरत है, लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारी यह जरूरत पूरी हो पा रही है, ताजा आकलन से तो यही सिद्ध हो रहा है कि हम खुशी एवं प्रसन्नता के मामले में लगातार पिछड़ रहे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि हमारा भारतीय समाज एवं यहां के लोग अपने ज्यादातर पड़ोसी समाजों से कम खुश है। खुशहाली की रिसर्च में खुशहाली को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से मापा जाता है। लेकिन खुशियां का दायरा इतना छोटा तो नहीं होता। विकास की सार्थकता इस बात में है कि देश का आम नागरिक खुद को संतुष्ट और आशावान महसूस करे। स्वयं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बने, कम-से-कम कानूनी एवं प्रशासनिक औपचारिकताओं का सामना करना पड़े, तभी वह खुशहाल हो सकेगा।

बिहार में शिक्षा के विकास की दिशा में सरकार की एक बेहतरीन कदम

राकेश कुमार

विशेष संवाददाता

2024 मैट्रिक परीक्षा में 82.91% परीक्षार्थी हुए सफल, अब तक बिहार बोर्ड के इतिहास में सबसे बेहतर परिणाम बिहार बोर्ड 10वीं की वार्षिक परीक्षा 2024 में इस बार 16 लाख से अधिक छात्रों ने उपस्थिति दर्ज करवाई जिसमें 8,58,785 लड़कियां 8,05,467 लड़के थे लड़के थे। इन 16.4 छात्रों में 13,79,842 छात्रों को सफलता मिली है। इस साल का पासिंग प्रतिशत पिछले 6 साल से बेहतर रहा है। बिहार बोर्ड के 10वीं के परिणाम में 4,52,302 छात्रों ने पहली डिवीजन प्राप्त की है, जिसमें 2,52,846 छात्र और 199,456 छात्राएं शामिल हैं। बिहार बोर्ड के 10वीं के परिणाम में 5,24,965 छात्रों ने दूसरी डिवीजन प्राप्त की है। आपको बता दें कि बिहार बोर्ड के 10वीं के परिणाम में 3,80,732 छात्रों ने तीसरी डिवीजन प्राप्त की है।

बिहार बोर्ड 10वीं में पूर्णिया के शिवांकर ने 489 अंकों के साथ टॉप किया है। इसके साथ ही दूसरे स्थान पर समस्तीपुर के आदर्श रहे हैं। तीसरी रैंक पर संयुक्त रूप से आदित्य कुमार सुमन कुमार पूर्व पलक कुमारी और सुजिया परवीन ने कब्जा किया है। टॉप 10 में कुल 51 छात्र शामिल हैं।

बिहार बोर्ड की तरफ से 10वीं में टॉप 20 रैंक लाने वाले छात्रों के लिए विशेष पुरस्कारों की घोषणा की गई है जिसमें जी के कोचिंग सहित अन्य घोषणा शामिल है। बिहार बोर्ड की तरफ से पहले रैंक लाने वालों को ₹100000 कैश और एक लैपटॉप दूसरी रैंक लाने वाले को 75000 कैश और एक लैपटॉप और तीसरी रैंक लाने वाले छात्रों को ₹50000 कैश और एक लैपटॉप पुरस्कार के रूप में मिलेगा। बिहार स्कूल एग्जामिनेशन बोर्ड के अध्यक्ष आनंद किशोर ने बताया कि साल 2024 का रिजल्ट पिछले 6 साल में सबसे बेहतर रहा है जो कि 82.91% है।

साल	परीक्षा में शामिल छात्र	परीक्षा में पास छात्र	पास%
2024	16,94,781	13,79,842	82.92%
2023	16,10,657	13,05,203	81.04%
2022	16,11,099	12,86,971	79.88%
2021	16,54,171	12,93,054	78.17%
2020	14,94,071	12,04,030	80.59%
2019।	16,60,09	13,40,610	80.73

बताते चलें कि बिहार बोर्ड ने परीक्षा की पवित्रता को बनाए रखते हुए निष्पक्ष परीक्षा आयोजित की है। इतना ही नहीं, देश में अन्य राज्यों में परीक्षा शुरू होने से पहले ही बोर्ड परीक्षा परिणाम जारी करने वाला देश का पहला बोर्ड बन गया है।

2024 मैट्रिक परीक्षा में 82.91% परीक्षार्थी सफल हुए हैं जो अब तक बिहार बोर्ड के इतिहास में सबसे बेहतर परिणाइस बार मैट्रिक परीक्षा में 82.91% परीक्षार्थी सफल हुए हैं जो अब तक बिहार बोर्ड के इतिहास में सबसे बेहतर परिणाम है। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष आनंद किशोर ने बताया कि विद्यालयों में शिक्षकों की कमी थी। सरकार ने बीपीएससी के माध्यम से शिक्षकों की बहाली करके काफी हद तक दूर कर ली है। सभी विद्यालयों में सभी विषयों के शिक्षक उपलब्ध हैं जो बच्चों को बेहतर शिक्षा दे रहे हैं। इसके अलावा पिछले सत्र से विद्यालय में मासिक टेस्ट का आयोजन शुरू किया गया। मासिक टेस्ट के बाद उत्तर पुस्तिका बच्चों को दी गयी जिससे बच्चों को अपना मूल्यांकन करने में सहूलियत हुई। वह तैयारी कर पाए कि कहां कमजोर हैं और कहां उन्हें काम करने की जरूरत है। कमजोर विद्यार्थियों के लिए 4:00 बजे के बाद विशेष कक्षा का प्रावधान किया गया। विशेष कक्षा में पढ़ाई में कमजोर बच्चों को शिक्षकों ने गाइड किया। शिक्षक कमजोर छात्रों पर काम कर रहे हैं जिससे बच्चों का शैक्षिक कौशल बढ़ रहा है। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष आनंद किशोर ने बताया कि टॉप टेन में कुल 51 विद्यार्थी हैं जिनमें 28 छात्र और 23 छात्राएं हैं। मैट्रिक परीक्षा में छात्राओं के सफलता का प्रतिशत भी बढ़ा है और काफी संख्या में छात्राएं अब मैट्रिक परीक्षा में शामिल भी हो रही हैं, जो प्रदेश के विकास की दिशा में एक बेहतरीन कदम है।

कमजोर विद्यार्थियों के लिए 4:00 बजे के बाद विशेष कक्षा का प्रावधान किया गया। विशेष कक्षा में पढ़ाई में कमजोर बच्चों को शिक्षकों ने गाइड किया। शिक्षकों ने उन पर काम किया जिससे बच्चों का शैक्षिक कौशल बढ़ा। आनंद किशोर ने बताया कि टॉप टेन में कुल 51 विद्यार्थी हैं जिनमें 28 छात्र और 23 छात्राएं हैं। मैट्रिक परीक्षा में छात्राओं के सफलता का प्रतिशत भी बढ़ा है। काफी संख्या में छात्राएं अब मैट्रिक परीक्षा में शामिल भी हो रही हैं, जो प्रदेश के विकास की दिशा में एक बेहतरीन कदम है।

सरकारें चाहें तो नशे के कारोबार पर लग सकता है शिकंजा ?

क्या कारण है कांग्रेस की मंद होती रोशनी के

देश की सबसे पुरानी एवं मजबूत कांग्रेस पार्टी बिखर चुकी है, पार्टी के कद्दावर, निष्ठाशील एवं मजबूत जमीनी नेता पार्टी छोड़कर अपनी सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी पार्टी भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो रहे हैं, वह भी तब जब लोकसभा चुनाव सन्निकट है। कांग्रेस नेताओं का यह दलबदल आश्चर्य की बात हैं, पार्टी छोड़ने का जैसा सिलसिला चल रहा है, वह देश के इस सबसे पुराने दल की दयनीय दशा और स्याह भविष्य को ही रेखांकित करता है। हालांकि भाजपा और कुछ अन्य दलों के चंद नेता कांग्रेस की शरण में भी गए हैं, लेकिन इसकी तुलना में उसके नेताओं के पार्टी छोड़ने की संख्या कहीं अधिक है। प्रश्न है एक लोकतांत्रिक संगठन की यह दुर्दशा एवं रसातल में जाने की स्थितियां क्यों बनी? इसके कारणों की समीक्षा एवं आत्म-मंथन जरूरी है। कांग्रेस पार्टी लगातार न केवल हार रही है, बल्कि टूट एवं बिखर रही है, जनाधार कमजोर हो रहा है, इन बड़े कारणों के बावजूद पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने न इसकी समीक्षा की, न विश्लेषण किया। कांग्रेस पर वंशवाद एवं पुत्रमोह का ठप्पा लगा हुआ है। पार्टी में आंतरिक प्रजातंत्र नहीं है। शीर्ष नेतृत्व निर्णय लेने में अक्षम है। बहुसंख्यकों के कल्याण की कोई नीति नहीं है। तुष्टीकरण नीति भी उसके लिए घातक साबित हो रही है। इन बड़े कारणों के बावजूद पार्टी में सन्नाटा पसरे होने के कारण ही अनेक जिम्मेदार एवं कर्णधार नेता ही पार्टी छोड़कर जा रहे हैं या चले गये हैं। आज का कांग्रेसी शीर्ष नेतृत्व साम्प्रदायिक, असामाजिक, स्वार्थी, चाटुकारी एवं देश-विरोधी तत्वों के साथ इस तरह ताना-बाना हो गया है कि उससे निकलना मुश्किल हो गया है। सांप-छछूंदर की स्थिति है। न निकलते बनता है और न उगलते। कांग्रेस नेतृत्व सत्ता प्राप्ति की खुशफहमी और खोने के खतरे की फोबिया से ग्रस्त है।

कांग्रेस के नेताओं के कांग्रेस छोड़ने से पार्टी नेतृत्व को हैरान-परेशान होना चाहिए, लेकिन शायद ही ऐसा हो, क्योंकि राहुल गांधी आम तौर पर ऐसे नेताओं को डरपोक या अवसरवादी करार देकर कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। वह और उनके करीबी यह देखने-समझने के लिए तैयार नहीं कि आखिर क्या कारण है कि एक के बाद एक नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते रवनीत सिंह का भाजपा में जाना इसलिए कांग्रेस के लिए एक बड़ा आघात है, क्योंकि पंजाब उन राज्यों में है, जहां कांग्रेस अपेक्षाकृत मजबूत दिखती है और भाजपा तीसरे-चौथे नंबर के दल के तौर पर देखी जाती है। बात पंजाब ही नहीं, महाराष्ट्र, हिमाचल एवं अन्य प्रांतों की भी ऐसी ही है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि कांग्रेस छोड़ने वालों में कई ऐसे नेता भी हैं, जो गांधी परिवार के करीबी माने जाते थे, जैसे अशोक चव्हाण, मिलिंद देवड़ा, सुरेश पचौरी। इसके पहले राहुल गांधी की युवा ब्रिगेड के सदस्य कहे जाने वाले अधिकांश नेता भी कांग्रेस से विदा ले चुके हैं। कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं में एक बड़ी संख्या उनकी है, जो अपना स्वतंत्र राजनीति वर्चस्व एवं पहचान रखते हैं, वे अपने जनाधार के लिए जाने जाते हैं। गांधी परिवार के करीबी एवं चाटुकार नेताओं में बहुत कम ऐसे हैं, जो अपने बलबूते चुनाव जीतने की क्षमता रखते हों।

प्रश्न है कि कांग्रेस की यह दशा क्यों बनी? देश की विविधता, स्वरूप और संस्कृति को बांधे रखकर चलने वाले अतीत के कांग्रेसी नेता, जिनकी मूर्तियों और चित्रों के सामने हम अपना सिर झुकाते हैं, पुष्प

अर्पित करते हैं- वे अज्ञानी नहीं थे। उन्होंने अपने खून-पसीने से भारत-माँ के चरण पखारे थे। आज उनकी राष्ट्रीय सोच एवं जनकल्याण की भावना को नकारा जा रहा है, उन्हें अदूरदर्शी कहा जा रहा है। कांग्रेस में धीरे-धीरे जमीनी धरातल पर कार्य करने वाले बड़ी सोच वाले कार्यकर्ता कम हो गए और नेताओं के चापलूस बढ़ गए। ये चापलूस ही आगे बढ़े और कांग्रेस की टूट का कारण बने हैं। वक्त यह सब कुछ देख रहा है और करारा थपड़ भी मार रहा है। कांग्रेस विश्वसनीय और नैतिक नहीं रही और सत्ता विश्वास एवं नैतिकता के बिना ठहरती नहीं। शेरनी के दूध के लिए सोने का पात्र चाहिए। कांग्रेस अपना राष्ट्रीय दायित्व एवं सांगठनिक जिम्मेदारी राजनीतिक कौशल एवं नैतिकतापूर्ण ढंग से नहीं निभा रही। अंधेरे को कोसने से बेहतर था कि कोई तो पार्टी में एक मोमबत्ती जलाता। रोशनी करने की ताकत निस्तेज होने का ही परिणाम है कि वक्त ने सीख दे दी। इसी का परिणाम है कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं की संख्या तेजी से बढ़ती चली जा रही है, उससे तो यह लगता है कि पार्टी छोड़ो जैसा कोई अभियान चल रहा है। राहुल गांधी भले ही यह दिखाएं कि कांग्रेस नेताओं के जाने से पार्टी की सेहत पर फर्क नहीं पड़ता, लेकिन सच तो यह है अब फर्क पड़ता दिख रहा है। आने वाले लोकसभा चुनाव के परिणाम इस फर्क को और अधिक स्पष्ट कर देंगे। कुछ नेता चुनाव लड़ने के इच्छुक नहीं और कुछ तो प्रत्याशी घोषित होने के बाद अपने कदम पीछे खींच चुके हैं। कांग्रेस भले ही यह दिखा रही हो कि वह भाजपा का मुकाबला करने मे समर्थ है, लेकिन यह किसी से छिपा नहीं कि वह अपने नेतृत्व वाले मोर्चे इंडिया महागठबंधन को वैसा आकार नहीं दे सकी, जिसकी आशा की जा रही थी। इसके लिए कांग्रेस अपने अलावा अन्य किसी को दोष नहीं दे सकती। कांग्रेस का क्षरण इसलिए शुभ संकेत नहीं, क्योंकि भाजपा के समक्ष वही सही मायने में एक राष्ट्रीय दल है। अन्य राष्ट्रीय दलों में कोई भी ऐसा नहीं, जिसकी जड़ें देश भर में हों। लोकतंत्र में एक मजबूत विपक्ष भी आवश्यक होता है, लेकिन सत्तापक्ष उसकी मजबूती की चिंता नहीं कर सकता।

कांग्रेस के नेताओं के कांग्रेस छोड़ने से पार्टी नेतृत्व को हैरान-परेशान होना चाहिए, लेकिन शायद ही ऐसा हो, क्योंकि राहुल गांधी आम तौर पर ऐसे नेताओं को डरपोक या अवसरवादी करार देकर कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। वह और उनके करीबी यह देखने-समझने के लिए तैयार नहीं कि आखिर क्या कारण है कि एक के बाद एक नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते रवनीत सिंह का भाजपा में जाना इसलिए कांग्रेस के लिए एक बड़ा आघात है, क्योंकि पंजाब उन राज्यों में है, जहां कांग्रेस अपेक्षाकृत मजबूत दिखती है और भाजपा तीसरे-चौथे नंबर के दल के तौर पर देखी जाती है। बात पंजाब ही नहीं, महाराष्ट्र, हिमाचल एवं अन्य प्रांतों की भी ऐसी ही है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि कांग्रेस छोड़ने वालों में कई ऐसे नेता भी हैं, जो गांधी परिवार के करीबी माने जाते थे, जैसे अशोक चव्हाण, मिलिंद देवड़ा, सुरेश पचौरी।

कांग्रेस पार्टी में शीर्ष नेतृत्व कमजोर हो गया है। वंशवाद, परिवारवाद के कारण कांग्रेस पार्टी दिनोंदिन डूबती जा रही है। पहले कांग्रेस नेताओं के लिए लोककल्याण पहली प्राथमिकता होती थी, लेकिन आज मोदी-विरोध उसकी प्राथमिकता है। मोदी-विरोध के नाम पर वह कभी-कभी राष्ट्र-विरोध करने लगती है, उनकी इस प्राथमिकता में बदलाव आने से भी पार्टी कमजोर हुई हैं। कांग्रेस अपनी तुष्टीकरण की नीति की वजह से भी कमजोर हो रही है। अगर इसमें बदलाव नहीं करती है, तो उसकी हालत बद से बदतर हो जाएगी। इस बात का समझना होगा कि कोई भी दल बहुसंख्यकों को नाराज करके देश पर राज नहीं कर सकता। राहुल गांधी क्या बोलते है, क्या सोचते है, कोई स्पष्ट सन्देश ही नहीं मिल पाता। कांग्रेस में कोई निर्णय ऐसा लिया जाता है, जो निर्णय होता ही नहीं। लोग समझते ही नहीं कि क्या कहा गया है। इसी कारण कई नेता नेपथ्य में चले गये हैं पर आभास यही दिला रहे हैं कि हम मंच पर हैं। कई मंच पर खड़े हैं पर लगता है उन्हें कोई प्रोम्प्ट कर रहा है। बात किसी की है, कह कोई रहा है। इससे तो कठपुतली अच्छी जो अपनी तरफ से कुछ नहीं कहती। जो करवाता है, वही करती है। कठपुतली के अलावा कुछ और होने का वह दावा भी नहीं करती। किसी परिवार में तो यह चल सकता है लेकिन एक राष्ट्रीय दल को ऐसे नहीं चलाया जा सकता। लम्हों की खता सदियों को भुगतनी पड़ती है। शीर्ष नेतृत्व की गलत सोच, गलत निर्णय, गलत प्रेरणा न केवल पार्टी को बल्कि राष्ट्र के ताने-बाने को उधेड़ देते हैं, ऐसा ही कांग्रेस में हो रहा है। समूचे देश में कांग्रेस के अपरिपक्व राजनीति एवं कुप्रबंधन के उदाहरण भरे पड़े हैं। ऐसी सूरत में सवाल उठता है कि 2019 में 52 सीट पर सिमट गई कांग्रेस क्या 2024 में हाफ सेंचुरी भी लगा पाएगी? ऐसा लगता है कि बीजेपी के कांग्रेस-मुक्त भारतअभियान में कांग्रेस की नीतियां एवं नेतृत्व मोह सहयोगी बन रहे हैं।

महिला मतदाता निर्णायक भूमिका मोदी और महिला सशक्तिकरण

2024 लोकसभा चुनाव सिर पर है। इस बार भी चुनाव में महिला मतदाता निर्णायक भूमिका में रहेंगी। इसलिए भारतीय जनता पार्टी विकास के मुद्दे के साथ- साथ महिला सशक्तिकरण को लेकर चुनाव प्रचार कर रही है। भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण आशा है कि उसे महिलाओं का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। इसके अनेक कारण हैं। वास्तव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने दस वर्ष के शासन काल में महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक उल्लेखनीय कार्य किए हैं। उन्होंने न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य किए, अपितु उनके मान- सम्मान को भी विशेष महत्त्व दिया। वे दावे से कहते हैं कि महिलाओं की सुरक्षा, सुविधा और सशक्तिकरण - ये मोदी की गारंटी है। उनका कहना है कि मोदी ने बहन- बेटियों को लोकसभा और विधानसभा में आरक्षण की गारंटी दी थी। वह पूर्ण हो चुकी है। मोदी ने मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुरीति से मुक्ति दिलाने की गारंटी भी दी थी। ये गारंटी भी मोदी ने पूर्ण की है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के महिला सशक्तिकरण के कार्यों में नारी शक्ति वंदन अधिनियम का नाम प्रमुख है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए सदैव से ही प्रतिबद्ध रही है। मोदी सरकार ने समय- समय पर दोहराया है कि उनकी सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। नारी शक्ति वंदन अधिनियम इसी प्रयास का ही परिणाम है। सितम्बर 2023 पारित यह विधेयक लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करता है। इसके पारित होने से महिलाओं की एक लम्बित मांग पूर्ण हुई है। इस विधेयक को लेकर विपक्षी दलों ने केवल टाल-मटोल का व्यवहार ही किया था। उन्होंने इस विधेयक को लेकर केवल महिलाओं के वोट हथियाने का ही प्रपंच रचा। उन्होंने इस संबंध में कभी गंभीरता से कार्य नहीं किया। किन्तु प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस विधेयक के संबंध में पूर्ण निष्ठा एवं गंभीरता से कार्य किया तथा इसे पारित करवाया। इसी प्रकार बिना किसी भेदभाव के मुस्लिम महिलाओं के हित में भी निर्णय लेते हुए उन्हें तीन तलाक की कुरीति से मुक्ति दिलवाई। इस पर भी उन्हें निशाना बनाया गया, परन्तु उन्होंने किसी की नहीं सुनी और मुस्लिम बहनों के हित में निर्णय लिया। इन सब निर्णयों के कारण ही महिलाओं में मोदी सरकार विशेषकर श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति विश्वास बढ़ा है। इसीलिए उन्हें महिलाओं का भरपूर जनसमर्थन प्राप्त होता रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए नारी शक्ति को अधिक से अधिक अवसर देना अत्यंत आवश्यक है। भाजपा सरकार के प्रयास से आज देश के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के लिए नए रास्ते बन रहे हैं। मोदी सरकार महिलाओं के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा एवं रोजगार आदि से संबंधित अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। महिलाओं को खुले में शौच से मुक्ति दिलाने के लिए युद्धस्तर पर शौचालयों का निर्माण करवाया जा रहा है। इससे एक ओर महिलाओं को मान मिल रहा है, दूसरी ओर उन्हें अपराधों से भी मुक्ति मिल रही है। महिलाएं शौच के लिए अंधेरे में ही निर्जन स्थानों पर जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में वे अपराधी तत्वों का शिकार बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त समय पर नित्य कर्म से न निपटने के कारण वे अनेक रोगों की भी चपेट में आ जाती हैं। किन्तु शौचालयों के निर्माण से उन्हें इस समस्या से छुटकारा मिल रहा है। आवास एवं शहरी कार्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी के अनुसार देश में विगत नौ वर्षों में 12 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं, जिससे देश को खुले

में शौच के अभिशाप से मुक्ति मिली है।

वास्तव में मोदी सरकार महिलाओं के हित के अनेक कार्य कर रही है। वह उनकी प्रत्येक छोटी से छोटी बात का भी ध्यान रख रही है। महिलाओं का स्वप्न होता है कि उनका भी अपना निजी मकान हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार निर्धन लोगों को पक्के आवास उपलब्ध करवा रही है। इनके पंजीकरण में महिलाओं का नाम सम्मिलित किया जा रहा है। इसके कारण अब महिलाएं भी अपने घर की स्वामिनी बन रही हैं। उनका स्वयं के घर का स्वप्न पूर्ण हो रहा है। इतना ही नहीं मोदी सरकार महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी तीव्र गति से कार्य कर रही है। महिलाओं को रोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षित महिलाओं को स्वरोजगार अर्जित करने के लिए ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। इससे वे कुटीर उद्योग चालू कर रही हैं। जो महिलाएं सिलाई का कार्य जानती हैं तथा उनके पास सिलाई मशीन क्रय करने के लिए धन नहीं हैं उन्हें निशुल्क सिलाई मशीनें वितरित की जा रही हैं। ये महिलाएं अब घर पर ही सिलाई का कार्य करके धन अर्जित कर रही हैं। आत्मनिर्भरता के कारण उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। अब वे अपनी इच्छा से अपना धन व्यय कर रही हैं। उनके जीवन यापन की शैली में परिवर्तन आया है। यह सब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की महिला हितैषी योजनाओं का ही परिणाम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि भारत की नारी शक्ति, विकसित भारत की एक सशक्त स्तंभ है। भारत की नारी शक्ति की आर्थिक शक्ति बढ़े, इसके लिए बीते दस वर्षों में बीजेपी सरकार ने निरंतर कार्य किया है। जनधन योजना के अंतर्गत करोड़ों बहनों के बैंक खाते खोले हैं। इन दस वर्षों में देश में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की संख्या दस करोड़ को पार कर गई है। देश में दस वर्षों में बहनों के इन समूहों को स्वरोजगार के लिए आठ लाख करोड़ रुपए की सहायता बैंकों से दिलवाई गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि भारत की नारी शक्ति, विकसित भारत की एक सशक्त स्तंभ है। भारत की नारी शक्ति की आर्थिक शक्ति बढ़े, इसके लिए बीते दस वर्षों में बीजेपी सरकार ने निरंतर कार्य किया है। जनधन योजना के अंतर्गत करोड़ों बहनों के बैंक खाते खोले हैं। इन दस वर्षों में देश में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की संख्या दस करोड़ को पार कर गई है। देश में दस वर्षों में बहनों के इन समूहों को स्वरोजगार के लिए आठ लाख करोड़ रुपए की सहायता बैंकों से दिलवाई गई है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में कहा था कि आज देश में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें देश की नारी- शक्ति पीछे रह गई हो। एक और क्षेत्र, जहां महिलाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन किया है, वह है- प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण और स्वच्छता। केमिकल से हमारी धरती माँ को जो कष्ट हो रहा है, जो पीड़ा हो रही है, जो दर्द हो रहा है - हमारी धरती माँ को बचाने में देश की मातृशक्ति बड़ी भूमिका निभा रही है। देश के कोने- कोने में महिलाएं अब प्राकृतिक खेती को विस्तार दे रही हैं। आज अगर देश में जल जीवन मिशनके अंतर्गत इतना काम हो रहा है तो इसके पीछे पानी समितियों की बहुत बड़ी भूमिका है। इस पानी समिति का नेतृत्व महिलाओं के ही पास है। इसके अलावा भी बहनें-बेटियां, जल संरक्षण के लिए चौतरफा प्रयास कर रही हैं।

मोदी सरकार द्वारा महिलाओं की सुरक्षा, सुविधा एवं सशक्तिकरण के लिए किए गये कार्यों की सफलता ही है कि आज महिलाएं आत्मविश्वास के साथ निर्भीक होकर घर से बाहर जाकर कार्य कर रही हैं। कहा जाता है कि महिला मतदाता साइलेंट वोटर होती हैं। महिला मतदाता जिस दल को अपना समर्थन देती हैं, उसे ही बहुमत प्राप्त होता है तथा सरकार उसी दल की बनती है। विशेष बात है कि भारतीय जनता पार्टी एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध विरोधियों द्वारा दुष्प्रचार करने के पश्चात भी मुस्लिम महिलाएं इन्हें अपना भरपूर समर्थन दे रही हैं। इस बार यह देखना अत्यंत रोचक होगा कि महिलाएं उन्हें कितना समर्थन देती हैं।

उनका कहना है कि उन्हें उन निर्णयों पर गर्व है जिन्होंने महिला सशक्तिकरण को और मजबूत किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि उनका तृतीय कार्यकाल भी विकास एवं महिला सशक्तिकरण को समर्पित रहेगा।

दिल्ली के मुख्यमंत्री जेल में - पार्टी की अनर्गल व्यानवाजी से खराब हो रही है जाँच एजेंसियों और देश की छवि

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

देश में विपक्षी पार्टियाँ, सरकार के बदलाव की, बयार का सपना देखने वाले अब चिंतित और चिंतनशील दिखने लगे हैं। देश में लोकसभा चुनाव का शंखनाद हो चुका है, नामांकन प्रक्रिया शुरू हो चुका है और सभी पार्टियाँ अपनी अपनी पार्टियों का चुनाव प्रचार करने में लग गए है। एक लंबे अंतराल के साथ चुनाव सात चरणों में पूरा होगा। अधिकांश विपक्षी पार्टियाँ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ी हुई प्रतीत होती है। कुछ दिग्गज नेता या तो जेल जा चुके है, या जमानत पर हैं या जेल जाने की तैयारी में है। वर्तमान समय में देखा जाय तो अधिकांश राजनीतिक पार्टियों को राजनीतिक पार्टियाँ मानना और कहना भी गुनाह लगता है, क्योंकि उन्हें तो ्रपारिवारिक्र पार्टियाँ कहना ही ज्यादा उचित लगता है।

संविधान निमार्ताओं ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी की देश में ऐसी स्थिति आयेगी जहां मुख्यमंत्री के पद पर रहते हुए उन्हें गिरफ्तार करने की भी नौबत आयेगी। आज देश के समक्ष पहली बार मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी हुई है और यह मुख्यमंत्री जेल से सरकार चलाएंगे। जहां तक मैं समझता हूँ कि आजादी के बाद यह पहली बार ही हुआ है कि जब किसी मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया है। जबकि पहले यह होता था कि, जब मुख्यमंत्री पर आरोप लगते थे तो गिरफ्तारी से ठीक पहले मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे दे देते थे। ऐसे में उदाहरण के रूप में बिहार के लालू प्रसाद और झारखंड के हेमंत सोरेन का नाम है।

चारा घोटाले के मामले में 30 जुलाई,1997 को लालू यादव ने अदालत के सामने आत्मसमर्पण किया था, इससे पहले 25 जुलाई, 1997 को उन्होंने बिहार के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया था। मामले में रक्षा भूमि घोटाला मामले में ईडी ने 31 जनवरी 2024 को झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को उनके आवास पर जाकर पूछताछ की थी और हिरासत में लिया था। हेमंत सोरेन ने राजभवन जाकर अपनी इस्तीफा दिया था और चम्पई सोरेन के नेतृत्व में नयी सरकार बनाने का पत्र सौंपा था। आय से अधिक की संपत्ति अर्जित करने के मामले में तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता की भी गिरफ्तारी हुई थी। 7 दिसंबर, 1996 को जयललिता की गिरफ्तार हुई, जबकि 5 दिसंबर, 1996 तक ही जयललिता तमिलनाडु की मुख्यमंत्री रही थी। जमीन मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने 15 अक्तूबर, 2011 को लोकायुक्त अदालत में आत्मसमर्पण किया था। इससे पहले 31 जुलाई, 2011 को उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। अब देखा जाय तो दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का गिरफ्तारी की नौबत आने पर वे गिरफ्तारी से बचने के लिए कानूनी लड़ाई लड़नी चाही लेकिन हाईकोर्ट से राहत नहीं मिली। ऐसी स्थिति में अब प्रश्न उठता है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का जेल से सरकार चलाना, क्या संभव है? या सही होगा? जब कोई सरकारी सेवक जेल जाता है तो उसे 48 घंटे बाद निलंबित हो जाता है। तो ऐसी स्थिति में मुख्यमंत्री अपने पद पर कैसे बने रह सकता हैं? जबकि सर्वविदित है कि किसी भी राज्य की सरकार को सुचारू रूप से चलाने के लिए गिरफ्तारी की नौबत या जेल जाने के पहले मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना पड़ता है।

जहां तक जेल नियमों के समय में बताया जाता है कि किसी कैदी को सप्ताह में दो दिन ही परिजन से मिलने की छूट मिल सकती है और यह भी जेल अधीक्षक की अनुमति पर ही संभव होता है। जेल से कोई पत्र भी जेल अधीक्षक की अनुमति और माध्यम के बिना बाहर किसी को नहीं भेजा जा सकता है। वर्तमान स्थिति में दिल्ली के उप राज्यपाल के रुख पर ही अरविंद केजरीवाल का मुख्यमंत्री के पद पर बना रहना मुमकिन प्रतीत नहीं होता है।

संविधान के जानकार का माने तो कानून की नजर में गिरफ्तारी होना दोष सिद्धि नहीं माना जाता है। ऐसे में किसी मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के तुरंत बाद उनसे इस्तीफा नहीं लिया जा सकता है। जेल से सरकार चलाने के सवाल पर कानून के जानकार कहते हैं, जेल से सरकार चलाना जेल के नियमों पर काफी निर्भर करेगा। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर यह निर्भर कर रहा है कि वे संविधान और कानून की मयार्दा का ख्याल किस प्रकार रखते है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल देश के इतिहास में लंबे समय तक याद रखे जायेंगे। क्योंकि भविष्य में लोग यह कहेंगे कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के ऊपर आरोप लगने के बावजूद नैतिकता को ताक पर रखकर शासन करते रहे हैं। जबकि उन्हें चाहिए था कि संवैधानिक पद से इस्तीफा देकर संविधान की रक्षा करते हुए अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का मजबूती से सामना करना चाहिए।

सर्वविदित है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से पहले पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता, लालू प्रसाद, मधु कोड़ा, हेमंत सोरेन भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरने के बाद जेल जा चुके है, लेकिन जेल जाने से पहले सभी लोगों ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया था। इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल किसी भी तरह से कुर्सी पर बने रहना चाहते है। जबकि जेल से शासन करना हास्यास्पद प्रतीत होता है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल काफी जहीन नेता हैं क्योंकि वह देश की आईआरएस की प्रतियोगिता परीक्षा पास किए है। इसलिए वे कानूनी दाव- पेंच का लाभ उठाकर जेल जाने के बाद भी संवैधानिक पद पर बैठे हुए हैं। दिल्ली सरकार (मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मंत्रिमंडल) के मंत्रियों और प्रवक्ताओं के अनर्गल व्यानबाजी से जाँच एजेंसियों की छवि खराब तो हो ही रहा है। साथ ही देश की भी छवि खराब हो रहा है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल अपने कार्यकाल के दौरान पहलीवार 28 दिसम्बर 2013 से 14 फरवरी, 2014 तक 49 दिन दिल्ली के मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहे थे। उस समय केजरीवाल की पार्टी ने कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाया था। कांग्रेस के समर्थन वापस लेने के कारण मुख्यमंत्री का पद छोड़ना पड़ा था। अब इन्हें पद छोड़ने में कठिनाई हो रही है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। कहीं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तरह कुर्सी कुमार बनने की फिराक में तो नहीं है? जबकि नीतीश कुमार सरकार बनाने में माहिर खिलाड़ी है और उसमें अपने को मुख्यमंत्री बनाये रखते है। लेकिन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल आरोपों में घिरने के कारण आज जेल में है। अब देखना है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल किस प्रकार संविधान और कानून की मयार्दा का ख्याल रखते है।

नवरात्रि में नौ दिन माँ नवदुर्गा के नौ रूपों की पूजा होगी

आभा सिन्हा, पटना

नवरात्रि के नौ दिन मैं माँ नवदुर्गा के नौ रूपों की पूजा होता है, जिसमें प्रतिपदा को माँ शैलपुत्री, दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन माँ चंद्रघंटा, चौथे दिन माँ कुष्मांडा, पांचवे दिन माँ स्कंदमाता, छठे दिन माँ कात्यायनी, सातवें दिन माँ कालरात्रि, आठवें दिन माँ महागौरी और नौवें दिन माँ सिद्धिदात्री की अराधना की जाती है।

शैलपुत्री देवी दुर्गा के नौ रूप में पहले स्वरूप में जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम 'शैलपुत्री' है। नवरात्र-पूजन में प्रथम दिन इनकी पूजा और उपासना की जाती है। इस दिन योगी अपने मन को 'मूलाधार' चक्र में स्थित करते हैं और यहीं से उनकी उपासना और योग साधना का प्रारंभ होता है।

एक बार प्रजापति दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। इस यज्ञ में प्रजापति दक्ष ने सारे देवताओं को अपना-अपना यज्ञ-भाग प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन भगवान शंकर जी को आमंत्रित नहीं किया था। सती ने जब सुना कि उनके पिता एक अत्यंत विशाल यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं, तब वहाँ जाने के लिए उनका मन विकल हो उठा और उन्होंने अपनी यह इच्छा शंकर जी को बताई। सारी बातों पर विचार करने के बाद शंकर जी ने सती से कहा कि प्रजापति दक्ष किसी कारणवश हमसे रुष्ट हैं। अपने यज्ञ में उन्होंने सारे देवताओं को आमंत्रित किया है। उनके यज्ञ-भाग भी उन्हें समर्पित किए हैं, किन्तु हमें जान-बूझकर नहीं बुलाया है। कोई सूचना तक नहीं भेजी है। ऐसी स्थिति में तुम्हारा वहाँ जाना किसी प्रकार भी श्रेयस्कर नहीं होगा। शंकर जी के इस बात के बावजूद सती का पिता का यज्ञ देखने, वहाँ जाकर माता और बहनों से मिलने की, उनकी व्यग्रता कम नहीं हुई। उनका प्रबल आग्रह देखकर शंकर जी ने उन्हें वहाँ जाने की अनुमति दे दी। सती ने पिता के घर पहुँचकर देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेम के साथ बातचीत नहीं कर रहा है। सारे लोग मुँह फेरे हुए हैं। केवल उनकी माता ने स्नेह से उन्हें गले लगाया। बहनों की बातों में व्यंग्य और उपहास के भाव भरे हुए थे। परिजनों के इस व्यवहार से उनके मन को बहुत तकलीफ पहुँचा। उन्होंने यह भी देखा कि वहाँ चतुर्दिक भगवान शंकर जी के प्रति तिरस्कार का भाव भरा हुआ है। दक्ष ने उनके प्रति कुछ अपमानजनक वचन भी कहे। यह सब देखकर सती का हृदय क्षोभ, ग्लानि और क्रोध से भर उठा। उन्होंने सोचा भगवान शंकर जी की बात न मान, यहाँ आकर

मैंने बहुत बड़ी गलती की है। वे अपने पति भगवान शंकर जी के इस अपमान को सह न सकीं और उन्होंने अपने उस रूप को तत्क्षण वहीं योगाग्नि द्वारा जलाकर भस्म कर दिया। वज्रपात के समान इस दुःखद घटना को सुनकर शंकर जी ने क्रोध में अपने गणों को भेजकर दक्ष के उस यज्ञ का पूर्णतः विध्वंस करा दिया। सती ने योगाग्नि द्वारा अपने शरीर को भस्म कर, अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लिया। शैलराज की पुत्री होने के करण सती 'शैलपुत्री' नाम से विख्यात हुई। इसलिए इस रूप को प्रथम दिन माँ शैलपुत्री की पुजा होती है।

देवी पार्वती ने दक्ष पद्मावती के घर जन्म लिया था। इस रूप में देवी पार्वती एक महान सती थी और उनके अविवाहित रूप को दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की पुजा होती है। भगवान शिव से शादी करने के बाद देवी महागौरी ने आधे चंद्र के साथ अपने माथे को सजाना शुरू कर दिया था, जिसके कारण इस रूप को तीसरे दिन माँ चंद्रघंटा के रूप में पुजा होती है। देवी पार्वती सूर्य के केन्द्र के अन्दर रहने के लिए सिद्धिदात्री का रूप घारण की थी ताकि ब्रह्मण्ड को ऊर्जा मुक्त कर सकें। इसलिए इसी रूप को चौथे दिन माँ कुष्मांडा की पुजा होती है। माँ कुष्मांडा सूर्य के अंदर रहने की शक्ति और क्षमता रखती है इसलिए उनकी शरीर की चमक सूर्य के समान चमकदार है। माता पार्वती जब भगवान स्कंद, जिन्हें भगवान कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है, की माता बनी, तो इसी रूप को पांचवे दिन माँ स्कंदमाता की पुजा होती है। देवी पार्वती ने जब हिंसक रूप धारण कर योद्धा देवी के रूप में राक्षस महिषासुर को नष्ट की थी, तो माँ के इस रूप को छठे दिन माँ कात्यायनी की पुजा होती है। देवी पार्वती ने शुम्भ और निषुम्भ नामक राक्षसों को मारने के लिए बाहरी सुनहरी त्वचा को हटा कर उग्र और सबसे उग्र रूप धारण की तो इस रूप को सातवें दिन माँ कालरात्रि की पुजा होती है। हिन्दु पौराणिक कथाओं के अनुसार, सोलह वर्ष की आयु में देवी शैलपुत्री अत्यंत सुंदर थीं और उन्हें निष्पक्ष रूप से आशीर्वाद दिया गया था। अपने चरम निष्पक्ष रूप के कारण आठवें दिन माँ महागौरी की पुजा होती है। ब्रह्मांड की शुरूआत में भगवान रूद्र ने सृष्टि के लिए आदि-पराशक्ति की पूजा की थी। ऐसा माना जाता है कि देवी आदि-पराशक्ति का कोई रूप नहीं था। शक्ति की सर्वोच्च देवी आदि-पराशक्ति, भगवान शंकर के बाएं आधे भाग से सिद्धिदात्री के रूप में प्रकट हुई थी। इसलिए इसी रूप को नौवें दिन माँ सिद्धिदात्री की पुजा होती है।

नवरात्रि में पाठ का प्रारम्भ प्रार्थना से करना चाहिए। उसके बाद दुर्गा सप्तशती किताब से सप्तश्लोकी दुर्गा, उसके बाद श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम, दुर्गा द्वात्रि शतनाम माला, देव्याः कवचम्, अर्गला स्तोत्रम, किलकम, अथ तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम, श्री देव्यर्थ शीर्षम का पाठ करने के बाद नवार्ण मंत्र का 108 बार यानि एक माला जप करने के उपरांत दुर्गा सप्तशती का एक-एक सम्पूर्ण पाठ करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति से यह सम्भव नही तो निम्न प्रकार भी पाठ कर सकते है।

नवरात्रि में पाठ का प्रारम्भ प्रार्थना से करना चाहिए। उसके बाद दुर्गा सप्तशती किताब से सप्तश्लोकी दुर्गा, उसके बाद श्री दुर्गाष्टेत्तर शतनाम स्तोत्रम, दुर्गा द्वात्रि शतनाम माला, देव्याः कवचम्, अर्गला स्तोत्रम, किलकम, अथ तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम, श्री देव्यर्थ शीर्षम का पाठ करने के बाद नवार्ण मंत्र का 108 बार यानि एक माला जप करने के उपरांत- पहला दिन - प्रथम अध्याय, दूसरा दिन - दूसरा, तीसरा और चौथा अध्याय, तीसरा दिन - पाँचवाँ अध्याय, चौथा दिन - छठा और सातवां अध्याय, पाँचवा दिन - आठवां और नौवां अध्याय, छठा दिन - दसवां और ग्यारहवां अध्याय, सातवाँ दिन - बारहवां अध्याय, आठवां दिन - तेरहवां अध्याय, नौवाँ दिन - प्रधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य एवं मूर्ति रहस्य।

नवरात्रि में भोजन के रूप में केवल गंगा जल और दूध का सेवन करना अति उत्तम माना जाता है, कागजी नींबू का भी प्रयोग किया जा सकता है। फलाहार पर रहना भी उत्तम माना जाता है। यदि फलाहार पर रहने में कठिनाई हो तो एक शाम अरवा भोजन में अरवा चावल, सेंधा नमक, चने की दाल, और घी से बनी सब्जी का उपयोग किया जाता है।

महिला विकास मंच की संरक्षक व संस्थापक वीणा मानवी ने मनाया अपना जन्मदिन, और की गरीब कैंसर पीड़ित लड़की की आर्थिक मदद

राकेश कुमार

महिला विकास मंच की संरक्षक व संस्थापक वीणा मानवी ने होली के बसिऔरा के दिन हाजीपुर में धूमधाम से अपना जन्मदिन मनाया। वीणा मानवी के जन्मदिन के अवसर पर मकान बिल्डर्स के पी के चौधरी और हाजीपुर के कई गणमान्य लोगो के साथ जाने माने यूट्यूबर मनीष कश्यप भी उपस्थित थे। सभी आए हुए अतिथियों के साथ सन ऑफ बिहार कहे जाने वाले मनीष कश्यप भी बेतिया से चलकर हाजिपुर आए और वीणा मानवी को जन्मदिन की बधाई दी। इस अवसर पर महिला विकास मंच के सदस्यों ने वीणा मानवी से केक कटवाया और जमकर मस्ती की। आपको बता दे की जब भी किसी पुरुष या किसी महिला के साथ अत्याचार होता है तब महिला विकास मंच की संरक्षक वीणा मानवी हमेशा आवाज उठाती है। इस मौके पर उन्‍ होंने अपने बेटे की झलक भी फैंस को दिखाई। महिला विकास मंच की संरक्षक व

संस्थापक वीणा मानवी ने अपने जन्मदिन के अवसर पर हाजीपुर, वैशाली की एक गरीब कैंसर पीड़ित लड़की के कैंसर के बेहतर इलाज और कीमोथेरेपी के लिए आर्थिक मदद की ताकि लड़की का बेहतर ढंग से इलाज हो सके। बताते चले की महिला विकास मंच की संरक्षक वीना मानवी ने नेकी की मिसाल पेश करते हुए आर्थिक मदद की जिससे बच्ची का सफल कीमोथेरेपी मुंबई में हो रहा है और कुछ दिनों में बेहतर इलाज के बाद अपने घर लौट जायेगी। महिला विकास मंच की संरक्षक और संस्थापक वीणा मानवी बताया कि वैशाली जिले के हाजीपुर की रहने वाली लड़की के पिता दिहाड़ी का काम करते है और लड़की का भाई गाड़ी का ड्राइवर है। स्थिति ऐसी हो गई थी की अपनी बहन के कैंसर इलाज में भाई अपनी इनोवा कार बेचने वाला था लेकिन महिला विकास मंच की तरफ से लड़की के कैंसर के इलाज के लिए आर्थिक मदद की गई और महिला विकास मंच का ये प्रयास लगातार जारी रहेगा। महिला विकास मंच की संस्थापक वीणा मानवी के जन्मदिन के अवसर पर और कैंसर पीड़ित लड़की के आर्थिक मदद में चेक देते समय महिला विकास मंच संरक्षक और संस्थापक वीणा मानवी के साथ महिला विकास मंच की संस्थापक अरुणिमा और अन्य कई लोग मौजूद थे।

महिला विकास मंच की संरक्षक वीना मानवी ने नेकी की मिसाल पेश करते हुए आर्थिक मदद की जिससे बच्ची का सफल कीमोथेरेपी मुंबई में हो रहा है और कुछ दिनों में बेहतर इलाज के बाद अपने घर लौट जायेगी। महिला विकास मंच की संरक्षक और संस्थापक वीणा मानवी बताया कि वैशाली जिले के हाजीपुर की रहने वाली लड़की के पिता दिहाड़ी का काम करते है और लड़की का भाई गाड़ी का ड्राइवर है।

फोर्ड हॉस्पिटल की अकाउंटेंट प्रीति कुमार को पत्रिका भेंट करते विशेष संवाददाता राकेश कुमार

आखिर वकीलों ने वकीलों के खिलाफ चिट्ठी क्यों लिखी?

न्यायिक बिरादरी में गलत को सही ठहराने के लिये एक-दूसरे के पैरों के नीचे से फट्टा खींचने की कोशिशें अक्सर होती रही है। भले ही इससे देश कमजोर हो, राष्ट्रीय मूल्यों पर आघात लगता हो। लोकतंत्र के चार स्तंभों में महत्वपूर्ण इस न्यायिक बिरादरी ने राजनीतिक अपराधियों, घोटालों और भ्रष्टाचार के दोषियों को बचाने के लिये शीर्ष वकीलों का एक समूह सक्रिय है, यह हमारी न्याय व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा है, जो चिन्ता का बड़ा कारण है। वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा सहित पूरे भारत से 600 से अधिक वकीलों ने प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ को पत्र लिखकर इन लगातार बढ़ रही राजनीतिक अपराधियों को बचाने की स्थितियों पर चिंता जताई गई है, निश्चित ही इन वकीलों का यह प्रयास सराहनीय एवं राष्ट्रीयता से प्रेरित है। न्यायिक प्रक्रिया में हेरफेर करने, अदालती फैसलों को प्रभावित करने और निराधार आरोपों और राजनीतिक एजेंडे के साथ न्यायपालिका की प्रतिष्ठा धूमिल करने के प्रयास करने वाले निहित स्वार्थी समूहकी निंदा व्यापक स्तर पर होनी ही चाहिए। एक प्रश्न यह भी है कि आखिर वकीलों को वकीलों के खिलाफ चिट्ठी क्यों लिखनी पड़ी?

न्यायपालिका को प्रभावित करने की इन घातक एवं अराष्ट्रीय कोशिशों के खिलाफ 600 वकीलों की चिन्ता गैरवाजिब नहीं है। वकीलों की यह जागरूकता न्याय-प्रक्रिया की प्रतिष्ठा एवं निष्पक्षता के लिये जरूरी हो गयी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वकीलों के इस सार्थक एवं प्रासंगिक प्रयास की सराहना की है। उन्होंने कहा कि दूसरों को डराना और धमकाना पुरानी कांग्रेस संस्कृति है। प्रधानमंत्री ने कहा, पांच दशक पहले ही उन्होंने प्रतिबद्ध न्यायपालिका का आान किया था-वे बेशर्मी से अपने स्वार्थों के लिए दूसरों से प्रतिबद्धता चाहते हैं लेकिन राष्ट्र के प्रति किसी भी प्रतिबद्धता से बचते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि 140 करोड़ भारतीय उन्हें अस्वीकार कर रहे हैं।हमारे राष्ट्र की न्यायिक बिरादरी का यही पवित्र दायित्व है तथा सभी वकील भगवान् और आत्मा की साक्षी से इस दायित्व को निष्ठा व ईमानदारी से निभाने की शपथ लेते हैं। लेकिन अभी कुछ वर्षों से देख रहे हैं कि हमारे वकीलां का एक खास वर्ग भारतीय न्याय-प्रक्रिया की पवित्रता और गरिमा को अनदेखी किये जा रहा है। चिंता का बड़ा कारण यह है कि यह समूह अपने पक्ष में ऐसे दबाव बना रहा है, जिससे न्यायपालिका की अखंडता के लिए खतरा पैदा हो रहा है। लेकिन पिछले दो दशक से न्यायमूर्तियों में ज्यादा जिम्मेदारी, सजगता व संवेदना देखने को मिली है और उन्होंने देशहित में किसी भी आर्थिक या राजनीतिक दबाव में झुकना स्वीकार नहीं किया है।

आजादी के बाद से हमारे देश में एक खास किस्म का वकीली समूह विकसित हुआ है, जिन्हें सत्ताधारी पार्टियों का संरक्षण एवं प्रोत्साहन मिलता रहा है, वे अपराधों पर परदा डालने एवं खुंखार अपराधियों एवं संगीन आरोपों से घिरे राजनीतिक अपराधियों को बचाने में सिद्धहस्त होकर मोटी कमाई के साथ राजनीतिक पदों पर आसीन होते रहे हैं। बड़े लोगों एवं राजनेताओं के मामलों में अक्सर ऐसे बड़े वकील ही सामने आते हैं और वकीलों के बीच आय की असमानता से भी यही पता चलता है कि राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सक्षम लोग न्याय पाने में आम लोगों से ज्यादा संभावना वाले होते रहे हैं। आम जनता के लिये महंगी होती कानून व्यवस्था एवं निष्पक्ष न्याय की नाउम्मीदी भी ऐसे ही स्वार्थी वकीलों से उपजी है।

इसी बड़ी विसंगति एवं विडम्बना ने राजनीति में अपराध को भी प्रोत्साहन दिया है। इससे वकीलों का पेशा विवादास्पद भी बना है एवं न्याय-प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिन्ह लगते रहे हैं।

प्रश्न है कि आखिर वकीलों को ऐसी चिट्ठी लिखने की जरूरत क्यों पड़ी। क्योंकि इन दिनों कुछ राजनेता कठघरे में खड़े हैं और उन्हें बचाने के लिए वकीलों का एक खास समूह सक्रिय है, जो सत्य को ढंकने की कुचेष्टा करते हुए राजनीतिक हित में तथाकथित अपराधियों को बचाने के लिये विभिन्न तरीकों से काम करता है। ऐसे स्वार्थी वकील एक खास अंदाज में कथित बेहतर अतीत और अदालतों के सुनहरे दौर की झूठी कहानियां गढ़ते हैं, इसे वर्तमान में होने वाली घटनाओं से तुलना करते हैं। ये और कुछ नहीं बल्कि जानबूझकर दिए गए बयान हैं, जो अदालत के फैसलों को प्रभावित करने और कुछ राजनीतिक लाभ के लिए अदालतों को शर्मिंदा करने के लिए दिए गए हैं। यह देखना परेशान करने वाला है कि कुछ वकील दिन में राजनेताओं का बचाव करते हैं और फिर रात में मीडिया के माध्यम से न्यायाधीशों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

ऐसे स्वार्थी वकीलों का यह कहना कि अतीत में अदालतों को प्रभावित करना आसान था, उन पर जनता के विश्वास को हिला देता है। इसीलिये वकीलों के दूसरे पक्ष को पत्र लिखने की जरूरत पड़ी, ऐसे पत्र लिखने का कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं, बल्कि नैतिक एवं राष्ट्रीय आग्रह है। इस पत्र में सुप्रीम कोर्ट से अनुरोध किया गया है कि वे इस तरह के हमलों से हमारी अदालतों को बचाने के लिए सख्त और ठोस कदम उठाएं। वकीलों ने चिंता जाहिर की कि विशेष ग्रुपअदालतों की कार्यवाही में बाधा डालने की कोशिश कर रहे हैं। खासकर उन मुद्दों पर बाधा डालने की कोशिश की जा रही है, जो मामले राजनेताओं और राजनीतिक दलों से जुड़े हैं।

इस तरह की रणनीति हमारी अदालतों को नुकसान पहुंचा रही हैं और हमारे लोकतांत्रिक ढांचे को खतरे में डालती हैं। वकीलों का आरोप है कि उनकी हरकतों से राष्ट्रीयता, विकास, विश्वास और सौहार्द का माहौल खराब हो रहा है, जो न्यायपालिका की कार्यप्रणाली की मूलभूत विशेषता है।

चिट्ठी में वकीलों ने न्यायपालिका के समर्थन में एकजुट, समानतापूर्ण, निष्पक्ष रुख अपनाने का आान किया है ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि न्यायपालिका लोकतंत्र का एक मजबूत स्तंभ बना रहे। निश्चित रूप से न्यायमूर्तियों को नामी वकीलों या रसूखदार आरोपियों के सामने समान रूप से बिना किसी राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह या दुराग्रह के व्यवहार करना चाहिए और हमारे न्यायमूर्ति ऐसा ही करते हैं। फिर भी कहीं शिकायत की गुंजाइश रह जाती है और कुछ वकीलों को मिलकर ऐसे पत्र लिखने की जरूरत पड़ती है तो यह देश की जागरूकता एवं देश के प्रति निष्ठा को ही दशार्ता है। ऐसे पत्रों की आलोचना नहीं की जा सकती, ऐसे पत्र तो राजनीति की दूषित हवाओं को नियंत्रित करने के औजार है।

चिट्ठी में वकीलों ने न्यायपालिका के समर्थन में एकजुट, समानतापूर्ण, निष्पक्ष रुख अपनाने का आान किया है ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि न्यायपालिका लोकतंत्र का एक मजबूत स्तंभ बना रहे। निश्चित रूप से न्यायमूर्तियों को नामी वकीलों या रसूखदार आरोपियों के सामने समान रूप से बिना किसी राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह या दुराग्रह के व्यवहार करना चाहिए और हमारे न्यायमूर्ति ऐसा ही करते हैं। फिर भी कहीं शिकायत की गुंजाइश रह जाती है और कुछ वकीलों को मिलकर ऐसे पत्र लिखने की जरूरत पड़ती है तो यह देश की जागरूकता एवं देश के प्रति निष्ठा को ही दर्शाता है।

ऐसे पत्र विशेष रूप से न्यायमूर्तियों से ज्यादा सजगता व संवेदना की मांग करते हैं। समाज के राष्ट्र के किसी भी हिस्से में कहीं भी मूल्यों एवं मानकों के विरुद्ध होता है तो यह सोचकर निरपेक्ष नहीं रहना चाहिए कि हमें क्या? गलत देखकर चुप रह जाना भी अपराध है। इसलिये बुराइयों एवं विसंगतियों से पलायन नहीं, उनका परिष्कार होना चाहिए। वकीलों की यह चिट्ठी ऐसे ही परिष्कार का द्योतक है जो लोकतंत्र के साथ-साथ संविधान को सुस्थापित बनाये रखने के लिये अपेक्षित है। वकीलों के चिट्ठी लिखने वाले समूह के खिलाफ वकीलों का दूसरा समूह सक्रिय हुआ है, उनका सक्रिय होना स्वाभाविक है क्योंकि उनकी मोटी कमाई के साथ गलत मनसूंबों पर पानी फिर गया है। वकीलों के दोनों समूहों के बीच परस्पर आरोप-प्रत्यारोप भी काफी गंभीर व दुखद हैं। चुनावी मौसम में यह एक ऐसा मुद्दा है, जिस पर आने वाले कुछ दिनों तक बहस जारी रह सकती है। मामला वाकई गंभीर है।

ध्यान रहे, 600 वकीलों के पत्र में बेंच फिक्सिंग के मनगढ़ंत सिद्धांत के बारे में भी चिंता जताई गई है, जिसके तहत न्यायिक पीठों की संरचना को प्रभावित करने और न्यायाधीशों की ईमानदारी पर सवाल उठाने का प्रयास शायद नया नहीं है। ऐसे में, यह जरूर कहना चाहिए कि देश में किसी भी स्तंभ या सांविधानिक संस्था की गरिमा धुंधलानी नहीं चाहिए। जनता को न्याय देने वाले मंचों पर अन्याय, स्वार्थ एवं आग्रहों के बादल नहीं मंडराने चाहिए। नया भारत एवं सशक्त भारत को निर्मित करते हुए संविधान को बनाए रखने के लिए काम करने वाले लोगों के रूप में, हमारी अदालतों के लिए खड़े होने एवं उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने के प्रयासों पर कड़ा पहरा देने का समय है।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर को साकार करने में सफल रहे रणदीप हुड्डा

स्वातंत्र्यवीर सावरकर पर रणदीप हुड्डा ने बेहतरीन फिल्म बनाई है। सच कहूं तो यह फिल्म से कहीं अधिक है। सिनेमा का पर्दा जब रोशन होता है तो आपको इतिहास के उस हिस्से में ले जाता है, जिसको साजिश के तहत अंधकार में रखा गया। भारत की स्वतंत्रता के लिए हमारे नायकों ने क्या कीमत चुकाई है, यह आपको फिल्म के पहले फ्रेम से लेकर आखिरी फ्रेम तक में दिखेगा। अच्छी बात यह है कि रणदीप हुड्डा ने उन सब प्रश्नों पर भी बेबाकी से बात की है, जिनको लेकर कम्युनिस्ट तानाशाह लेनिन-स्टालिन की औलादें भारत माता के सच्चे सपूत की छवि पर आघात करती हैं। कथित माफीनामे से लेकर 60 रुपए पेंशन तक, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर फिल्म में दिया गया है। वीर सावरकर जन्मजात देशभक्त थे। चाफेकर बंधुओं के बलिदान पर किशोरवय में ही वीर सावरकर ने अपनी कुलदेवी अष्टभुजा भवानी के सामने भारत की स्वतंत्रता का संकल्प लिया। अपने संकल्प को साकार करने के लिए किशोरवय में ही मित्र मेलाजैसा संगठन प्रारंभ किया। क्रांतिकारी संगठन अभिनव भारतकी नींव रखी। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। अंग्रेजों को उनकी ही भाषा में उत्तर देने के लिए लंदन जाकर वकालत की पढ़ाई की। हालांकि क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण अंग्रेजों ने उन्हें डिग्री नहीं दी। ब्रिटिश शासन के घर लंदनमें किस प्रकार वीर सावरकर ने अंग्रेजों को चुनौती दी, इसकी झलक भी फिल्म में दिखाई देती है। निःसंदेह, वीर सावरकर के महान व्यक्तित्व के संबंध में फिल्म न्याय करने में सफल हुई है।

एक और अच्छी बात निमार्ता-निर्देशक ने स्थापित की है कि वैचारिक या सैद्धांतिक मतभेद होने के बाद भी बड़े नेता एक-दूसरे का सम्मान करते थे। जो लोग यह स्थापित करने की कोशिश करते हैं कि वीर सावरकर महात्मा गांधी के विरोधी थे, उनको अवश्य ही यह पता होना चाहिए कि दोनों की सोच अवश्य भिन्न थी लेकिन दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं थे। महात्मा गांधी ने तो यहां स्वीकार किया कि वीर सावरकर ने मुझसे कहीं पहले ब्रिटिश शासन की बुराइयों को देख लिया था। गांधीजी ने सावरकर बंधुओं को भारत माता का सपूत भी कहा और कालापानी से उनकी मुक्ति के लिए आवाज भी उठाई। वीर सावरकर भी स्पष्ट कहते हैं कि वे गांधीजी के विरोधी नहीं, बल्कि उनकी अहिंसा की नीति के विरोधी हैं।

महात्मा गांधीजी ने अस्पृश्यता को समाप्त करने के जो प्रयत्न प्रारंभ किए, वैसे प्रयत्न प्रभावी ढंग से स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने भी किए। उस समय अछूत कहे जानेवाले बंधुओं को मंदिर में प्रवेश दिलाना, अछूत को पुजारी बनाना, सामूहिक सहभोज के आयोजन, जबरन या धूर्तता से मुस्लिम बनाए गए हिंदुओं की घर वापसी, अंधविश्वास को दूर करना और राष्ट्रीयता की भावना को पुष्ट करना, जैसे अनेक नवाचार वीर सावरकर ने कालापानी से बाहर आकर किए। इन सबकी झलक फिल्म में भी देखने को मिलती है। सरदार भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र

बोस, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, मदनलाल ढींगरा, लाला हरदयाल, मैडम भीखाजी कामा और श्यामजी कृष्ण वर्मा सहित अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के साथ संबंधों को भी फिल्म में दिखाया गया है।

कलाकारों ने अद्भुत काम किया है। एक-एक पात्र को जीवंत किया है। विशेषकर रणदीप हुड्डा ने स्वातंत्र्यवीर सावरकर को पर्दे पर साकार कर दिया। हुड्डा अपने अभिनय से वीर सावरकर के साथ एकाकार होते हुए दिखे। कालापानी के वेदना से भरे दृश्य हों या फिर अपने घर भाईयों के साथ आत्मीय पल, सबको बखूबी दिखाया गया है। कालापानी में जब वे अपने भाई बाबाराव सावरकर (गणेश सावरकर) से मिलते हैं, तब जो भाव-भंगिमा उनके चेहरे पर दिखती है, वह दर्शकों की आंखों में आसूं लाने में सक्षम है। वीर सावरकर के बड़े भाई की भूमिका में अमित सियाल का अभिनय बहुत प्रभावी रहा है।

फिल्म स्वातंत्र्यवीर सावरकरपहले दृश्य से लेकर आखिरी दृश्य तक दर्शकों को बांधकर रखती है। अनेक प्रश्नों के उत्तर देती है तो कई प्रश्न पैदा भी करती है। फिल्म के आखिर में वीर सावरकर कहते हैं- जब बापू पर दस दिन पहले भी हमला हुआ था तो सरकार ने उनकी सुरक्षा के बंदोबस्त क्यों नहीं किए? यह प्रश्न अक्सर मैं भी उठता हूं, लेकिन आज तक किसी ने इसका संतोषजनक उत्तर नहीं दिया है। वरिष्ठ पत्रकार प्रखर श्रीवास्तव की पुस्तक हे रामपढ़कर यह प्रश्न और गहरा हो जाता है।

फिल्म स्वातंत्र्यवीर सावरकरपहले दृश्य से लेकर आखिरी दृश्य तक दर्शकों को बांधकर रखती है। अनेक प्रश्नों के उत्तर देती है तो कई प्रश्न पैदा भी करती है। फिल्म के आखिर में वीर सावरकर कहते हैं- जब बापू पर दस दिन पहले भी हमला हुआ था तो सरकार ने उनकी सुरक्षा के बंदोबस्त क्यों नहीं किए? यह प्रश्न अक्सर मैं भी उठता हूं, लेकिन आज तक किसी ने इसका संतोषजनक उत्तर नहीं दिया है। वरिष्ठ पत्रकार प्रखर श्रीवास्तव की पुस्तक हे रामपढ़कर यह प्रश्न और गहरा हो जाता है। पुस्तक से स्मरण आता है कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर द्वारा लिखी पुस्तक 1857 का स्वातंत्र्य समरको क्रांतिकारी क्रांति की श्रीमद् भगवदगीता मानते थे। उस पुस्तक को नेताजी सुभाषचंद्र बोस से लेकर सरदार भगत सिंह तक ने प्रकाशित कराया और प्रसारित किया था।

पुस्तक से स्मरण आता है कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर द्वारा लिखी पुस्तक 1857 का स्वातंत्र्य समरको क्रांतिकारी क्रांति की श्रीमद् भगवदगीता मानते थे। उस पुस्तक को नेताजी सुभाषचंद्र बोस से लेकर सरदार भगत सिंह तक ने प्रकाशित कराया और प्रसारित किया था। स्मरण रहे कि सरदार भगत सिंह तो जेल में भी वीर सावरकर के साहित्य का न केवल अध्ययन कर रहे थे अपितु उनकी पुस्तकों से नोट्स भी ले रहे थे। इस संदर्भ में उनकी जेल डायरी पढ़नी चाहिए, जिसमें वीर सावरकर की हिंदू पदपदशाहीपुस्तक के नोट्स पढ़े जा सकते हैं। वीर सावरकर की यह पुस्तक छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वराज्य पर केंद्रित है।

बहरहाल, यह फिल्म अवश्य देखनी चाहिए। इतिहास के अनकहे किस्सों की जानकारी देने के साथ ही यह फिल्म इतिहास को देखने की नई दृष्टि भी देती है। फिल्म देखने के बाद आपको यह भी ध्यान आएगा कि क्यों सत्ता द्वारा पोषित साहित्यकारों एवं इतिहासकारों ने भारत के नायकों के साथ न्याय नहीं किया? किस हेतु से कुछ नायकों के संबंध में भ्रम खड़े करने के प्रयास किए गए। आईएमडी पर फिल्म को जबरदस्त सराहना मिली है। फिल्म समीक्षकों ने भी खुलकर स्वातंत्र्यवीर सावरकरकी प्रशंसा की है। फिल्म का निर्देशन पहले महेश मांजरेकर कर रहे थे, लेकिन रणदीप हुड्डा के साथ वैचारिक मतभेद के कारण मांजरेकर ने फिल्म निर्माण से अपने हाथ पीछे खींच लिए। यह भी कह सकते हैं कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर नाम की आग में झुलसने का डर उनके मन में बैठ गया होगा। बहरहाल, वीर सावरकर के व्यक्तित्व का इतना गहरा प्रभाव रणदीप हुड्डा पर पड़ा कि उन्होंने स्वयं ही निर्देशक की कमान संभालकर इतिहास रचने की ठान ली। रणदीप हुड्डा की निर्देशक के रूप में भले ही यह पहली फिल्म है, लेकिन जिस भव्य तरीके और गहराई के साथ उन्होंने स्वातंत्र्यवीर सावरकरको प्रस्तुत किया है, उसके लिए उनकी जितनी सराहना की जाए कम है।

नकली दवाओं से जीवन-रक्षा पर बढ़ते खतरे

दवाओं में मिलावट एवं नकली दवाओं का व्यापार ऐसा कुत्सित एवं अमानवीय कृत है जिससे मानव जीवन खतरे में हैं। विडम्बना है कि दवा बनाने वाली कंपनियों के लिए गुणवत्ता नियंत्रण का कोई नियम नहीं है और स्वयं कंपनियां ही अपनी दवाओं की गुणवत्ता का सत्यापन करती हैं। यह ठीक नहीं और ऐसे समय तो बिल्कुल भी नहीं, जब दवाओं की गुणवत्ता को लेकर दुनिया भर में जागरूकता बढ़ रही है। चूंकि भारत एक बड़ा दवा निर्यातक देश है और उसे विश्व का औषधि कारखाना कहा जाता है, दुनियाभर में भारत की दवाओं का निर्यात होता है, ऐसे समय में बार-बार नकली दवाओं का भंडाफोड़ होना या कैंसर जैसी असाध्य बीमारी की नकली दवाओं का व्यापार करने वालो का पदार्पाश होना, न केवल चिन्ता का विषय है, बल्कि एक जघन्य अपराध है। यह भारत की साख को भी आहत करता है। इसलिए सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह दवा कंपनियों के लिए क्वालिटी कंट्रोल का कोई भरोसेमंद नियम बनाए एवं नकली दवाओं का व्यापार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें।

कुछ दिन पहले ही कैंसर जैसी असाध्य बीमारी की नकली एलोपैथिक दवाओं की फैक्टरियां गाजियाबाद से हैदराबाद तक पकड़ी गईं? हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने 22 से अधिक नकली या मिलावटी आयुर्वेदिक दवाओं की बिक्री पर रोक लगाई है। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने कैंसर से जुड़े नकली दवाओं के एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ किया है। सुप्रीम कोर्ट में स्वामी रामदेव और पतंजलि आयुर्वेद के प्रबंध निदेशक आचार्य बालकृष्ण के खिलाफ दायर भारतीय चिकित्सा संघ (आईएमए) की याचिका की सुनवाई करते हुए सख्त नाराजगी जाहिर की है। समय आ गया है, आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण से जुड़ी कंपनियों की दवा परीक्षण-प्रणाली की ठोस निगरानी सुनिश्चित की जाए। यह आवश्यक है कि दवा कंपनियों के लिए क्वालिटी कंट्रोल के भरोसेमंद एवं सख्त नियम बनाए जाये। इन नियमों के दायरे में निर्यात होने वाली दवाएं भी आनी चाहिए और देश में बिकने वाली दवाएं भी, क्योंकि जहां नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाएं निर्यात होने से भारत की प्रतिष्ठा धूमिल होती है, वहीं इनका उपयोग देश में होने से लोगों का जीवन खतरे में आ जाता है।

यह तय है कि हमारे देश में आयुर्वेद की बेहद समृद्ध चिकित्सा पद्धति है और करोड़ों लोग इस प्रणाली से लाभान्वित भी हुए हैं। इस बात से आधुनिक चिकित्सा पद्धति (एलोपैथी) या आईएमए का कोई झगड़ा या विरोध भी नहीं है, परेशानी प्रामाणिकता की कसौटी पर खरी आधुनिक चिकित्सा पद्धति को निराधार चुनौती देने और लोगों को गुमराह करने को लेकर है। इन दोनों पद्धतियों के पेशेवरों और दवाओं का अंतिम उद्देश्य मरीजों को स्वस्थ करना है। मगर दुर्योग से दोनों पद्धतियों में कुछ लोभी कारोबारी नकली दवाओं के जरिये बेबस लोगों की सेहत से खिलवाड़ करते हैं। जीवन रक्षक दवाइयों के मामलों में दवा बदलने का मौका नहीं होता है, यहां मिलावट आपको सीधा मौत देती है। दवा व्यवसाय में चलने वाली यह अनैतिकता एवं अप्रामाणिकता बेचैन करने वाली है।

मिलावट व्यवसाय की एक बड़ी विसंगति एवं त्रासदी है। दूध में जल, शुद्ध घी में वनस्पति घी अथवा चर्बी, महँगे और श्रेष्ठतर अन्नों में सस्ते और घटिया अन्नों आदि के मिश्रण को साधारणतः मिलावट या अपमिश्रण कहते हैं। किंतु मिश्रण के बिना भी शुद्ध खाद्य को विकृत अथवा हानिकर किया जा सकता है और उसके पौष्टिक मान-फूड वैल्यू को गिराया जा सकता है। दूध से मक्खन का कुछ अंश निकालकर उसे शुद्ध दूध के रूप में बेचना, अथवा एक बार प्रयुक्त चाय की साररहित पत्तियों को सुखाकर पुनः बेचना मिश्रणरहित अपद्रव्यीकरण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार बिना किसी मिलावट के घटिया वस्तु को शुद्ध एवं विशेष गुणकारी घोषित कर झूठे दावे सहित आकर्षक नाम देकर, लुभावने विज्ञापनों से जनता को ठगा जाना अपराध है। पतंजलि आयुर्वेद संस्थान ऐसा ही करते हुए मोटा मुनाफा कमाता रहा है। दरअसल, पतंजलि के भ्रामक विज्ञापनों का पूरा

मसला ही अपने आप में एक बड़ा मामला है, खासकर दवाओं के मामले में इसके परिणामों की प्रकृति इसे और गंभीर बना देती है। ऐसे में, अदालत ने केंद्र व राज्य सरकारों के रवैये पर भी गंभीर टिप्पणी की है, विडंबना यह है कि जिस आईएमए ने पतंजलि आयुर्वेद के भ्रामक विज्ञापन और इसके ऊंचे ओहदेदारों के बड़बोलेपन के खिलाफ अदालत की शरण ली है। लेकिन प्रश्न है कि आईएमए ऐसे कितने मामलों में ऐसी जागरूकता बरतती है। अदालत ने अपनी टिप्पणियों में एक बार फिर जता दिया है कि कोई कितना भी रसूखदार क्यों न हो, कानून की महिमा सबसे ऊपर है।

दवा व्यवसाय में एक से बढ़कर एक घातक एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति सामने आ रही है। अब आयुर्वेदिक औषधियों को तत्काल राहत देने वाली बनाने के लिए एलोपैथी दवाओं के रसायनों को अवैज्ञानिक तरीके से मिलाने का खतरनाक कारोबार चर्चा में है, जो गंभीर चिंता का विषय बन रहा है। मध्यप्रदेश में खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग ने राजधानी सहित आसपास के नगरों की दवा दुकानों पर छापा मारकर आठ करोड़ 23 लाख रुपये मूल्य की ऐसी आयुर्वेदिक दवाएं जब्त की हैं जिनके बारे में दावा किया जा रहा था कि इनमें रोगों से लड़ने की चमत्कारी शक्ति है। जांच में तथ्य सामने आये हैं कि आयुर्वेदिक दवा वताहारी वटी तथा चंदा वटी में एलोपैथी दवा डाइक्लोफेनिक व एसिक्लोफेनिक को मिलाकर अवैध फामूर्ला विकसित किया गया है जिसे दवा विक्रेता जादुई बताकर देश के विभिन्न हिस्सों में बेच रहे थे। उक्त दोनों रसायनों का उपयोग एलोपैथी में दर्द निवारक के रूप में किया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार इस फामूर्ले का तात्कालिक प्रभाव भले ही चमत्कारी लगे किंतु दूरगामी परिणाम घातक हैं। इसका यकृत, गुर्दा तथा पेट के अन्य अंगों पर स्थाई दुष्प्रभाव हो सकता है। पिछले दिनों विदेश व्यापार महानिदेशालय ने एक अधिसूचना जारी कर कहा कि एक जून से कफ सिरप निर्यातकों को विदेश भेजने के पहले अपने उत्पादों का निर्धारित सरकारी प्रयोगशालाओं में परीक्षण कराना आवश्यक होगा। लेकिन यह दवाओं की मिलावट एवं नकली दवाओं के उत्पाद पर नियंत्रण के लिये पर्याप्त नहीं है। यह ठीक है कि विदेश व्यापार महानिदेशालय ने कफ सिरप के मामले में एक आवश्यक कदम उठाया, लेकिन ऐसा कदम तो निर्यात होने वाली सभी दवाओं के मामले में उठाया जाना चाहिए। बात केवल निर्यात होने वाली दवाओं का ही नहीं है, बल्कि देश में उपयोग में आने वाली नकली एवं मिलावटी दवाओं का भी है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कुछ समय पहले एक भारतीय फार्मा कंपनी की ओर से अमेरिका भेजी गई आई ड्राप में खामी मिलने की बात सामने आई थी। प्रश्न यह है कि यह नया नियम केवल खांसी के सिरप पर ही क्यों लागू हो रहा है? क्या इसलिए कि पिछले वर्ष गांबिया और उज्बेकिस्तान में भारतीय दवा कंपनियों की ओर भेजे गए कफ सिरप में खामी पाई गई? विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारतीय कंपनियों की ओर से इन देशों में निर्यात किए गए कफ सिरप से कुछ बच्चों की मौत का भी दावा किया। यद्यपि इस दावे को भारत-सरकार ने चुनौती दी, लेकिन देश से निर्यात होने वाले कफ सिरप की गुणवत्ता को लेकर विश्व के कुछ देशों में संशय पैदा होना स्वाभाविक है और दुखद भी है। स्पष्ट है कि भारत को अपने दवा उद्योग की साख को बचाने के लिए हरसंभव जतन करने होंगे। जिस तरह विदेश व्यापार महानिदेशालय कफ सिरप के निर्यात के मामले में सक्रिय हुआ, उसी तरह औषधि महानियंत्रक को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि देश में बनने वाली दवाओं की गुणवत्ता को लेकर कहीं कोई सवाल न उठने पाए। मिलावटी दवाओं के कारोबार पर नकेल कसने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय ने देश में पहली बार बड़े पैमाने पर एक अभियान शुरू किया है, जल्द ही इसके नतीजे सामने आने की संभावना है। दवाओं की क्वालिटी को बरकरार रखने के लिए हाल ही में यूके के साथ स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक एमओयू भी साइन किया है।

मिलावट व्यवसाय की एक बड़ी विसंगति एवं त्रासदी है। दूध में जल, शुद्ध घी में वनस्पति घी अथवा चर्बी, महँगे और श्रेष्ठतर अन्नों में सस्ते और घटिया अन्नों आदि के मिश्रण को साधारणतः मिलावट या अपमिश्रण कहते हैं। किंतु मिश्रण के बिना भी शुद्ध खाद्य को विकृत अथवा हानिकर किया जा सकता है और उसके पौष्टिक मान-फूड वैल्यू को गिराया जा सकता है। दूध से मक्खन का कुछ अंश निकालकर उसे शुद्ध दूध के रूप में बेचना, अथवा एक बार प्रयुक्त चाय की साररहित पत्तियों को सुखाकर पुनः बेचना मिश्रणरहित अपद्रव्यीकरण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार बिना किसी मिलावट के घटिया वस्तु को शुद्ध एवं विशेष गुणकारी घोषित कर झूठे दावे सहित आकर्षक नाम देकर, लुभावने विज्ञापनों से जनता को ठगा जाना अपराध है।

शिव भस्म धारण से मिलता है कल्याण

शिव ही सर्वज्ञ, परिपूर्ण और अनंत शक्तियों को धारण किए हैं। जो मन, वचन, शरीर और धन से शिव भावना करके उनकी पूजा करते हैं, उन पर शिवजी की कृपा अवश्य होती है। शिवलिंग में शिव की प्रतिमा ने शिव भक्तजनों में शिव की भावना करके उनकी प्रसन्नता के लिए पूजा का विधान है जो शरीर, मन, वाणी और धन से करते हैं भगवान शिव की विशेष कृपा पाते है और शिवलोक में निवास का सौभाग्य प्राप्त करते है। जब आराधक को शिव साधना से तन्मात्राएं वश में हो जाती हैं, तब जीव जगदंबा सहित शिव का सामीप्य प्राप्त कर लेता है। प्रकृति, बुद्धि, त्रिगुणात्मक अहंकार और पांच तन्मात्राएं आदि आठ तत्वों के समूह से देह की उत्पत्ति हुई है, अर्थात पृथ्वी के इन आठ बंधनों के कारण ही आत्मा को जीव की संज्ञा मिली है जिसमें देह से कर्म होता है और फिर कर्म से नूतन देह की उत्पत्ति होती है। शरीर को स्थूल, सूक्ष्म और कारण के भेद ज्ञात होना चाहिए जिससे हम ओर आप अनभिज्ञ है।

सर्वज्ञता और तृप्ति शिव के ऐश्वर्य हैं। इन्हें पाकर मनुष्य की मुक्ति हो जाती है। इसलिए शिव की भक्ति करने वाले शिवक्रिया, शिव तप, शिव मंत्र-जाप, शिव ज्ञान और शिव ध्यान प्रतिदिन प्रातः से रात को सोते समय तक, जन्म से मृत्यु तक संपन्न करते हुए शिव को उपलब्?ध होते है। पंचाक्षर मंत्र को स्थूल लिंग कहा हैं। पृथ्वी पर पांच लिंग हैं, पहला स्वयंभू शिवलिंग, दूसरा बिंदुलिंग, तीसरा प्रतिष्ठित लिंग, चौथा चरलिंग, और पांचवा गुरुलिंगहै। देवर्षियों की तपस्या से संतुष्ट हो उनके समीप प्रकट होने के लिए पृथ्वी के अंतर्गत बीजरूप में व्याप्त हुए भगवान शिव वृक्षों के अंकुर की भांति भूमि को भेदकर स्वतः प्रकट होने के कारण ही इसका नाम स्वयंभूलिंगहै। इसकी आराधना करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। सोने-चांदी, भूमि, वेदी पर हाथ से प्रणव मंत्र लिखकर भगवान शिव की प्रतिष्ठा और आान करने के साथ सोलह उपचारों से उनकी पूजा की जाती है जिससे साधक को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

देवताओं और ऋषियों ने आत्मसिद्धि के लिए पौरुष लिंगकी स्थापना मंत्रों के उच्चारण द्वारा की है। यही प्रतिष्ठित लिंगकहलाता है। किसी ब्राह्मण अथवा राजा द्वारा मंत्र पूर्वक स्थापित किया गया लिंग भी प्रतिष्ठित लिंग कहलाता है, किंतु वह प्राकृत लिंगहै। शक्तिशाली और नित्य होने वाला पौरुष लिंगतथा दुर्बल और अनित्य होने वाला प्राकृत लिंगकहलाता है। लिंग, नाभि, जीभ, हृदय और मस्तक में विराजमान आध्यात्मिक लिंग को चरलिंगकहते हैं। पर्वत को पौरुष लिंगऔर भूतल को विद्वान प्राकृत लिंगमानते हैं। पौरुष लिंग समस्त ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला है। प्राकृत लिंग धन पॅदान करने वाला है। चरलिंगमें सबसे प्रथम रसलिंगब्राह्मणों को अभीष्ट वस्तु प्रदान करने वाला है। सुवर्ण लिंगवैश्यों को धन, बाणलिंगक्षत्रियों को राज्य, सुंदर लिंगशूद्रों को महाशुद्धि प्रदान करने वाला है। बचपन, जवानी और बुढ़ापे में स्फटिक शिवलिंग का पूजन स्त्रियों को समस्त भोग प्रदान करने वाला है। विभूति लोकाग्निजनित, वेदाग्नि जनित और शिवाग्नि जनित तीन प्रकार की बतलाई गयी है जिसमें लोकाग्निजनित अर्थात लौकिक भस्म को शुद्धि के लिए रखा जाता है। मिट्टी, लकड़ी और लोहे के पात्रों की धान्य, तिल, वस्त्र आदि की भस्म से शुद्धि होती है। वेदों से जनित भस्म को वैदिक कर्मों के अंत में धारण करना चाहिए। मूर्तिधारी शिव का मंत्र पढ़कर बेल की लकड़ी जलाएं। कपिला गाय के गोबर तथा शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलताश और बेर की लकड़ियों से अग्नि जलाएं, इसे शुद्ध भस्म माना जाता है। भगवान शिव ने अपने गले में विराजमान प्रपंच को जलाकर भस्मरूप से सारतत्व को ग्रहण किया है। उनके सारे अंग विभिन्न वस्तुओं के सार रूप हैं। भगवान शिव ने अपने माथे के तिलक में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के सारतत्व को धारण किया है। सजल भस्म को धारण करके शिवजी की पूजा करने से सारा फल मिलता है। शिव मंत्र से भस्म धारण कर श्रेष्ठ आश्रमी होता है। शिव की पूजा अर्चना करने वाले को अपवित्रता और सूतक नहीं लगता। गुरु शिष्य के राजस, तामस और तमोगुण का नाश कर शिव का बोध कराता है। ऐसे गुरु के हाथ से भस्म धारण करनी चाहिए।

भस्म दो प्रकार की होती है-एक महाभस्म और दूसरी स्वल्प भस्म। महा भस्म के भी अनेक भेद हैं-श्रोता, स्मार्थ, और लौकिक। श्रोता और स्मार्थ भस्म केवल ब्राह्मणों के ही उपयोग की है तथा लौकिक भस्म का उपयोग सभी मनुष्य कर सकते हैं। ब्राह्मणों को वैदिक मंत्रों का जाप करते हुए भस्म धारण करनी चाहिए तथा अन्य मनुष्य बिना मंत्रों के भस्म धारण कर सकते हैं। उपलों से सिद्ध की हुई भस्म आग्नेय भस्मकहलाती है। यह त्रिपुण्ड का द्रव्य है। अन्य यज्ञ से प्रकट हुई भस्म भी त्रिपुण्ड थारण के काम आती है।

ललाट अर्थात माथे पर भौहों के मध्य भाग से भौहों के अंत भाग जितना बड़ा त्रिपुण्ड ललाट में धारण करना चाहिए। मध्यमा और अनामिका अंगुली से दो रेखाएं करके अंगूठे द्वारा बीच में सीधी रेखा त्रिपुण्ड कहलाती है। त्रिपुण्ड अत्यंत उत्तम तथा भोग और मोक्ष देने वाला है। त्रिपुण्ड की एक-एक रेखा में नो-नो देवता हैं, जो सभी अंगों में स्थित हैं। भस्म को बत्तीस, सोलह, आठ अथवा पांच स्थानों में धारण करें। सिर माथा, दोनों कान, दोनों आंखें, नाक के दोनों नथुनों, दोनों हाथ, मुंह, कंठ, दोनों कोहनी, दोनों भुजदंड, हृदय, दोनों बगल, नाभि, दोनों अंडकोष, दोनों उरु, दोनों घुटनों, दोनों पिंडली, दोनों जांघों और पांव आदि बत्तीस अंगों में क्रमशः अग्नि, वायु, पृथ्वी, देश, दसों दिशाएं, दसों दिग्पाल, आठों वसुंधरा, ध्रुव, सोम, आम, अनिल, प्रातःकाल इत्यादि का नाम लेकर भक्ति भाव से त्रिपुण्ड धारण करें अथवा एकाग्रचित्त हो सोलह स्थान में ही त्रिपुण्ड धारण करें। सिर, माथा, कण्ठ, दोनों को दोनों हाथों, दोनों कोहनियों तथा दोनों कलाइयों, हृदय, नाभि, दोनों पसलियों एवं पीठ में त्रिपुण्ड लगाकर इन सोलह अंगों में धारण करें। देश तथा काल को ध्यान में रखकर भस्म को अभिमंत्रित कर जल में मिलाना चाहिए। त्रिनेत्रधारी, सभी गुणों के आधार तथा सभी देवताओं के जनक और ब्रह्मा एवं रुद्र की उत्पत्ति करने वाले परब्रह्म परमात्मा शिवका ध्यान करते हुए ॐ नमः शिवायमंत्र को बोलते हुए माथे एवं अंगों पर त्रिपुण्ड धारण कर भक्तों को कल?याण प्राप?त होता है और वे शिव की विशेष कृपा प्राप्त करते है।

शिव भस्म धारण से मिलता है कल्याण

शिव ही सर्वज्ञ, परिपूर्ण और अनंत शक्तियों को धारण किए हैं। जो मन, वचन, शरीर और धन से शिव भावना करके उनकी पूजा करते हैं, उन पर शिवजी की कृपा अवश्य होती है। शिवलिंग में शिव की प्रतिमा ने शिव भक्तजनों में शिव की भावना करके उनकी प्रसन्नता के लिए पूजा का विधान है जो शरीर, मन, वाणी और धन से करते हैं भगवान शिव की विशेष कृपा पाते है और शिवलोक में निवास का सौभाग्य प्राप्त करते है। जब आराधक को शिव साधना से तन्मात्राएं वश में हो जाती हैं, तब जीव जगदंबा सहित शिव का सामीप्य प्राप्त कर लेता है। प्रकृति, बुद्धि, त्रिगुणात्मक अहंकार और पांच तन्मात्राएं आदि आठ तत्वों के समूह से देह की उत्पत्ति हुई है, अर्थात पृथ्वी के इन आठ बंधनों के कारण ही आत्मा को जीव की संज्ञा मिली है जिसमें देह से कर्म होता है और फिर कर्म से नूतन देह की उत्पत्ति होती है। शरीर को स्थूल, सूक्ष्म और कारण के भेद ज्ञात होना चाहिए जिससे हम ओर आप अनभिज्ञ है। सर्वज्ञता और तृप्ति शिव के ऐश्वर्य हैं। इन्हें पाकर मनुष्य की मुक्ति हो जाती है। इसलिए शिव की भक्ति करने वाले शिवक्रिया, शिव तप, शिव मंत्र-जाप, शिव ज्ञान और शिव ध्यान प्रतिदिन प्रातः से रात को सोते समय तक, जन्म से मृत्यु तक संपन्न करते हुए शिव को उपलब?ध होते है। पंचाक्षर मंत्र को स्थूल लिंग कहा हैं। पृथ्वी पर पांच लिंग हैं, पहला स्वयंभू शिवलिंग, दूसरा बिंदुर्लिंग, तीसरा प्रतिष्ठित लिंग, चौथा चरलिंग, और पांचवा गुरुलिंगहै। देवर्षियों की तपस्या से संतुष्ट हो उनके समीप प्रकट होने के लिए पृथ्वी के अंतर्गत बीजरूप में व्याप्त हुए भगवान शिव वृक्षों के अंकुर की भांति भूमि को भेदकर स्वतः प्रकट होने के कारण ही इसका नाम स्वयंभूलिंगहै। इसकी आराधना करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। सोने-चांदी, भूमि, वेदी पर हाथ से प्रणव मंत्र लिखकर भगवान शिव की प्रतिष्ठा और आान करने के साथ सोलह उपचारों से उनकी पूजा की जाती है जिससे साधक को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। देवताओं और ऋषियों ने आत्मसिद्धि के लिए पौरुष लिंगकी स्थापना मंत्रों के उच्चारण द्वारा की है। यही प्रतिष्ठित लिंगकहलाता है। किसी ब्राह्मण अथवा राजा द्वारा मंत्र पूर्वक स्थापित किया गया लिंग भी प्रतिष्ठित लिंग कहलाता है, किंतु वह प्राकृत लिंगहै। शक्तिशाली और नित्य होने वाला पौरुष लिंगतथा दुर्बल और अनित्य होने वाला प्राकृत लिंगकहलाता है। लिंग, नाभि, जीभ, हृदय और मस्तक में विराजमान आध्यात्मिक लिंग को चरलिंगकहते हैं। पर्वत को पौरुष लिंगऔर भूतल को विद्वान प्राकृत लिंगमानते हैं। पौरुष लिंग समस्त ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला है। प्राकृत लिंग धन पॅदान करने वाला है। चरलिंगमें सबसे प्रथम रसलिंगब्राह्मणों को अभीष्ट वस्तु प्रदान करने वाला है। सुवर्ण लिंगवैश्यों को धन, बाणलिंगक्षत्रियों को राज्य, सुंदर लिंगशूद्रों को महाशुद्धि प्रदान करने वाला है। बचपन, जवानी और बुढ़ापे में स्फटिक शिवलिंग का पूजन स्त्रियों को समस्त भोग प्रदान करने वाला है। विभूति लोकाग्निजनित, वेदाग्नि जनित और शिवाग्नि जनित तीन प्रकार की बतलाई गयी है जिसमें लोकाग्निजनित अर्थात लौकिक भस्म को शुद्धि के लिए रखा जाता है। मिट्टी, लकड़ी और लोहे के पात्रों की धान्य, तिल, वस्त्र आदि की भस्म से शुद्धि होती है। वेदों से जनित भस्म को वैदिक कर्मों के अंत में धारण करना चाहिए। मूर्तिधारी शिव का मंत्र पढ़कर बेल की लकड़ी जलाएं। कपिला गाय के गोबर तथा शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलताश और बेर की लकड़ियों से अग्नि जलाएं, इसे शुद्ध भस्म माना जाता है। भगवान शिव ने अपने गले में विराजमान प्रपंच को जलाकर भस्मरूप से सारतत्व को ग्रहण किया है। उनके सारे अंग विभिन्न वस्तुओं के सार रूप हैं। भगवान शिव ने अपने माथे के तिलक में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के सारतत्व को धारण किया है। सजल भस्म को धारण करके शिवजी की पूजा करने से सारा फल मिलता है। शिव मंत्र से भस्म धारण कर श्रेष्ठ आश्रमी होता है। शिव की पूजा अर्चना करने वाले को अपवित्रता और सूतक नहीं लगता। गुरु शिष्य के राजस, तामस और तमोगुण का नाश कर शिव का बोध कराता है। ऐसे गुरु के हाथ से भस्म धारण करनी चाहिए। भस्म दो प्रकार की होती है-एक महाभस्म और दूसरी स्वल्प भस्म। महा भस्म के भी अनेक भेद हैं- श्रोता, स्मार्थ, और लौकिक। श्रोता और स्मार्थ भस्म केवल ब्राह्मणों के ही उपयोग की है तथा लौकिक भस्म का उपयोग सभी मनुष्य कर सकते हैं। ब्राह्मणों को वैदिक मंत्रों का जाप करते हुए भस्म धारण करनी चाहिए तथा अन्य मनुष्य बिना मंत्रों के भस्म धारण कर सकते हैं। उपलों से सिद्ध की हुई भस्म आग्नेय भस्मकहलाती है। यह त्रिपुण्ड का द्रव्य है। अन्य यज्ञ से प्रकट हुई भस्म भी त्रिपुण्ड धारण के काम आती है। ललाट अर्थात माथे पर भौहों के मध्य भाग से भौहों के अंत भाग जितना बड़ा त्रिपुण्ड ललाट में धारण करना चाहिए। मध्यमा और अनामिका अंगुली से दो रेखाएं करके अंगूठे द्वारा बीच में सीधी रेखा त्रिपुण्ड कहलाती है। त्रिपुण्ड अत्यंत उत्तम तथा भोग और मोक्ष देने वाला है। त्रिपुण्ड की एक-एक रेखा में नो-नो देवता हैं, जो सभी अंगों में स्थित हैं। भस्म को बत्तीस, सोलह, आठ अथवा पांच स्थानों में धारण करें। सिर माथा, दोनों कान, दोनों आंखें, नाक के दोनों नथुनों, दोनों हाथ, मुंह, कंठ, दोनों कोहनी, दोनों भुजदंड, हृदय, दोनों बगल, नाभि, दोनों अंडकोष, दोनों उरु, दोनों घुटनों, दोनों पिंडली, दोनों जांघों और पांव आदि बत्तीस अंगों में क्रमशः अग्नि, वायु, पृथ्वी, देश, दसों दिशाएं, दसों दिग्पाल, आठों वसुंधरा, ध्रुव, सोम, आम, अनिल, प्रातःकाल इत्यादि का नाम लेकर भक्ति भाव से त्रिपुण्ड धारण करें अथवा एकाग्रचित्त हो सोलह स्थान में ही त्रिपुण्ड धारण करें।

गाजा पट्टी में युद्ध विराम की जरूरत

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सोमवार को, गाजा पट्टी में युद्ध और मानवीय पीड़ा पर विराम लगाने के लिए, तत्काल युद्धविराम लागू किए जाने और तमाम बन्धकों की तत्काल व बिना शर्त रिहाई की मांग करने वाला एक नया प्रस्ताव पारित कर दिया है। यह प्रस्ताव, 11 मार्च को शुरू हुए रमजान के महीने की करुण एवं मानवीय पुकार है, साथ ही, इसराइल पर हमलों के दौरान बन्धक बनाए लोगों में से शेष 130 लोगों को रिहा किए जाने की मांग है। हमास एवं इस्राइल के बीच चल रहे युद्ध को विराम देकर, शांति का उजाला करने, अभय का वातावरण, शुभ की कामना और मंगल का फैलाव करने के लिये को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को दृढ़ता से शांति प्रयास एवं युद्ध विराम को लागू करना ही चाहिए। मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध की विभीषिका से मुक्ति देनी चाहिए। इन दोनों देशों को अभय बनकर विश्व को निर्भय बनाना चाहिए। निश्चय ही यह किसी एक देश या दूसरे देश की जीत नहीं बल्कि समूची मानव-जाति की जीत होगी। यह समय की नजाकत को देखते हुए जरूरी है और इस जरूरत को महसूस करते हुए दोनों देशों को अपनी-अपनी सेनाएं हटाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। गाजा में विशाल स्तर पर उपजी आवश्यकताओं और जरूरतमन्द आबादी तक मानवीय सहायता पहुँचाएं जाने की भी जरूरत है, क्योंकि वहां के लोग भुखमरी के कगार पर पहुँच चुके है।

छह महीने से जारी इस भयंकर जंग के दौरान यह पहला मौका है, जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने युद्धविराम का प्रस्ताव पारित किया है। यह इसलिए संभव हुआ कि अमेरिका ने इसे वीटो करने से परहेज किया। निश्चित रूप से सुरक्षा परिषद का यह प्रस्ताव विश्व जनमत से उपजे दबाव की अभिव्यक्ति है। बड़े शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों को इस युद्ध विराम देने के प्रस्ताव को बल देना चाहिए और इसे लागू करने के प्रयास करने चाहिए। पिछले सात अक्टूबर को हमास की ओर से किए गए आतंकी हमले के खिलाफ जब इस्राइल ने कार्रवाई की बात कही तो अमेरिका और भारत समेत तमाम देशों की सहानुभूति उसके साथ थी। लेकिन इस्राइल ने जिस तरह से गाजा में हवाई हमले शुरू किए और वहां से आम लोगों के हताहत होने की खबरें आने लगीं, उसके बाद यह आवाज तेज होती गई कि इस्राइल को अपने अभियान का स्वरूप बदलना चाहिए। अब तक गाजा में करीब 32 हजार लोगों के मारे जाने की खबरें हैं, जिनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। भारत हमेशा युद्ध-विरोधी रहा है, युद्ध-विराम की उसकी कोशिशें निरन्तर चलती रही है। किसी भी देश में यह भ्रम पैदा नहीं होना चाहिए कि भारत हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा है। भारत ने उचित ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को यह भी बता दिया है कि वह सभी संबंधित पक्षों के संपर्क में है और उनसे बातचीत की मेज पर लौटने का आग्रह कर रहा है। निस्संदेह, भारत को मानवता के पक्ष में शांति, युद्ध-विराम और राहत के प्रयासों में जुटे रहना चाहिए। भारत के ऐसे

प्रयासों का ही परिणाम है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने युद्धविराम का ऐसा प्रस्ताव पारित किया है।

गाजा पट्टी में हिंसक टकराव पर विराम लगाने के लिए सुरक्षा परिषद की कई बैठकें हो चुकी हैं, मगर फिलहाल यह सम्भव नहीं हो पाया है। नवम्बर 2023 में एक सप्ताह के लिए लड़ाई रोकी गई थी और गाजा से बंधकों और इस्राइल से फलस्तीनी बंदियों की अदला-बदली हुई थी। मगर, इसके बाद लड़ाई फिर भड़क उठी और इसमें तेजी आई है। गाजा में मृतक संख्या और भूख व कुपोषण से प्रभावित फलस्तीनियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। इसके मद्देनजर लड़ाई को जल्द से जल्द रोके जाने और मानवीय पीड़ा पर मरहम लगाने की मांग भी प्रबल हो रही है। दुनिया के किसी भी हिस्से में मानवता का इस तरह पीड़ित एवं मर्माहत होना शर्म की बात है। इस शर्म को लगातार ढ़ोते रहना शक्तिसम्पन्न एवं निर्णायक राष्ट्रों के लिये शर्मनाक ही है। अब एक सार्थक पहल हुई है तो उसका स्वागत होना ही चाहिए।

समूची दुनिया और उसके देश हमास एवं इस्राइल के बीच चल रहे युद्ध को विराम देने की अपेक्षा महसूस करते हुए लगातार मांग कर रहे हैं, लेकिन अफसोस की बात थी कि अलग-अलग देशों में हो रहे प्रदर्शनों में व्यक्त होती जनभावना एवं मानवता की पुकार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव के रूप में बाहर नहीं आ पा रही थी।

खुद अमेरिका इससे पहले गाजा युद्ध विराम से जुड़े तीन प्रस्ताव को वीटो कर चुका था। सोमवार को मतदान से अलग रहते हुए भी उसने इस प्रस्ताव को पारित होने दिया, जो उसके अब तक के रुख में अहम बदलाव के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिकी रुख में आए इस कथित बदलाव पर इस्राइल ने भले

खुद अमेरिका इससे पहले गाजा युद्ध विराम से जुड़े तीन प्रस्ताव को वीटो कर चुका था। सोमवार को मतदान से अलग रहते हुए भी उसने इस प्रस्ताव को पारित होने दिया, जो उसके अब तक के रुख में अहम बदलाव के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिकी रुख में आए इस कथित बदलाव पर इस्राइल ने भले ही तीखी प्रतिक्रिया जताई। इस्राइली पीएम नेतन्याहू ने इसी सप्ताह बातचीत के लिए अमेरिका जाने वाले एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के कार्यक्रम को रद्द करने की घोषणा कर दी।

ही तीखी प्रतिक्रिया जताई। इस्राइली पीएम नेतन्याहू ने इसी सप्ताह बातचीत के लिए अमेरिका जाने वाले एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के कार्यक्रम को रद्द करने की घोषणा कर दी। हालांकि अमेरिका ने अपने रुख में बदलाव से इनकार किया है, लेकिन फिर भी माना जा रहा है कि अमेरिका का ताजा कदम इस बात का स्पष्ट संकेत है कि इस्राइल उसके समर्थन को तय मानकर न चले। भले ही अमेरिका और उसके सहयोगी देशों की नाकामी ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक क्षेत्र में एक रिक्तता पैदा करते हुए संकट को गहराया है लेकिन अब अमेरिका के बदले रूख से युद्ध का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होने की संभावनाएं हैं। अमेरिका के रुख में यह बदलाव और सुरक्षा परिषद का प्रस्ताव सकारात्मक संकेत हैं। लेकिन फिर भी इनके संभावित परिणामों को लेकर अभी धुंधलके ही छाये हैं, किसी निष्कर्ष एवं निर्णायक मोड में पहुंचने की बात अभी जल्दबाजी ही प्रतीत हो रही है। हालांकि अभी बात इस्राइल और फलस्तीन के बेहद लंबे और जटिल विवाद की नहीं, बस गाजा में चल रहे युद्ध को बंद करने और बंधकों को रिहा करने की संभावनाओं तक सीमित है। लेकिन यह सीमित लक्ष्य भी तमाम अनिश्चितताओं से घिरा है। ऐसे में फिलहाल सिर्फ यह उम्मीद और अपील की जा सकती है कि सभी संबंधित पक्ष इस मामले में सकारात्मक और लचीला रुख अपनाएं।

बात भले ही अभी गाजा में युद्ध-विराम की हो, लेकिन युद्ध कहीं भी हो, विनाश का ही कारण है, विकास को अवरूद्ध करने एवं शांति एवं अमन को बाधित करने का जरिया है। युद्ध तो लम्बे समय से रूस एवं यूक्रेन के बीच भी चल रहा है। हमाम और इस्राइल भी लम्बे समय से युद्धरत है। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने जैसा है। ऐसे युद्ध का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देगा, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने का भी बड़ा कारण बनेगा। विश्वशांति एवं मानवता की रक्षा का ध्यान रखते हुए युद्धरत देशों को युद्ध विराम के लिये अग्रसर होना चाहिए। जब तक युद्धरत देशों के अहंकार का विसर्जन नहीं होता तब तक युद्ध की संभावनाएं मैदानों में, समुद्रों में, आकाश में तैरती रहेगी, इसलिये आवश्यकता इस बात की भी है कि जंग अब विश्व में नहीं, हथियारों में लगे। मंगल कामना है कि अब मनुष्य यंत्र के बल पर नहीं, भावना, विकास और प्रेम के बल पर जीए और जीते।

राष्ट्र के सतत भविष्य का द्योतक हैं सशक्त महिलाएं

नारी राष्ट्र का अभिमान है। नारी राष्ट्र की शान है। भारतीय परिवेश व परिधान की शोभा है नारी। नर से नारायण की कहावत को चरितार्थ करती है नारी। मानवता की मिशाल है नारी। महिला सशक्तिकरण से लैंगिक समानता का संचार होता है। महिला मानवता को धार देती है। नारी संघर्षों की कहानी है। प्यार और सम्मान की मूरत है नारी। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है समाज में महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना अर्थात महिलाओं का शक्तिशाली होना। महिलाएं शक्तिशाली होंगी तो वह अपने जीवन से जुड़े प्रत्येक फैसले स्वयं ले सकती है। ऐसी महिलाएं परिवार और समाज को विकास की राह पर ले जाती हैं। महिलाओं को दिए गए अधिकार महिला सशक्तिकरण का आधार है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार महिलाओं के विकास में निरंतर अग्रसर है। किसी ने क्या खूब कहा है झ हर सफल इंसान के पीछे एक महिला का हाथ होता है, इसी प्रकार राष्ट्र निर्माण में एक नहीं बल्कि सैकड़ों महिला वैज्ञानिकों का सहयोग होता है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी, दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है। अतः उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए। राष्ट्र का गौरव है नारी सशक्तिकरण। अतएव हम कह सकते हैं कि सशक्त महिलाएं ही सशक्त देश का निर्माण करती हैं। लिंग समानता पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करती है, चाहे वह घर पर हो या शैक्षणिक संस्थानों में या कार्यस्थलों पर। लैंगिक समानता राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समानता की गारंटी देती है। भारत में लैंगिक समानता के आधार पर महिलाओं को मिले 11 अधिकार इस प्रकार हैं- 1- समान मेहनताना का अधिकारः इक्वल रिम्यूनरेशन एक्ट में दर्ज प्रावधानों के मुताबिक सैलरी के मामलों में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते हैं। किसी कामकाजी महिला को पुरुष के बराबर सैलरी लेने का अधिकार है। 2- गरिमा और शालीनता का अधिकारः महिला को गरिमा और शालीनता से जीने का अधिकार मिला है। किसी मामले में अगर महिला आरोपी है, उसके साथ कोई मेडिकल परीक्षण हो रहा है तो यह काम किसी दूसरी महिला की मौजूदगी में ही होना चाहिए। 3- कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षाः भारतीय कानून के मुताबिक अगर किसी महिला के खिलाफ दफ्तर में शारीरिक उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न होता है, तो उसे शिकायत दर्ज करने का अधिकार है। इस कानून के तहत, महिला 3 महीने की अवधि के भीतर ब्रांच ऑफिस में इंटरनल कंप्लेंट कमेटी (आई सी सी) को लिखित शिकायत दे सकती है। 4 -घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकारः भारतीय संविधान की धारा 498 के अंतर्गत पत्नी, महिला लिव-इन पार्टनर या किसी घर में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार मिला है। पति, मेल लिव इन पार्टनर या रिश्तेदार अपने परिवार के महिलाओं के खिलाफ जुबानी, आर्थिक, जज्बाती या यौन हिंसा नहीं कर सकते। आरोपी को 3 साल गैर-जमानती कारावास की सजा हो सकती है या जुमार्ना भरना पड़ सकता है। 5 -पहचान जाहिर नहीं करने का अधिकारः किसी महिला की निजता की सुरक्षा का अधिकार हमारे कानून में दर्ज है। अगर कोई महिला यौन उत्पीड़न का शिकार हुई है तो वह अकेले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज करा सकती है। किसी महिला पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में

बयान दे सकती है। 6- मुफ्त कानूनी मदद का अधिकार: लीगल सर्विसेज अथॉरिटीज एक्ट के मुताबिक बलात्कार की शिकार महिला को मुफ्त कानूनी सलाह पाने का अधिकार है. लीगल सर्विस अथॉरिटी की तरफ से किसी महिला का इंतजाम किया जाता है। 7- रात में महिला को नहीं कर सकते गिरफ्तार: किसी महिला आरोपी को सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं कर सकते। अपवाद में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के आदेश को रखा गया है। कानून यह भी कहता है कि किसी से अगर उसके घर में पूछताछ कर रहे हैं तो यह काम महिला कांस्टेबल या परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में होना चाहिए। 8- वर्चुअल शिकायत दर्ज करने का अधिकार: कोई भी महिला वर्चुअल तरीके से अपनी शिकायत दर्ज कर सकती है. इसमें वह ईमेल का सहारा ले सकती है। महिला चाहे तो रजिस्टर्ड पोस्टल एड्रेस के साथ पुलिस थाने में चिट्ठी के जरिये अपनी शिकायत भेज सकती है। इसके बाद एसएचओ महिला के घर पर किसी कांस्टेबल को भेजेगा जो बयान दर्ज करेगा। 9- अशोभनीय भाषा का नहीं कर सकते इस्तेमाल: किसी महिला (उसके रूप या शरीर के किसी अंग) को किसी भी तरह से अशोभनीय, अपमानजनक, या सार्वजनिक नैतिकता या नैतिकता को भ्रष्ट करने वाले रूप में प्रदर्शित नहीं कर सकते. ऐसा करना एक दंडनीय अपराध है। 10- महिला का पीछा नहीं कर सकते: आईपीसी की धारा 354 डी के तहत वैसे किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी जो किसी महिला का पीछे करे, बार-बार मना करने के बावजूद संपर्क करने की कोशिश करे या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन जैसे इंटरनेट, ईमेल के जरिये मॉनिटर करने की कोशिश

अपवाद में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के आदेश को रखा गया है। कानून यह भी कहता है कि किसी से अगर उसके घर में पूछताछ कर रहे हैं तो यह काम महिला कांस्टेबल या परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में होना चाहिए। 8- वर्चुअल शिकायत दर्ज करने का अधिकार: कोई भी महिला वर्चुअल तरीके से अपनी शिकायत दर्ज कर सकती है. इसमें वह ईमेल का सहारा ले सकती है। महिला चाहे तो रजिस्टर्ड पोस्टल एड्रेस के साथ पुलिस थाने में चिट्ठी के जरिये अपनी शिकायत भेज सकती है।

करे। 11- जीरो एफआईआर का अधिकार: किसी महिला के खिलाफ अगर अपराध होता है तो वह किसी भी थाने में या कहीं से भी एफआईआर दर्ज करा सकती है. इसके लिए जरूरी नहीं कि कंप्लेंट उसी थाने में दर्ज हो जहां घटना हुई है. जीरो एफआईआर को बाद में उस थाने में भेज दिया जाएगा जहां अपराध हुआ हो। महिलाओं के साथ भेदभाव को समाप्त करने में अध्यात्म गहरी भूमिका निभाता है। हमारी संस्कृति में स्त्री का दर्जा पुरुष से कम नहीं माना गया है। मुगल आक्रमण से पहले स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा दिया जाता था। हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार ज्ञान की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी और शक्ति की देवी दुर्गा पूजा जाता है। हमारे जीवन को अधिशासित करने वाले सत, रज और तम, इन तीन गुणों में सामंजस्य बनाए रखने के लिए हम देवी मां की ही प्रार्थना करते हैं। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। मनुस्मृति 3/56 ।। जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। नारी जननी है। नारी नर का अभिमान है। नारी राष्ट्र के विकास की नींव है। नारी सृष्टि का अनमोल उपहार है । नारी से सृष्टि और सृष्टि से नारी है। नारी सशक्त बनेगी तो देश सशक्त बनेगा। नैतिक मूल्यों को अपनाने से ही नारी सशक्त बनेगी। वैदिक साहित्य में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के कारण नारी पूजनीय एवं वंदनीय थी। परंतु वर्तमान समय में नारियों का पाश्चात्य संस्कृति के कारण व्यसन, नशा विकृतियों में लिप्त होना आदि अवगुण नारी को अबला बनाता है। नारी जीवन में सद्गुणों को अपनाकर फिर से देवत्व को प्राप्त हो सकती है। संस्कृति, संस्कार से बनती है। सभ्यता, नागरिकता से बनती है। नागरिकता मानव की पहचान है। नर और नारी दोनों मानव हैं। मानव ही किसी भी देश के नागरिक कहलाते हैं। नागरिक शब्द से नागरिकता का निर्माण हुआ। लैंगिक समानता किसी भी राष्ट्र के सतत भविष्य का द्योतक होता है। लैंगिक असमानता समाज के संतुलन व्यवस्था और विकास को प्रभावित करती है। समतामूलक समाज राष्ट्र को संतुलित करता है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता की पहचान उसके संतुलित समाज से ही होती है। अतएव हम कह सकते हैं कि लैंगिक समानता, समतामूलक समाज को स्थापित करता है।

सामाजिक रूढ़िवाद से आजाद नहीं हुआ विधवा पुनर्विवाह

दांपत्य जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए होते हैं। जिस तरह एक पहिया के नहीं रहने से गाड़ी नहीं चल सकती ठीक उसी प्रकार पति या पत्नी के अभाव में जीवन पहाड़ बन जाता है। पुरुष प्रधान समाज में पत्नी के गुजर जाने पर पुरुष की दूसरी शादी करने का प्रस्ताव आने लगते हैं। मगर पति के मर जाने के बाद आज भी समाज विधवा के पुनर्विवाह की इजाजत नहीं देना चाहता है। उसे ताउम्र बच्चों के लालन-पालन व सास-ससुर की देखभाल करना ही जीवन का उद्देश्य समझाया जाता है। जबकि जीवनसाथी के बिछड़ने का दुख स्त्री और पुरुष दोनों का एक जैसा होता है। संवेदनाएं पुरुष की तरफ और सारी जिम्मेदारियां व पाबंदियां स्त्री के हिस्से हो जाती हैं। समाज विधुर पुनर्विवाह के लिए गाजे-बाजे तक की व्यवस्था करता है, वहीं स्त्रियों के हिस्से वेदना, परिवार की देखभाल और कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का हवाला दिया जाता है। प्रश्न यह उठता है कि आखिर समाज में विधवाओं को अशुभ क्यों माना जाता है? उसके लिए जीवन इतना कठिन क्यों हो जाता है? सदियों से विधवा को उसके पति की मृत्यु का जिम्मेदार माना जाता है। विधवा महिलाओं को शारीरिक व मानसिक हिंसा का भी सामना करना पड़ता है। उसपर सामाजिक परंपरा के नाम पर रहन-सहन, खान पान, उठना-बैठना, हंसना-बोलना यहां तक कि उसके कहीं आने-जाने पर भी पाबंदी लगा दी जाती है। रूढ़िवादी विचारों में जकड़े ग्रामीण इलाकों में विधवा के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। सुबह-सुबह विधवा स्त्री का मुंह देखना अशुभ माना जाता है। उसके लिए श्रृंगार करना, सजना-संवरना, किसी पुरुष से बातचीत करना, शुभ कार्यों व अनुष्ठानों में शामिल होना आदि घोर पाप माना जाता है। इतना ही नहीं, कम उम्र में पति के गुजर जाने के बाद विधवा महिलाओं को यौन हिंसा का भी शिकार होना पड़ता है। हालांकि शहरी परिवेश में लोगों की धारणा धीरे-धीरे बदली है। पढ़े-लिखे परिवार में इक्का-दुक्का पुनर्विवाह भी कराया जा रहा है। इसका व्यापक असर टीवी सीरियल, फिल्मों व सोशल मीडिया पर आये दिन विधवा पुनर्विवाह की सकारात्मक खबरों से हुआ है। लेकिन देश का अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र आज भी विधवा पुनर्विवाह पर अपनी संकुचित मानसिकता से बाहर नहीं निकला है।बिहार के मुजफ्फरपुर जिला मुख्यालय से करीब 25 किमी दूर कुढ़नी प्रखंड का छाजन गांव इसका एक उदाहरण है। पूर्वी और पश्चिमी, दो भागों में बंटे इस गांव की कुल आबादी करीब बारह हजार है। पूर्वी छाजन जहां अनुसूचित जाति (मल्लाह और मुसहर) बहुल है, वहीं पश्चिमी छाजन पिछड़ा और अति पिछड़ा बहुल गांव है। यहां उच्च वर्गों की संख्या सीमित है। दोनों ही गांव में विधवा महिलाओं की जिंदगी चारदीवारी में कैद रहती है। घर से बाहर निकलने या आवश्यकता वश किसी पराये लोगों से बात करने पर पूरा गांव चारित्रिक लांछन लगा कर उसे बदनाम करने का प्रयास करता है। इस संबंध में गांव की एक 35 वर्षीय महिला सविता देवी (बदला हुआ नाम) बताती है कि मेरी शादी 23 वर्ष की उम्र हुई थी। पति शराब का आदि था। शादी के कुछ साल बाद ही शराब के अत्यधिक सेवन के कारण पति की मौत हो गई। लेकिन समाज उसकी मौत का कारण मुझे ठहराने लगा और मुझे कुलटा, कुलक्षणी, अभागिन आदि कहा जाने लगा। लोगों ने कहा कि यह पापिन है जिसके कारण पति की मौत हुई है। दरअसल पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं का दर्जा उसके पति से होता है। ऐसे में विधवाओं को हमेशा कठिन भाग्य का पात्र माना जाता है।

इसी गांव की 49 वर्षीय एक अन्य महिला कविता (नाम परिवर्तित) कहती है कि मेरी शादी 15 साल की आयु में हो गई थी। शादी के 8 साल बाद ही मेरे पति की बीमारी के कारण मौत हो गई। पति के मौत के बाद मेरे ऊपर दुखों का पहाड़ तोड़ा गया। समाज में मुझे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। पति की मौत का कारण बता कर मुझे घर की चारदीवारी में कैद कर दिया गया। घर से लेकर समाज तक किसी भी शादी या उत्सव में भाग लेने पर मुझे पाबंदी लगा दी गई। पूरी जिंदगी मैंने अरमानों का गला घोट कर जीया है। मैं आज तक समझ नहीं सकी कि मेरे पति की मृत्यु जब बीमारी से हुई तो इसके लिए मैं कहां से जिम्मेदार हो गई? मुझे क्यों अभागन माना गया? वहीं 45 वर्षीय संजू देवी कहती हैं कि मेरा विवाह 19 वर्ष की आयु में हुआ था। शादी के 15 साल बाद अत्यधिक शराब पीने के कारण मेरे पति की मृत्यु हो गई। आज मैं मजदूरी करके अपने बच्चों का

पालन-पोषण कर रही हूं। लेकिन मेरी किसी प्रकार की मदद की जगह समाज पति के मौत के लिए मुझे ही जिम्मेदार ठहराता है।

2011 की जनगणना क अनुसार देश में लगभग साढ़े पांच करोड़ से अधिक महिलाएं विधवा की ज़िंदगी व्यतीत कर रही हैं। इसमें 58 प्रतिशत महिलाओं की उम्र 60 वर्ष से अधिक है, जबकि 32 प्रतिशत 40-59 आयु वर्ग की और 9 प्रतिशत 20 से 39 आयु वर्ग की विधवा महिलाएं हैं। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि बाल विवाह निषेध अधिनियम के बावजूद 2011 की जनगणना में देश भर में लगभग 1।94 लाख बाल विधवाओं (10-19 वर्ष) की संख्या भी दर्ज की गई है। इनमें ग्रामीण क्षेत्रों की संख्या अधिक है। जिन्हें कई प्रकार की रूढ़िवादी विचारधारा के कारण बंदिशों वाली ज़िंदगी व्यतीत करनी पड़ रही है।

वास्तव में, समाज का दोहरा चरित्र महिलाओं को वर्षों से प्रताड़ित और शोषित करता रहा है। समाज और परंपरा के नाम पर महिलाओं की दुर्दशा होती रही है। पहले बाल विवाह फिर कम उम्र में मां बनना और फिर पति की मौत से सामाजिक बंदिशों व कुत्सित परंपराओं में जकड़कर जीवन की आशा, आकांक्षा, स्वतंत्रता, समानता से महरूम रहना यही नारी की नियति बन जाती है। आजादी से कई साल पहले समाज सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवाओं के पुनर्विवाह कानून को लागू करवा कर इस दिशा में पहल तो की, लेकिन इसके बावजूद समाज रूढ़ियों में जकड़ा रहा। शिक्षा और जागरूकता के कारण शहरी क्षेत्रों में विधवाओं के जीवन में परिवर्तन तो आया लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यह बुराई अपनी जड़ें जमाए हुई है।

इसी गांव की 49 वर्षीय एक अन्य महिला कविता (नाम परिवर्तित) कहती है कि मेरी शादी 15 साल की आयु में हो गई थी। शादी के 8 साल बाद ही मेरे पति की बीमारी के कारण मौत हो गई। पति के मौत के बाद मेरे ऊपर दुखों का पहाड़ तोड़ा गया। समाज में मुझे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। पति की मौत का कारण बता कर मुझे घर की चारदीवारी में कैद कर दिया गया। घर से लेकर समाज तक किसी भी शादी या उत्सव में भाग लेने पर मुझे पाबंदी लगा दी गई।

श्याम हॉस्पिटल के निदेशक अशोक कुमार चौधरी को पत्रिका भेंट करते उभरता बिहार के संपादक राजीव रंजन

वाराणसी: 2023 में वायु गुणवत्ता मानकों को पूरा करने वाला इकलौता भारतीय शहर

एक उल्लेखनीय उपलब्धि में, भारत के अपेक्षाकृत अधिक प्रदूषित सिंधु-गंगा के मैदानी क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, मंदिरों की नगरी वाराणसी साल 2022-23 और 2023-24 दोनों के सर्दियों के महीनों के दौरान पीएम 2.5 स्तरों के लिए राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप रही।

इस उपलब्धि के साथ वाराणसी प्रमुख भारतीय शहरों के बीच पर्यावरणीय प्रगति का एक चमकदार उदाहरण बनकर खड़ा हो गया है। यह महत्वपूर्ण मील का पत्थर वाराणसी को इस उपलब्धि को हासिल करने वाले सात प्रमुख भारतीय शहरों में से एकमात्र शहर के रूप में स्थापित करता है, जो वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए एक सराहनीय प्रतिबद्धता दशार्ता है। दरअसल साल 2022-23 और 2023-24 की सर्दियों के दौरान सात प्रमुख भारतीय शहरों में ढट2.5 के स्तरों की तुलना करने वाले एक हालिया अध्ययन ने इस आश्चर्यजनक सफलता की कहानी सामने रखी है। इस अध्ययन को किया है क्लाइमेट ट्रेंड्स नाम की संस्था ने।

जहां दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे अन्य महानगरों में प्रदूषण में वृद्धि देखी गई, वहीं वाराणसी एकमात्र ऐसा शहर बनकर उभरा जिसने दोनों सर्दियों में राष्ट्रीय ढट2.5 मानकों को पूरा किया। यह खबर भारत की वायु प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में एक उम्मीद की किरण जगाती है, जो सर्दियों के महीनों में तापमान में उलटफेर, स्थिर हवा और ताप स्रोतों से निकलने वाले उत्सर्जन में वृद्धि जैसे कारकों के कारण काफी खराब हो जाती है।

वाराणसी का अनछुआ रहस्य

वाराणसी में सुधार के पीछे के सटीक कारण अभी भी अस्पष्ट हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि उन विशिष्ट उत्सर्जन स्रोतों की पहचान करने के लिए गहन विश्लेषण की आवश्यकता है जिन पर अंकुश लगाया गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के पर्यावरण अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ अतेंद्रपाल सिंह भविष्य की योजना के लिए स्रोत निर्धारण अध्ययनों के महत्व पर जोर देते हैं। वे बताते हैं, वर्तमान अध्ययन वर्तमान स्थिति का वर्णन करता है और आधारभूत डेटा प्रदान करता है। हालांकि, प्रभावी प्रदूषण शमन रणनीतियों की योजना बनाने के लिए, पीएम 2.5 स्रोतों को समझना महत्वपूर्ण है।

वाराणसी से सीख

वाराणसी की सफलता इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि यह गंगा के मैदानी इलाकों क्षेत्र में स्थित है, जो अपनी गंभीर वायु गुणवत्ता के मुद्दों के लिए कुख्यात है।

शहर के दृष्टिकोण का अध्ययन और उसे दोहराना आईजीपी के भीतर और बाहर प्रदूषण से जूझ रहे अन्य शहरों के लिए एक गेम-चेंजर हो सकता है।

राष्ट्रीय रुझान और आगे की जांच की जरूरत

जबकि वाराणसी एक उज्ज्वल स्थान के रूप में चमकता है, अध्ययन दिल्ली में एक चिंताजनक प्रवृत्ति को भी उजागर करता है। प्रदूषण नियंत्रण पर ध्यान देने के बावजूद, राष्ट्रीय राजधानी होने के नाते, दिल्ली में सर्दियों में पीएम 2.5 का स्तर वास्तव में पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ गया है। इससे मौजूदा नीतियों का मूल्यांकन करने और संभावित रूप से कड़े नियमों को लागू करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन सर्दियों के प्रदूषण विरोधाभास पर भी प्रकाश डालता है। दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे शहरों में अक्टूबर-दिसंबर में जनवरी और फरवरी की तुलना में कम तापमान के बावजूद प्रदूषण का स्तर अधिक पाया गया। यह हवा के पैटर्न और बाद के सर्दियों के महीनों में कम कृषि जलाने की प्रथा जैसे कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। मौसम विज्ञान और जलवायु परिवर्तन पर आगे के अध्ययन इस घटना का गहराई से अध्ययन कर सकते हैं।

बात आगे की

वाराणसी की उपलब्धि दर्शाती है कि इरादे मजबूत हों तो वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की जा सकती है। वाराणसी की सफलता के लिए किए गए विशिष्ट उपायों का पता लगाकर और ज्ञान साझा करने पर सहयोग करके, अन्य भारतीय शहर अपनी वायु प्रदूषण चुनौतियों से निपटने के लिए लक्षित रणनीतियां विकास कर सकते हैं। वाराणसी के अनुभव के साथ संयुक्त रूप से आगे का शोध, पूरे भारत में स्वच्छ हवा का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करेगा और लाखों लोगों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करेगा।

जहां दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे अन्य महानगरों में प्रदूषण में वृद्धि देखी गई, वहीं वाराणसी एकमात्र ऐसा शहर बनकर उभरा जिसने दोनों सर्दियों में राष्ट्रीय पीएम 2.5 मानकों को पूरा किया। यह खबर भारत की वायु प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में एक उम्मीद की किरण जगाती है, जो सर्दियों के महीनों में तापमान में उलटफेर, स्थिर हवा और ताप स्रोतों से निकलने वाले उत्सर्जन में वृद्धि जैसे कारकों के कारण काफी खराब हो जाती है। वाराणसी में सुधार के पीछे के सटीक कारण अभी भी अस्पष्ट हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि उन विशिष्ट उत्सर्जन स्रोतों की पहचान करने के लिए गहन विश्लेषण की आवश्यकता है जिन पर अंकुश लगाया गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के पर्यावरण अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ अतेंद्रपाल सिंह भविष्य की योजना के लिए स्रोत निर्धारण अध्ययनों के महत्व पर जोर देते हैं।

कृष्ण मुरारी प्रसाद डीएसपी (लॉ एंड ऑर्डर) को पत्रिका भेंट करते उभरता बिहार के संपादक राजीव रंजन

पिच पर आग उगलने लगी 'राजधानी एक्सप्रेस'

कभी रावलपिंडी से चलने वाली तेज ट्रेन के नाम पर पाक के तूफानी गेंदबाज शोयब अख्तर को रावलपिंडी एक्सप्रेस कहा जाता था। अब भारत के तूफानी गेंदबाजी की खोज पूरी होती दिख रही है। अब देश की राजधानी दिल्ली का आग उगलती गेंदें डालने वाला मयंक यादव राजधानी एक्सप्रेस के नाम से पुकारा जा रहा है। अभी भारत की टीम में उसका चयन नहीं हुआ है, लेकिन डेढ़ सौ किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा स्पीड की गेंद फेंककर उसने आईपीएल में विपक्षी टीम के पंजे से जीत छीनी हैं। इतिहास रचा है, अपने पहले डेब्यू मैच और दूसरे मैच में अपनी आग उगलती गेंदों के बूते लगातार दो बार मैन ऑफ द मैच का खिताब जीतकर। लगता है भारत को अपना पहला खतरनाक गेंदबाज मिल गया है। सचमुच जमीन से उखड़कर दिल्ली में बसे उनके परिवार के लिये यह सुनहरे सपनों का सच होने जैसा है। उस पिता के लिये भी जो बेटे से उम्मीद लगाए रहे कि वह वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज कर्टली एंब्रोस की तरह घातक गेंदबाजी करके सामने के बल्लेबाज को भयभीत करे। सचमुच, जिन्हें खुद पर भरोसा होता है और जीवन में बड़े लक्ष्य हासिल करने होते हैं, वे छोटे अवसरों को नजरअंदाज कर देते हैं। वे लीक तोड़ने में विश्वास करते हैं। उनकी नजर अर्जुन की तरह बड़े लक्ष्य चिड़िया की आंख पर होती है। ठीक इसी तरह जब निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे मयंक यादव ने अपने घर में कहा कि वह स्कूल छोड़कर क्रिकेट खेलना चाहता है तो घर में बवाल हो गया। आम परिवार की सोच आज भी पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नवाब और खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब की उक्ति पर टिकी है। यही वजह है कि मयंक के परिवार ने उसके स्कूल छोड़ने के फैसले पर हाय-तौबा मचाई। लेकिन ये मयंक का खुद पर भरोसा ही था, जो उसने रिस्क उठाया था। उसने कह दिया कि छह महीने में यदि सफल न हुआ तो वापस स्कूल ज्वाइन कर लूंगा। दूसरी बार जब दिल्ली की चर्चित सोनेट क्रिकेट एकेडमी में प्रशिक्षण के दौरान जब वह सर्विसेज की टीम में सिलेक्ट हुआ और उसे नौकरी का ऑफर मिला तो उसने ठुकरा दिया। मयंक में गजब का धैर्य है। उसकी गेंदबाजी को संवारने वाले कोच तारक सिन्हा खासे नाराज हुए कि क्यों ऐसा अवसर छोड़ रहा है। लेकिन शायद मयंक को अपनी क्षमताओं का पता था। उसे खुद पर भरोसा था। संकल्प था कि दिल्ली की टीम में ही खेलना है। उसका संकल्प अब हकीकत बन रहा है। भारतीय क्रिकेट के आने वाले दशक मयंक के नाम होने वाले हैं बशर्ते वह अपनी फिटनेस कायम रख सके। अपने को चोट से बचा सके। इसी फिटनेस की समस्या के कारण उसे आईपीएल के पिछले सीजन में लखनऊ ज्वाइंट की टीम में चयनित होने के बावजूद बाहर बैठना पड़ा। एक तूफानी गेंदबाज टीम में एक दर्शक की तरह शामिल हो, यह असहनीय जैसा होता है। लेकिन मयंक के धैर्य की प्रशंसा करनी होगी कि लखनऊ ज्वाइंट के लिये पिछले सीजन में बीस लाख की बेस प्राइज में सिलेक्ट होने के बावजूद वह मैदान से बाहर रहा। मयंक पश्चिमी दिल्ली के उसी इलाके से आते हैं जहां के विराट कोहली हैं। यह इलाका देश को एक और क्रिकेट का नगीना दे रहा है। वह भी राजधानी एक्सप्रेस जैसा तूफानी गेंदबाज। उसके जलवे दिख रहे हैं जबकि भारतीय क्रिकेट टीम के किसी भी फॉरमेट में चयन नहीं हुआ है। अब चयनकर्ता उसके आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। भारत जैसे देश में जहां तेज गेंदबाजों का अकाल जैसा रहा है। निस्संदेह तूफानी गेंदबाज सामने वाली टीम में खौफ पैदा कर देता है। जीत छीनकर ले आता है। जैसा कि मयंक ने आईपीएल में पंजाब किंग्स के खिलाफ 155 किमी प्रति घंटा से अधिक की रफ्तार से गेंद फेंककर पदार्पण मैच में 27 रन देकर तीन विकेट लिए और प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड जीता। उसने अपनी तेज गेंदों से शिखर धवन द्वारा लिखी जीत की इबारत को हार में तब्दील कर दिया। इसी तरह लगातार दूसरे मैच में रॉयल चैलेंजर्स बंगलुरु के साथ मुकाबले में गेंद की रफ्तार 156.7 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंची। उन्होंने महज 14 रन देकर तीन विकेट लिए। विकेट भी ग्लेन मैक्सवेल व कैमरन ग्रीन जैसे दमदार बल्लेबाजों के लिए। मूल रूप से बिहार के सुपौल जिले के रतहो गांव के मयंक का जन्म दिल्ली में हुआ। गलियों से क्रिकेट की शुरूआत करने वाले मयंक ने अब आईपीएल में दमदार पारी के बूते टी-20 विश्वकप के लिये दावेदारी कर दी है। आने वाला समय मयंक है और वह लंबे समय तक देश के लिए प्रथम श्रेणी की क्रिकेट खेल सकता है। आज भले ही बालक मयंक में आतिशी गेंदबाजी की संभावना तलाशने वाले गुरु, सोनेट क्रिकेट एकेडमी के कोच तारक सिन्हा हमारे बीच में नहीं हैं और कोरोना ने उन्हें हम से छीन लिया है, लेकिन वे देश को एक आग उगलने वाला बॉलर दे गए हैं। सोनेट एकडेमी ने देश को आशीष नेहरा, शिखर धवन, ऋषभ पंत, आयुष बडोनी जैसे खिलाड़ी दिए हैं। उन्होंने ही मयंक को अहसास कराया था कि उसकी बोलिंग में आतिशी तेजी है। उन्होंने मयंक से कहा था कि वह अपनी उम्र के बच्चों के बजाय बड़ी उम्र के खिलाड़ियों के साथ खेले।

इन उपायों से बचाया जा सकता है त्वचा पर प्रदूषण से होने वाले प्रभावों को

बढ़ते प्रदूषण की वजह से त्वचा पर उसका कुछ न कुछ असर तो होता है। हालांकि आज के समय में हम अपनी त्वचा का बेहद ख्याल रखते हैं, लेकिन प्रदूषण का असर हमारी त्वचा पर होता ही है। प्रदूषण के कारण एलर्जी, खुजली और रेशेज की परेशानी त्वचा पर सबसे ज्यादा होती है। समय से पहले अधिक उम्र का प्रभाव, झुर्रियां, झाइयां, खुजली और त्वचा से संबंधी अन्य परेशानियां प्रदूषण की वजह से ही सामने आती हैं।

ऐसे में ज्यादातर लोग पार्लर में जाकर स्किन केयर कराते रहते हैं। ये स्किन केयर काफी महंगे होते हैं। इसी के चलते ये कराना हर किसी के बस की बात नहीं है। अगर आप भी स्किन केयर पर ज्यादा पैसा खर्च करना नहीं चाहते तो अपनी त्वचा का ध्यान रखकर इसका बचाव कर सकते हैं।

सबसे ज्यादा खतरनाक है वायु प्रदूषण

तनाव, आहार और खराब स्किन केयर के बाद जो कारक सबसे ज्यादा स्किन को प्रभावित करता है, वह है वायु प्रदूषण। असल में हवा में मौजूद इन तत्वों को पार्टिकुलेट मैटर के रूप में जाना जाता है। इसके सॉलिड पार्टिकल्स, गैसियस फॉर्म और लिक्विड फॉर्म भी हो सकते हैं।

वायु प्रदूषण में कुछ ऐसे पॉल्यूटेंट भी मौजूद हो सकते हैं, जिन्हें सादा आंखों से देखना मुश्किल होता है। हीटिंग, इंडस्ट्री और गाड़ियों से निकलने वाला धुंआ भी वायु प्रदूषण में शामिल है। ये सारे तत्व मिलकर आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं।

वायु प्रदूषक त्वचा को कई तरह से नुकसान पहुंचाते हैं। ऑक्सीडेटिव डैमेज के जरिए त्वचा के अंदर मौजूद लिपिड, डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड और प्रोटीन के कामकाज में परिवर्तन का कारण बनते हैं, जो अंततः त्वचा की उम्र बढ़ने, सूजन, एलर्जी जैसे कॉन्टैक्ट डर्मटाइटिस, एटोपिक डर्मटाइटिस, सोरायसिस, मुंहासे, यहां तक कि स्किन कैंसर का कारण भी बन सकते हैं। जितना अधिक आपकी त्वचा वायु प्रदूषकों के संपर्क में आएगी कई तरह के त्वचा रोगों के होने का रिस्क बढ़ जाता है। आज हम अपने खास खबर डॉट कॉम के पाठकों को अपने इस आलेख में प्रदूषण की वजह से त्वचा पर होने वाल दुष्प्रभावों से बचाव के कुछ आसान तरीके बताने जा रहे हैं, जिनकी सहायता से आप अपनी त्वचा को सुरक्षित रख सकते हैं।

त्वचा व हाथों को क्लिंज करना ना भूलें

यदि आपको घर से बाहर जाना है तो त्वचा की केयर प्रतिदिन करें वरना हानिकारक वायु प्रदूषण से स्किन डैमेज हो सकती है। त्वचा और हाथों को क्लिंज करना ना भूलें। ऑयल-बेस्ड क्लिंजर और फेस वॉश का इस्तेमाल करें। इससे स्किन साफ होती है। स्किन की बाहरी परत, पोर्स और अंदरूनी परत पर चिपकी गंदगी, धूल निकल जाती है।

अच्छी क्वालिटी की सनस्क्रीन का करें इस्तेमाल

वैसे तो हर दिन सनस्क्रीन का इस्तेमाल प्रदूषण से बचाने में सीधे तौर पर योगदान नहीं करता है, क्योंकि वायु प्रदूषक यूवी किरणों के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं और टॉक्सिक पदार्थों में बदल सकते हैं, जो त्वचा के लिए बहुत हानिकारक हो सकते हैं। ऐसे में जितना संभव हो यूवी किरणों से होने वाले नुकसान से बचने के लिए बेहद अच्छी क्वालिटी की सनस्क्रीन का डेली इस्तेमाल करें।

राहत प्रदान करेगा शीट मास्क

घर के बाहर के धूल और प्रदूषण से चेहरा काफी ड्राई हो जाता है। ऐसे में समय-समय पर शीट मास्क का इस्तेमाल करें। इससे आपकी त्वचा को काफी राहत मिलेगी।

इस्तेमाल करें फेशियल ऑयल

चेहरे पर अगर आप फेशियल ऑयल का इस्तेमाल करेंगे, तो ये हानिकारक तत्वों को चेहरे के पोर्स में जाने से रोकेगा।

सफाई है जरूरी

धूल के कण त्वचा में अंदर तक चले जाते हैं। ऐसे में त्वचा के रोमछिद्रों की सफाई सही से होना बेहद जरूरी है। इसके लिए क्लींजर की मदद से दिन में दो बार अपनी त्वचा की सही से सफाई अवश्य करें।

समय-समय पर करें एक्सफोलिएट

एक सप्ताह में दो बार स्किन को एक्सफोलिएट करें। इससे मृत त्वचा कोशिकाओं को हटाने में मदद मिलती है। त्वचा के रोम छिद्रों में मौजूद प्रदूषण और गंदगी निकलती है। एक्सफोलिएट हल्के हाथों से सकुर्लेशन मोशन में करें, ताकि त्वचा पर जलन ना हो।

फेशियल मास्क का करें इस्तेमाल

हफ्ते में कम से कम एक बार फेशियल मास्क का इस्तेमाल अवश्य करें। इससे आपकी त्वचा खिल उठेगी। ये प्रदूषण की वजह से डैमेज चेहरे को सही करने का काम करता है।

मेष मानहानि होने के संकेत मिल रहे हैं। स्थान परिवर्तन का भी योग है, अचानक किसी के साथ भी वाद-विवाद की स्थिति बन सकती है। हर क्षेत्र में लाभ होगा और श्री प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। माह का पूर्वार्द्ध मेष राशि वालों के लिए विशेष शुभता लेकर आया है।

बृषभ अचानक धन वृद्धि, भाग्योन्नति, मांगलिक कार्य, आरोग्य और विजय प्राप्ति होगी। कोई अपना ही आपको धोखा देने का प्रयास कर सकता है, अतः सतर्क रहें तथा अपने आस-पास के लोगों पर ज्यादा ध्यान दें। वृष राशि वालों को माह की शुरूआत से अनजाना सा भय बना रहेगा।

मिथुन नौकरी में प्रमोशन होगा, लेकिन स्थानान्तरण में व्यवधान आ सकते हैं। आय के स्रोतों में गिरावट आएगी, मां के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। मिथुन राशि वालों के लिए यह पूरा माह संघर्षपूर्ण रहेगा। पत्नी के माध्यम से आजीविका में सहयोग मिलेगा।

कर्क आर्थिक स्थिति कुछ ठीक नहीं रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह माह परेशान कर सकता है, अतः स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतें। अचानक कहीं से खर्च आ जाएगा जो आपको मानसिक अशांति भी प्रदान करेगा।

सिंह इस अवधि में शत्रु भी सक्रिय रहेंगे, हर तरफ से आपके ऊपर वार करने की कोशिश करेंगे। इन अवसरों का लाभ उठाने से न चूकें क्योंकि यह अवसर बार-बार नहीं आते। मित्रों से भी सहयोग प्राप्त होगा, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी।

कन्या विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। इस माह नौकरी अथवा व्यापार के क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए प्रयास सफल होंगे। यह माह वाहन, भवन आदि के सुखों में वृद्धि करने वाला रहेगा और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

बृश्चिक भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्वीर घर में रखें। आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला माह मध्य से अन्त तक शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे, सम्पति एवं धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। माह तुला राशि वालों को मिश्रित फल प्राप्त होगा। माह की शुरूआत में जहां पुण्य का नाश होगा, वहीं माह मध्य से अन्त तक सर्वकार्य सिद्धि प्राप्त होगी। इस के माह प्रारम्भ में गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है। नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

धनु यात्राओं को आगे के लिए टालना ही श्रेयस्कर होगा, अगर किसी कारवणवश जाना भी पड़ें तो सतर्कता जरूरी है । किसी भी तरह की गलतफहमियां न पालें, लेन-देन में भी सावधानी बरतनी होगी।

मीन अध्यात्म, दान-पुण्य के प्रति गहरी आस्था रहेगी जिससे मन शांत रहेगा। माह के प्रारम्भ से लेकर माह मध्य तक ग्रह गोचर विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न कर रहे हैं, अतः अनावश्यक वाद-विवाद से दूरी बना कर रखें। अनजाने में ही सही किसी के बारे में बुरा न बोलें जिससे आपके ऊपर किसी तरह की विपत्ति न आए।

घर पर बनाएं बाजार जैसी सॉफ्ट और क्रिस्पी कचौड़ी

कचौड़ी बनाने के दौरान कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना जरूरी होता है। अगर आप भी मार्केट जैसी क्रिस्पी कचौड़ी घर पर बनाना चाहती हैं, तो हम आपको खस्ता कचौड़ी बनाने के कुछ आसान से टिप्स और ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं।

अक्सर लोगों के घर पर नाश्ते के लिए बाजार की गरमागरम खस्ता कचौड़ियां आती हैं। बाजार की कचौड़ियों का स्वाद बेहद लजीज और क्रिस्पी होता है। इन्हें चाय के साथ खाने के अपना ही मजा है। वहीं कुछ महिलाएं घर पर कचौड़ियां बनाती हैं, लेकिन वह बाजार जितनी क्रिस्पी नहीं होती हैं। ऐसे में क्रिस्पी कचौड़ी खाने के लिए मजबूरन मार्केट से ही मंगवाना पड़ता है। ऐसे में आप भी जानना चाहती होंगी कि दुकानवाले कचौड़ियों में ऐसा क्या डालते हैं, उनके जैसी कचौड़ी घर पर नहीं बनती हैं। तो आइये मेहमानों का स्वागत करने अथवा स्वयं जायका लेने के लिए बाजार से खास्ता कचौड़ी ना मंगवाकर घर पर ही इसे इस तरीके से बनाएं।

दरअसल, कचौड़ी बनाने के दौरान कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना जरूरी होता है। कचौड़ी का आंटा गूंथने से लेकर इनमें स्टफिंग करने और बेलने व सेंकने तक आपको कुछ बातें ध्यान में रखनी होती हैं। ऐसे में अगर आप भी मार्केट जैसे क्रिस्पी कचौड़ी घर पर बनाना चाहती हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको खस्ता कचौड़ी बनाने के कुछ आसान से टिप्स और ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं।

घर पर खस्ता कचौड़ी बनाने के टिप्स

बता दें कि आटे की कचौड़ी को ज्यादा दिनों तक नहीं रखा जा सकता है। ऐसे में आप इनको बनाकर झटपट खा सकते हैं। लेकिन मैदा की कचौड़ी को आप 10 से 15 दिन तक स्टोर करके रख सकते हैं।

ऐसे गूंथें कचौड़ी का आटा :

- कचौड़ी का आटा गूंथने के लिए 2 कप मैदा, 10 से 12 चम्मच रिफाइन ऑयल, 2 चुटकी बेकिंग सोडा और पानी चाहिए।
- एक बड़े बर्तन में मैदा निकालकर उसमें तेल, बेकिंग सोडा और पानी मिलाकर अच्छे से आटा गूंथ लें।
- क्योंकि आटे में जितना अच्छा मोयन पड़ा होगा कचौड़ी उतनी ही खस्ता बनी होंगी। इसलिए आटे में मोयन की मात्रा जरूर चेक कर लें। मोयन के लिए आटे में तेल मिलाएं और जब आटा अच्छे से लड्डू की तरह बंधने लगे तो समझ लेना चाहिए कि आटे में मोयन की मात्रा एकदम सही है।
- कचौड़ी का आटा गूंथते समय ध्यान रखना चाहिए कि यह थोड़ा टाइट हो।
- महिलाएं कचौड़ी के आटे को गूंथते समय इसे गीले कपड़े से ढक देती हैं। इस आटे को गीला कपड़े से नहीं बल्कि प्लेट से ढककर रखना चाहिए। इस दौरान आप स्टफिंग तैयार कर लें।

सही से बेलें व मीडियम आंच में सेंकें

कचौड़ी को क्रिस्पी बनाने के लिए इसको सही से बेलना भी जरूरी होता है। इसे किनारे से पतला और बीच से मोटा रखना चाहिए इसे मीडियम आंच में सेंकना चाहिए। क्योंकि बहुत तेज औ? एकदम धीमी आंच से कचौड़ी खस्ता नहीं बनेंगी।

फिल्म 'डंक - वन्स बिटन ट्वाइस शाइ' से हिंदी सिनेमा में वापसी कर रही हैं निधि अग्रवाल

एक्ट्रेस निधि अग्रवाल अपनी अपकमिंग ओटीटी डेब्यू फिल्म 'डंक - वन्स बिटन ट्वाइस शाइ' को लेकर पूरी तरह से तैयार हैं। वह पहली बार बिकनी अवतार में नजर आएंगी। एक्ट्रेस थोड़े अंतराल के बाद हिंदी सिनेमा में वापसी कर रही हैं। वह पिछली बार 2017 में हिंदी फिल्म 'मुन्ना माइकल' में नजर आई थीं।

प्रेरणा अरोड़ा द्वारा निर्मित इस फिल्म में सुचित्रा कृष्णमूर्ति और विनय पाठक के साथ तुषार कपूर और शिविन नारंग भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। 'डंक' के बारे में बात करते हुए निधि ने कहा: "तेलुगु, तमिल और हिंदी में अपनी उपस्थिति स्थापित करने के बाद अब मैं एक छोटे अंतराल के बाद हिंदी सिनेमा में वापसी कर रही हूं और साथ ही दक्षिणी फिल्म परिदृश्य पर भी अपना दबदबा बना रही हूं।" एक्ट्रेस ने कहा कि उनके पास रोमांचक परियोजनाओं की भरमार है। उन्होंने कहा, "मैं वर्तमान में महान पवन कल्याण और 'राजा साब' के साथ एक मनोरम पीरियड फिल्म 'हरि हर वीरा मल्लू' में काम कर रही हूं। जहां मैं प्रतिभाशाली प्रभास के साथ स्क्रीन शेयर कर रही हूं।"

निधि ने कहा, "उम्मीद बहुत अधिक है क्योंकि दोनों फिल्में इस साल रिलीज होने वाली हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों के दर्शकों को लुभाने का वादा करती हैं।" एक्ट्रेस ने कहा कि इन सबके बीच उनकी नजर एक स्क्रिप्ट पर पड़ी, जो मुझमें गहराई से समा गई और इसने मेरे अंदर एक असाधारण प्रदर्शन देने की उत्सुकता जगा दी। निधि ने कहा, "दक्षिण में दो नायकों और एक अन्य आशाजनक स्क्रिप्ट के साथ मैं सिनेमाई परिदृश्य में धूम मचाने के लिए तैयार हूं।"

TARIFF

प्रिय पाठकों,मित्रो
आप अपने संस्थान की सूचनाएं विज्ञापन अपने ईष्ट मित्रो के साथ बिहार सहित हिंदी भाषी राज्यों तक सस्ते दर पर पहुंचा सकते हैं उभरता बिहार टीम

विज्ञापन दर

1.	कवर पेज	पट्टी	:	10,000
2.	कवर इन साइड	कलर फूल पेज	:	25,000
	हाफ कलर पेज	कलर	:	13,000
	एक चौथाई	कलर पेज	:	7,000
3.	बैक कवर	फूल पेज कलर	:	30,000
	बैक कवर	कलर हाफ पेज	:	17,000
4.	बैक इन साइड	फूल पेज कलर	:	20,000
		हाफ पेज कलर	:	11,000
		एक चौथाई कलर	:	6,000
5.	श्याम श्वेत	फूल पेज	:	15,000
		हाफ पेज	:	8,000
		एक चौथाई	:	4,000
6.	मिडिल कलर फूल	2 पेज	:	40,000
	श्याम श्वेत	फूल 2 पेज मिडिल	:	30,000
7.	विजिटिंग/शुभकामना	कलर	:	2,500
		श्याल स्वेत	:	2000
8.	फोटो	स्टैंड एलोन	:	5000
9.		टिकट साईज	:	1,000

सुझाव

एक वर्ष हेतु विज्ञापन बुकिंग पर 25 %प्रतिशत की छूट,6 माह की बुकिंग पर 20% प्रतिशत एवम तीन माह की बुकिंग पर 15 %प्रतिशत की छूट ये सभी छूट अग्रिम राशि जमा करने पर ही दिया जा सकता है।

FORD HOSPITAL, PATNA
A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital
PATNA
FORD HOSPITAL
A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar
उत्कृष्ठ एवं अपनत्व की अनुभूति
NABH
Dr. Santosh Kr.
Dr. B. B. Bharti
Dr. Arun Kumar
हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम
2nd Multi Speciality
NABH Certified Hospital
of Bihar
Best Promising
Multi Speciality
Hospital
2018 Bihar
फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं
क्लीनिकल सर्विसेस
कार्डियोलॉजी
क्रिटीकल केयर
न्यूरोलॉजी
स्पाईन सर्जरी
नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
ओब्स एवं गॉयनेकोलोजी
पेडिएट्रिक्स
पेडिएट्रिक सर्जरी
साइकिरेट्री एवं साइकोलॉजी
रेस्पिरेट्री मेडिसिन
यूरोलॉजी
सर्जिकल ऑन्कोलोजी
FORD HOSPITAL
FORD HOSPITAL
Empanelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS
New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org